

प्रार्थोतिहासिक काल (Prehistory)

विशेषताएं

विभाजन

कोई लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं

पुरातात्त्विक अवशेष देशभर से प्रचुर मात्रा में प्राप्त

प्राप्त सामान- पत्थर के औजार, मिट्टी के बर्तन, कलाकृतियां, धातु के उपकरण

- भोजन- शिकार (बड़े जानवर) एवं कंद-मूल
- भाषा एवं संचार के बारे में बहुत कम जानकारी
- 1863 में पलवरम् (मद्रास) से रॉबर्ट ब्रूस फुट को पुरापाषाणकालीन हस्तकुठार प्राप्त हुआ था।
- आग की खोज
- प्रमुख स्थल
 - उत्तर पश्चिम भारत में सोन (Soan) घाटी और पोटवार पठार
 - शिवालिक पहाड़ियां
 - भीमबेटका (मध्यप्रदेश)
 - आदमगढ़ पहाड़ी (नर्मदा घाटी)

- भोजन- शिकार (छोटे जानवर एवं मछली) एवं कंद-मूल
- तीर-धनुष का प्रयोग शुरू, फलक उपकरण (क्वार्टजाइट पत्थर से निर्मित) जैसे- अस्थि निर्मित उपकरण (सरायनाहर गाय, महदहा)
- पशुओं को पालतु बनाना, बागवानी, आद्य कृषि की शुरुआत। जैसे- पशुपालन (आदमगढ़, बागोर)
- गुजरात, यू.पी., एम.पी., राजस्थान, बिहार से साक्ष्य मिले

- कृषि (सर्वप्रथम अन्न उत्पादन), पशुपालन सुचारू रूप से होने लगे। चावल की खेती पूर्वी भारत में वहीं 'आग का उपयोग शुरू' महत्वपूर्ण उपलब्ध।
- खेती एवं परिवहन में जानवरों का प्रयोग
- कपास और ऊन के कपड़ों का उपयोग
- प्राप्त साक्ष्य
 - चावल (9,000-7000ई.पू.) का प्राचीनतम साक्ष्य लहुरादेव से
 - गेहूं (7000ई.पू.) का प्राचीनतम साक्ष्य मेहरगढ़ से
 - कृषि एवं पशुपालन गुफकराल से

पुरापाषाणकाल
[Paleolithic Period]
(2 Million BC to 10,000 BC)

मध्यपाषाणकाल
[Mesolithic Period]
(10,000 BC to 6,000 BC)

नवपाषाणकाल
[Neolithic Period]
(6,000 BC to 4,000 BC)

ताप्रपाषाणकाल
[Chalcolithic Period]
(4,000 BC to 1,500 BC)

लौहयुग
[Iron Age]
(1,500 BC to 200 BC)

- तांबे और कांसे का प्रयोग शुरू। धातु अयस्क को गलाना और धातु की कलाकृति को तैयार करने की तकनीक
- सामान्यतः नदियों के किनारे यह संस्कृति विकसित हुई
- दक्षिण भारत में गोदावरी, कृष्णा, तुंगभद्रा नदियों के किनारे कृषि समुदाय स्थापित हुए
- पेयमपल्ली (तमिलनाडु) से इस काल की कई वस्तुएं प्राप्त हुई हैं

नोट: हड्ड्या संस्कृति ताप्रपाषाणिक संस्कृति का एक हिस्सा मानी जाती है।

- इस काल में 'आर्यों का आगमन' हुआ।
- उत्तर वैदिककाल में 'लोहे की खोज' हुई।
- 'महाजनपदों' का संबंध इसी काल से है।
- कई 'महापाषाण समाधियां' दक्षिण भारत में मास्की, नागार्जुनकोंडा आदि में पायी गई हैं।

मध्यपाषाणकाल से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मध्यपाषाणकाल के औजारों को 'सूक्ष्म पाषाण औजार' भी कहा गया है।
- भारत में सर्वप्रथम अस्थिपंजर के साक्ष्यों की प्राप्ति इसी समय हुई
- अन्य नाम 'फलक संस्कृति'
- भारत में मध्यपाषाणकाल के विषय में सर्वप्रथम 1867-68 ई. में पता चला था।
- लहुरादेव (चावल का प्राचीनतम साक्ष्य) के बाद कोलडिहवा से चावल की भूसी के प्रमाण मिले हैं।

इतिहास

लिखित साक्ष्यों के आधार पर

ऐतिहासिक काल

आद्य-ऐतिहासिक काल

प्रागैतिहासिक काल

1861 में अलेक्जेंडर कनिंघम भारत का पुरातत्व सर्वेक्षक नियुक्त

1871 में पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का गठन

भारतीय
पुरातत्व
संबंधी तथ्य

'राष्ट्रीय मानव संग्रहालय' भोपाल में है।

1901 में लार्ड कर्जन के समय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग को 'भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण' में तब्दील कर दिया गया तथा इसके पहले महानिदेशक जॉन मार्शल बने।

परीक्षापयोगी अन्य जानकारियां

मेहरगढ़ से प्राचीनतम स्थायी जीवन के प्रमाण के अलावा पाषाण संस्कृति से लेकर सिंधु सभ्यता के अवशेष भी मिले हैं।

भारत में मानव का सर्वप्रथम साक्ष्य हथनौरा (नर्मदापुरम या होशंगाबाद) से मिला है।

होमोसैपियंस की उपस्थिति प्रागैतिहासिक काल में ही तीस से चालीस हजार वर्ष पूर्व थी।

मनुष्य ने 'सर्वप्रथम तांबा का प्रयोग' किया। वहीं प्रथम बनाया गया हथियार 'कुलहाड़ी' था।

भारत का 'प्राचीनतम नगर' मोहनजोदहो (मृतकों का टीला) को माना जाता है।

बुर्जहोम की खोज डी.टेरा एवं पीटरसन ने की

भीमबेटका की खोज 1957-58 में विष्णु श्रीधर वाकणकर ने की

खोजकर्ता

(2)

ताम्रपाषाणिक संस्कृति

मालवा संस्कृति

जोरवे संस्कृति

कायथा संस्कृति

अहाड संस्कृति

दक्षिण-पूर्वी राजस्थान

गिलुण्ड

बालाथल

अहाड

ओजियाना

बागोर

बनास घाटी में स्थित होने के कारण बनास संस्कृति नामकरण

मालवा मृदभांड ताम्रपाषाण
मृदभांडों में सर्वोत्तम

यहां से चरखा और
तकलियों के प्रमाण मिले हैं

ताम्रपाषाण

व्यवस्था
के क्षेत्र

पश्चिमी मध्यप्रदेश

मालवा

कायथा

मालवा
संस्कृति

दक्षिण-पूर्वी भारत

पश्चिमी
महाराष्ट्र

अहमदनगर

पूर्वी यू.पी.-
खैराडीह, नरहन

पुणे

पूर्वी भारत- बिहार
(चिरांद, सेनुवार,
सोनपुर, ताराडीह)

अन्य- महिषदल,
पांडु राजर ढिबि

किलोबंद बस्तियों के
प्रमाण मिले हैं

- एच.डी.संकालिया द्वारा उत्खनित
- सर्वाधिक फसल के साक्ष्य
- सबसे बड़ा उत्खनित ग्रामीण स्थल
- चौकोर और वृत्ताकार घरों के साक्ष्य

ग्रामीण संस्कृति

सबसे बड़ा शहर

दैमाबाद

जोरवे संस्कृति

कुछ बस्तियां जैसे दैमाबाद
एवं इनामगाँव में नगरीकरण
की प्रक्रिया देखने को मिलती हैं

तांबे की वस्तुएं, तांबे का रथ चलाता मनुष्य
तथा सांड, गैंडा एवं हाथी की आकृति प्राप्त हुई हैं

प्रमुख

दैमाबाद

नेवासा (पटसन का साक्ष्य)

जोरवे

अहमदनगर

पुणे

चंदोली, सोनगाँव,
इनामगाँव

कायथा संस्कृति

कायथा मृदभांडों पर
प्राक् हड्ड्यन, हड्ड्यन
और हड्ड्योत्तर
संस्कृति का प्रभाव

कायथा से स्टेटाइट और
कॉनैलियन पत्थरों के
हार प्राप्त हुए हैं

प्राचीन नाम ताम्बावती

अहाड
संस्कृति

तांबे की कुलहाडियां,
चूडियां एवं चादरें प्राप्त

पथर के घर

गिलुण्ड प्रमुख केंद्र था

प्रस्तर फलक उद्योग के अवशेष

सिंधु सभ्यता (2400–1750 ई.पू.)

प्रमुख तथ्य

- सिंधु सभ्यता के खोजकर्ता दयाराम साहनी
- सिंधु सभ्यता प्राक् ऐतिहासिक या कांस्य युग में रखी जाती है।

सर्वाधिक स्थल (गुजरात में)

मूल निवासी- द्रविड़ एवं भूमध्यसागर

नगरीय सभ्यता थी, व्यापार मुख्य पेशा था

बंदरगाह-लोथल, सुरकोटदा

मांदा (जम्मू एवं कश्मीर)
चिनाब नदी

शासन-वणिक वर्ग के हाथों में

सुतकागेण्डोर
(ब्लूचिस्तान)
दाशक नदी

सिंधु सभ्यता की सीमाएं

आलमगीरपुर
(मेरठ, यू.पी.)
हिण्डन नदी

दैमाबाद (महाराष्ट्र)
गोदावरी नदी

सैन्ध्व सभ्यता का व्यापार

पतन के संदर्भ में विद्वानों के मत

विद्वान्

मत

जॉन मार्शल, मैके एवं एस आर राव

बाढ़

गार्डन चाइल्ड एवं हीलर

बाह्य एवं आर्यों के आक्रमण

ओरल स्टाइन, ए एन घोष

जलवायु परिवर्तन

एम आर साहनी

भूगर्भिक परिवर्तन

जॉन मार्शल

प्रशासनिक शिथिलता

के यू आर कनेडी

प्राकृतिक आपदा

भारत स्थित सबसे बड़ा पूर्व हड्पा स्थल : राखीगढ़ी

सिंधु सभ्यता के तीन चरण

1. प्रारंभिक: 3300 ई.पू. – 2600 ई. पू.
2. परिपक्व: 2600 – 1900 ई.पू.
3. उत्तर हड्पाई: 1900 – 1300 ई.पू.

आयातित वस्तुएँ

स्थल/क्षेत्र

सोना → अफगानिस्तान, फारस, कर्नाटक

चाँदी → ईरान, अफगानिस्तान, मेसोपोटामिया

ताँबा → खेतड़ी (राजस्थान), ब्लूचिस्तान

टिन → ईरान, अफगानिस्तान

सेलखड़ी → ब्लूचिस्तान, राजस्थान, गुजरात

हरित मणि → दक्षिण भारत

शंख एवं कौड़ियाँ → सौराष्ट्र (गुजरात), दक्षिण भारत

नील-रत्न → बदख्शाँ (अफगानिस्तान)

शिलाजीत → हिमालयी क्षेत्र

फिरोजा → ईरान

लाजवर्द → बदख्शाँ, मेसोपोटामिया

गोमेद → सौराष्ट्र (गुजरात)

स्टेटाइट → ईरान

स्फटिक → दक्षन पठार, उड़ीसा, बिहार

स्लेट → काँगड़ा (हिमाचल प्रदेश)

सीसा → ईरान, राजस्थान, अफगानिस्तान, दक्षिण भारत

दो फसली खेती

हल का प्रयोग

फसलों की विविधता

प्रमुख विशेषताएँ

- नौ फसलों की खेती- गेहूं, जौ, राई, मटर, तिल, सरसों, चावल, कपास एवं अनाज
- कृषि कार्य हेतु प्रस्तर (पत्थर) एवं कांसे के औजारों का प्रयोग
- कोई फावड़ा या फाल नहीं मिला है। संभवतः लकड़ी के हलों का प्रयोग करते थे।

- पालतू जानवर: बैल, भैंस, गाय, भेंड़, कुत्ते, खच्चर
- हाथी को पालतू बना लिया गया था।
- कूबड़ वाला बैल सबसे प्रिय पशु था। वहीं ऊँट की अस्थियां कालीबंगा से प्राप्त।
- सुरकोटड़ा में घोड़े के अवशेषों के मिलने की रिपोर्ट (पहचान संदेहग्रस्त) नोट: हड्ड्या संस्कृति में न तो घोड़े की हड्डियाँ न ही उसके प्रारूप मिले हैं।

- व्यापार विनियोग प्रणाली पर आधारित था।
- हड्ड्या, मोहनजोदड़ों तथा लोथल में अनाज के बड़े गोदाम मिले हैं।
- देशी व्यापार के परिवहन साधन बैलगाड़ी एवं पशु जबकि विदेशी व्यापार मुख्यतः जल परिवहन से।
- बंदरगाह से जुड़े शहर- बालाकोट, डावरकोट, सुत्कागेण्डोर, सोटकाकोट, मुण्डीगाक, मालवान, भगतराव तथा प्रभासपाटन।
- विदेशी क्षेत्र जिनसे व्यापार होता था- दिल्मुन (आधुनिक बहरीन), मनका (ओमान)
- मेसोपोटामियाई अभिलेखों में 'मेलुहा' शब्द सिंधु क्षेत्र के लिए प्रयुक्त

वाणिज्य
एवं
व्यापार

पशुपालन

मापतौल

आर्थिक
स्थिति

कृषि

- तौल की इकाई 16 के आवर्तकों में। जैसे- 16, 64
- सैंधव लोग मापना भी जानते थे। उदाहरण- लोथल से हाथी दांत से निर्मित पैमाना मिला है।
- दशमलव पद्धति पर आधारित मापतौल प्रणाली।

उद्योग एवं शिल्प कला

- मोहनजोदड़ों से ईट के भट्टो के अवशेष मिले हैं।
- हड्ड्याई लोगों को लोहे का ज्ञान नहीं था।
- वे तांबा में टिन मिलाकर कांसा बनाते थे।
- नाव बनाने के साक्ष्य (लोथल से मिट्टी के नाव) मिले हैं।

लघु धातु मूर्ति - मोम-साँचा विधि

प्रमुख उद्योग - सूती वस्त्र निर्माण

चांदी सर्वप्रथम सिंधु सभ्यता में पाई गई है।

कांस्य कला, मृण्मूर्तियां, मनका-निर्माण तथा मुहर निर्माण की कला प्रचलित थी।

प्रमुख कलाकृतियां

-मोहनजोदड़ों से प्राप्त 'नृत्य की मुद्रा' में नग्न स्त्री की कांस्य प्रतिमा

-हड्ड्या एवं चान्हुदड़ो से प्राप्त कांसे की गाड़ियाँ

-मोहनजोदड़ों से प्राप्त दाढ़ी वाले सिर की पत्थर की मूर्ति (संभवतः पुजारी)

-स्वास्तिक चित्र

बर्तन

-मिट्टी के बर्तनों में एक रूपता, बर्तन सादे हैं, पक्की मिट्टी की मृण्मूर्तियां मिली हैं।

-बर्तनों पर लाल पट्टी के साथ काले रंग की चित्रकारी

-बर्तनों पर बनस्पति का चित्रांकन पशुओं की अपेक्षा ज्यादा।

-बर्तनों पर मुद्रा के निशान भी हैं।

मुहरें

-ये हड्ड्या सभ्यता की सर्वोत्तम कलाकृति हैं। [आकृति- चौकोर (अधिकांश), बेलनाकार, वृत्ताकार, आयताकार]

-अधिकांश मुहरें मोहनजोदड़ों से

-मुहरों पर सर्वाधिक चित्र एक सींग वाले सांड (वृषभ) का है।

-मुहरों पर चित्रित पशु - गैंडा, भैंसा, हाथी, बाघ, हिरण

-अधिकांश मुहरें सेलखड़ी की बनी होती थी।

लिपि

- लिपि भाव चित्रात्मक है जो क्रमशः दाईं ओर से दाईं तथा दाईं ओर से दाईं ओर लिखी जाती थी। इस पद्धति को 'बोस्ट्रोफोदोन' कहा जाता था। (सामान्यतः दाईं से दाईं)
- हड्ड्या लिखावट अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है।

राजनीतिक स्थिति

- शासन संभवतः वर्णिक वर्ग के हाथों में
- हण्टर के अनुसार, यहां की शासन व्यवस्था जनतांत्रिक पद्धति से चलती थी
- स्टुअर्ट पिंगट ने इस सभ्यता की जुड़वा राजधानियां हड्पा और मोहनजोदड़ों को बताया था

धार्मिक स्थिति

- मातृदेवी की उपासना, पशुपति शिव, लिंग एवं योनि पूजा, नाग पूजा, वृक्ष पूजा, पशु पूजा, अग्नि पूजा आदि का प्रचलन था।
- धार्मिक दृष्टिकोण का आधार इहलौकिक एवं व्यावहारिक था।
- भूत-प्रेत, तंत्र-मंत्र आदि में विश्वास।
- यज्ञ से परिचित थे तथा पुनर्जन्म में विश्वास करते थे।
- कालीबंगा से अग्निवेदिका का साक्ष्य प्राप्त हुआ है।
- मंदिर के अवशेष नहीं
- मोहनजोदड़ो से पशुपति शिव की पद्मासन मुद्रा में बैठे पुरुष की एक मुहर मिली है। वहीं हड्पा से प्राप्त एक मूर्ति में स्त्री के गर्भ से निकलता पौधा दिखाया गया है।

प्रमुख साक्ष्य स्थल

सामाजिक स्थिति

- परंपरागत इकाई: परिवार
- सैंधव समाज संभवतः मातृसत्तात्मक (स्त्री मृणमूर्तियाँ)
- समाज अनेक वर्गों जैसे- पुरोहित, व्यापारी, अधिकारी, शिल्पी, जुलाहे एवं श्रमिक में विभाजित थे। इनमें व्यापारी सबसे प्रभावी थे।
- योद्धा वर्ग के अस्तित्व का कोई साक्ष्य नहीं
- संभवतः दास प्रथा प्रचलित थी।
- सैंधव लोग शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों थे।
- आभूषणों का प्रयोग पुरुष एवं महिला दोनों करते थे।

- कालीबंगा (राजस्थान) (जोते हुए खेत, नक्काशीदार ईंट), अग्निकुंड
- मोहनजोदड़ो - स्नानागर (सबसे बड़ी सैंधवकालीन ईमारत), पशुपति, नर्तकी मूर्ति
- लोथल - अग्निकुंड, मनके का कारखाना
- हड्पा - मोहर (अधिकांश मुहरों पर एक श्रृंगी पशु का अंकन)
- चंदुदड़ो - मनका कारखाना
- कृषि - मुख्य फसल (गेंहू, जौ), कपास सबसे पहले सिंधु सभ्यता में उगाया गया।
- बनावली - मिट्टी के हल
- नगरों एवं घरों के विनायस में ग्रीक पद्धति का उपयोग
- सूती एवं ऊनी वस्त्र प्रयोग होता था
- टेराकोटा (आग में पकी मिट्टी)- काले रंग से डिजाइन लाल मिट्टी के बर्तन
- मनोरंजन - मछली पकड़ना, शिकार, पशु-पक्षी लड़ाई, चौपड़ एवं पासा खेलना
- धौलावीरा से जलसंग्रह हेतु बांधों के निर्माण का साक्ष्य
- स्वास्तिक (सूर्यपूजा) के साक्ष्य
- मंदिर अवशेष नहीं तथा मातृदेवी की उपासना सर्वाधिक होती थी
- कूबड़ वाला बैल विशेष पूजनीय
- घोड़े की अस्थियाँ - सुरकोटदा, कालीबंगा, लोथल
- यातायात - दो पहियों या चार पहियों वाली बैलगाड़ी या भैंसगाड़ी
- तलवार से परिचय नहीं
- पर्दा प्रथा एवं वेश्यावृति का प्रचलन था

- दाह संस्कार विधि [युग्म समाधी - लोथल एवं कालीबंगा]
- शव जलाना (मोहनजोदड़ो) एवं गाड़ना (हड्पा)

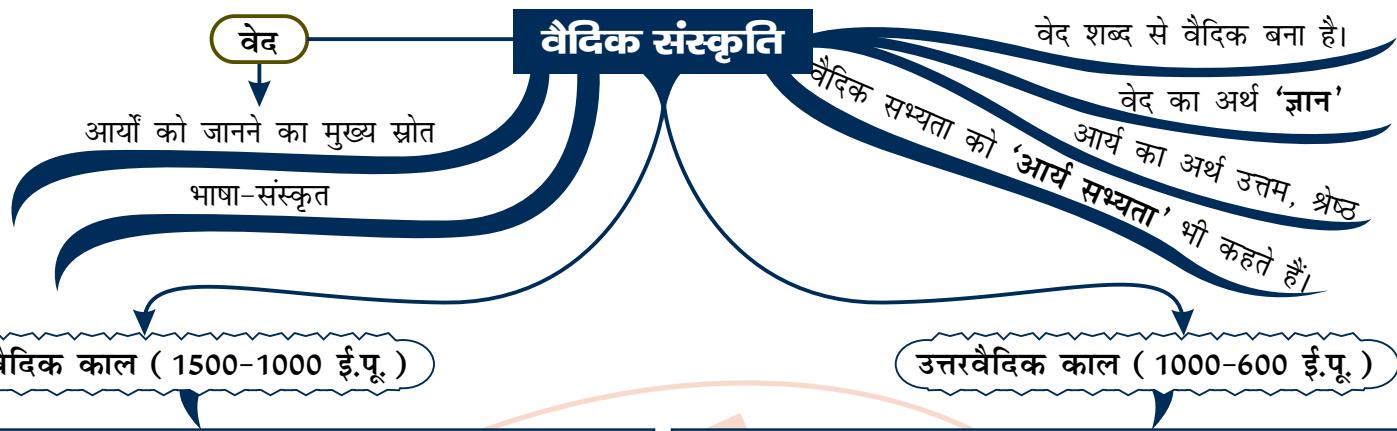
हड्डपाई स्थल

वर्ष 1924 में, जॉन मार्शल (तत्कालीन ASI महानिदेशक) ने सिंधु सभ्यता की खोज की घोषणा की थी।

स्थल	भौगोलिक अवस्थिति	खोजकर्ता/खुदाई	प्राप्त साक्ष्य
हड्पा	रावी नदी, (बायें तट पर) मोण्टगोमरी, पाकिस्तान	दयाराम साहनी, 1921	श्रमिक निवास, सोलह भट्टियाँ, छः अन्नागार, कब्रिस्तान R-37, शंख का बना बैल, काँसे का एक्का एवं दर्पण, मंजूषा, बर्तन पर मछुआरे का चित्र, उर्वरता की देवी का चित्र
मोहनजोदड़ो	सिंधु नदी (दायें तट) लरकाना, पाकिस्तान	राखलदास बनर्जी, 1922	मृतकों का टीला, विशान स्नानागार, अन्नागार, काँसे की नग्न नर्तकी, कुम्हार के छः भट्टे, सूती कपड़ा, शतरंज की गोटियाँ, दाढ़ी वाला साधु, हाथी का कपाल खंड, पशुपति के अंकन की मुहर। घोड़े के दांत, अभिलेख युक्त सर्वाधिक
सुल्कागेण्डोर	दाशक नदी, बलूचिस्तान, पाकिस्तान	ओरेल स्टाइल, 1929 एवं जॉर्ज डेल्स	नदी की तटीय व्यापारिक चौकी, राख से भरा बर्तन, तांबे की कुलहाड़ी, मिट्टी की चूड़ियाँ।
आमरी	सिंधु नदी, सिंध, पाकिस्तान	एन जी मजूमदार, 1935 जॉर्ज एफ, डेल्स 1963/79	पूर्व हड्पा सभ्यता के चिन्ह तथा परिवर्ती परिवर्तन के चरणों की पहचान हुई। बारहसिंगा का नमूना।
चन्हूदड़ो	सिंधु नदी, सिंध पाकिस्तान	एन जी मजूमदार, 1931	मुहर उत्पाद केन्द्र, औद्योगिक शहर, मिट्टी की बनी बैलगाड़ी, काँसे की खिलौना गाड़ी, दवात, दुर्ग का अभाव, लिपिस्थिक का साक्ष्य, मनके का कारखाना।
कालीबंगा	घग्गर नदी, राजस्थान	अमलानन्द घोष, 1953/60	अर्थ-काले रंग की चूड़ी, हल द्वारा जोते खेत, बेलनाकार मुहर, पक्की मिट्टी का हल, सबसे पहले ज्ञात भूकंप का साक्ष्य, अग्निकुण्ड, ऊँट की हड्डियाँ, कच्ची एवं अलंकृत ईंट
कोटदीजी	सिंधु नदी, सिंध पाकिस्तान	फजल अहमद, 1953-54	पूर्व हड्पा, मिश्रित स्तर, पत्थर की नींव वाले घर, पत्ती के आकार का वाणाग्र, गतीवास, गहनों का जखीरा। चाक पर निर्मित मृद्भाण्ड।
रोपड़	सतलज नदी, पंजाब	यज्जदत्त शर्मा, 1953-54	ताँबे की कुलहाड़ी, शंख की चूड़ियाँ, कुत्ते को मालिक के साथ दफनाने का साक्ष्य।
रंगपुर	मादर नदी तट, गुजरात	रंगनाथ राव, 1953-54	धान की भूसी, घोड़े की मृणमूर्ति, कच्ची ईंटों का दुर्ग, पत्थर के फलक

सुरकोटदा	कच्छ, गुजरात	जे०पी० जोशी, 1954	घोड़े की हड्डियाँ, बर्तन में शवाधान।
लोथल	भोगवा नदी, अहमदाबाद, गुजरात	रंगनाथ राव, 1957	अन्नागार, सुमेरियन मूल से संबंधित अक्षीय नलिका सहित सोने के मनके, मनका कारखाना गोदीवाड़ा (बंदरगाह), युग्म शवाधान, धान की खेती।
आलमगीरपुर	हिंडन नदी, उत्तर प्रदेश	यज्ञदत्त शर्मा, 1958	रोटी बेलने की चौकी, कटोरे के टुकड़े, मिट्टी के बर्तन, गंगा-यमुना दोआब का पहला उत्खनित स्थल।
धौलावीरा (2021 में यूनेस्को वर्ल्ड हरिटेज घोषित)	कच्छ, गुजरात धौलावीरा पांचवा बड़ा हड्पा स्थल)	जगतपति जोशी (1967), आर.एस बिष्ट (1990-91)	धौलावीरा का शाब्दिक अर्थ- सफेद कुआं, तीन भागों में विभाजित एकमात्र शहर, नागरिक उपयोग के लिए सबसे बड़ा अभिलेख, खेल का मैदान, एक संपूर्ण जल प्रणाली के अवशेष
राखीगढ़ी	घगर नदी, हिसार जिला, हरियाणा	सूरजभान, 1963 1997 में अमरेंद्रनाथ द्वारा खुदाई	प्राक्हड्पा एवं परिपक्व हड्पा के साक्ष्य, भारत में स्थित इस सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल।
मिताथल	हरियाणा	सूरजभान, 1963	ताँबे की कुल्हाड़ी, संस्कृति के तीनों स्तर
बनवाली	सरस्वती नदी, हिसार हरियाणा	आर०एस० बिष्ट, 1973	पूर्व-हड्पा तथा उत्तर-नगरीय, मिट्टी के मनके, ताँबे की बनी मछली पकड़ने की बंसी, मिट्टी से बने हल का प्रतिरूप, वास्तविक हल के कुछ टुकड़े, प्रतिरक्षा दीवार के बाहर गहरी और चौड़ी खाई, मिट्टी के चक्के के प्रतिरूप
बालाकोट	अरब सागर, बलूचिस्तान, पाकिस्तान	आर०एस० बिष्ट 1973/74	पूर्व हड्पा के अवशेष, भवन निर्माण के लिए कच्ची ईटों का प्रयोग, सींपों की कार्यशाला।
भगवानपुरा	सरस्वती नदी, कुरुक्षेत्र हरियाणा	जी.पी. जोशी, 1975/76	सफेद, काली एवं आसमानी रंग की चूड़ियाँ, ताँबे की चूड़ियाँ।
कुणाल	सरस्वती नदी, फतेहाबाद, हरियाणा	एम०आर० राव, 1994	पूर्व-हड्पा स्थल, चाँदी के दो मुकुट।

नोट : बजट 2020-21 में राखीगढ़ी, हस्तिनापुर, शिवसागर, धौलावीरा, चेनैल्लूर आदि को 'आइकॉनिक स्थल' के रूप में विकसित किए जाने की घोषणा हुई थी।



- 1400 ई.पू. ब्रोगजकोई (एशिया माइनर) के अभिलेख में ऋग्वैदिक काल के देवताओं (इन्द्र, वरुण, मित्र तथा नासत्य) का उल्लेख।

- सप्त सेंधव प्रदेश (ऋग्वेद में वर्णन):- यह सात नदियों- सिंधु (सुवासा), सतलज (शतुद्रि), व्यास (विपाशा), रांवी (पुरुष्णी), चेनाब (आस्किनी), झेलम (वितस्ता), घग्घर (सुषामा) से घिरा क्षेत्र था।

- ऋग्वेद में अफगानिस्तान की चार नदियों कुभा (काबुल), क्रुमु (कुर्रम), गोमती (गोमल), और सुवस्तु (स्वात) का उल्लेख है।
- ऋग्वेद के नदी सूक्त में 21 नदियों का वर्णन है (सिंधु का सर्वाधिक)

- सरस्वती- सबसे पवित्र नदी (अन्य नाम- मातेतमा, नदीतमा, देवीतमा)
- नदी सूक्त में विपाशा नदी का कोई उल्लेख नहीं
- ऋग्वेद में चार समुद्रों का उल्लेख है।
- ऋग्वेद में हिमालय पर्वत एवं इसकी एक छोटी मुजवंत का उल्लेख।

- ऋग्वैदिक पुरातात्त्विक साक्ष्य के मुख्यतः तीन प्रकार :-

- काले एवं लाल मृदभांड
- ताम्र पुंज
- गेरुवर्णी मृदभांड

राजनीतिक स्थिति

सबसे छोटी इकाई-कुल/परिवार ग्राम, विश और जन उच्चतर इकाईयां थीं

प्रधान=कुलप

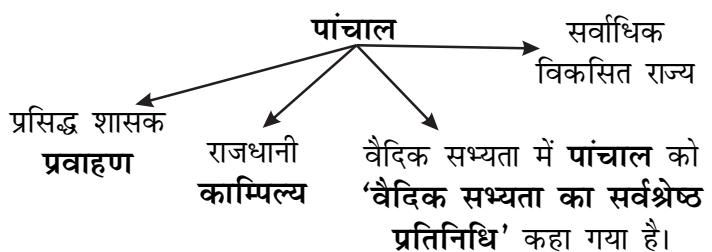
- ग्राम कई परिवारों का समूह (ग्रामणी इसका प्रधान था)।
- विश कई गाँवों का समूह (प्रधान-विषयपति)
- विश समूह = जन (प्रधान-राजा/जनपति)
- जनों का प्रधान-राजन

- प्रशासन मुख्यतः कबीलाई
- सैनिक भावना प्रमुख

- शतपथ ब्राह्मण से आर्यों के प्रसार की जानकारी
- आर्य विध्याचल के उत्तर के संपूर्ण क्षेत्र में पहुँचने में सफल रहे
- स्रोत - सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रंथ
- आर्यों के जीवन में स्थायित्व (कृषि का महत्व बढ़ने से)
- हिमालय एवं विध्याचल के मध्य क्षेत्र का नाम 'मध्य देश'
- गंगा-यमुना दोआब का नाम 'ब्रह्मर्षि देश'

राजनीतिक स्थिति

पहली बार राज्यों का उदय
उदाहरण- पुरु एवं भरत मिलकर 'कुरु' बने (कुरुओं को राजधानी- आसंदीवत्, हस्तिनापुर)

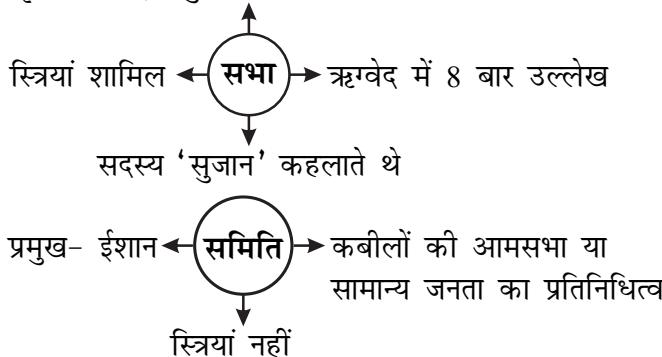


- 'जनपद' का अस्तित्व आया, 'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग
- 'राज्य की उत्पत्ति का सिद्धांत' सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण में

क्षेत्र	राज्य नाम	राजा का नाम
पूर्व	साम्राज्य	सम्राट्
पश्चिम	स्वराज्य	स्वराट्
उत्तर	वैराज्य	विराट्
दक्षिण	भोज्य	भोज
मध्य प्रदेश	राज्य	राजा

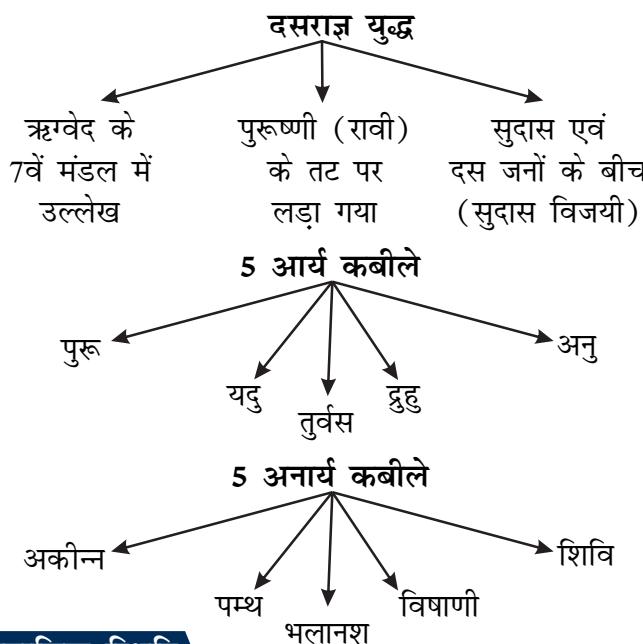
- राजा के अन्य नाम- जनस्यगोपा, पुरभेता, विशपति, गणपति, गोपति

- प्रमुख अधिकारी- पुरोहित (सबसे प्रमुख), सेनानी, ग्रामीण वृद्ध जनों एवं कुलीन व्यक्तियों की संस्था



- विदथ - आर्यों की प्रारंभिक संस्था (कार्य-आर्थिक, सैन्य, धार्मिक, सामाजिक)

- रत्नी - सूत, रथकार तथा कम्मादि आदि कुल 12 अधिकारी थे।
- व्रजपति - गोचर भूमि अधिकारी
- ऋग्वेद में न्यायाधिकारी का उल्लेख नहीं
- युद्ध हेतु 'गविष्टि' शब्द।
- राजा स्थायी सेना नहीं रखता था।
- सुदास के पुरोहित 'वशिष्ठ' तथा दस जनों के संघ के 'विश्वामित्र' थे।



सामाजिक स्थिति

- ऋग्वैदिक समाज चार वर्णों में विभक्त था- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। (व्यवसाय पर आधारित) [ऋग्वेद के 10वें मंडल के पुरुष सूक्त में चार वर्णों की उत्पत्ति का वर्णन]
- समाज पितृसत्तात्मक, संयुक्त परिवार प्रथा
- समाज की सबसे छोटी इकाई-परिवार या कुल [मुखिया-पिता (कुलुप)]
- ऋग्वेद में दास प्रथा का उल्लेख भी है।

12 उच्च कोटि के अधिकारी (रत्नि)

शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख

- पुरोहित (धार्मिक कार्य)
- सेनानी (सेनापति)
- सूत (राजा का सारथी)
- ग्रामणी (ग्राम का प्रधान)
- भागदुध (कर संग्रहकर्ता)
- संगृहित्री (कोषाध्यक्ष)
- अक्षावाप (पासे के खेल में राजा का सहयोगी)
- रथकार (रथ निर्माता)
- गोविकर्त्तन (जंगल विभाग का प्रधान)
- महिषी (मुख्य रानी)
- पालागल (विदुषक, दूत, मित्र)
- युवराज (राजकुमार)

प्रमुख तथ्य

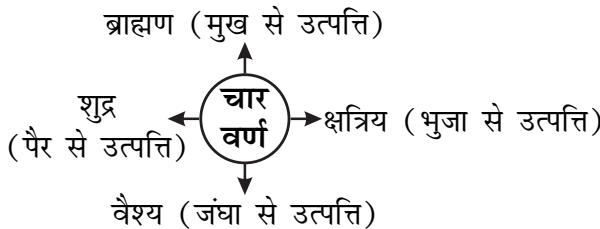
- सबसे प्राचीन संस्था विदथ उत्तरवैदिक काल में समाप्त
- राजा पर सभा और समिति का नियंत्रण समाप्त
- अर्थर्ववेद में सभा एवं समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया
- राजतंत्र ही शासन का आधार, कहीं-कहीं गणतंत्र भी
- स्थायी सेना नहीं थी
- राजा न्याय का सर्वोच्च अधिकारी
- उत्तरवैदिक काल में नियमित कर बसूली शुरू हुई जिसे बलि, शुल्क या भाग कहा गया। (मात्रा 1/16)

सामाजिक स्थिति

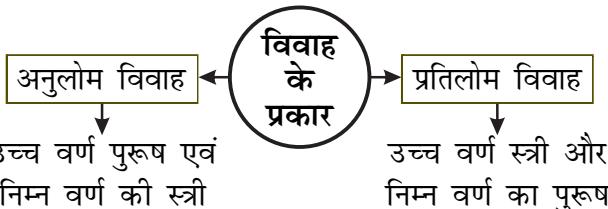
- केवल वैश्य समुदाय कर देते थे।
- ऋग्वैदिक की अपेक्षा उत्तरवैदिक में महिला स्थिति गिरी (ऐतरेय ब्राह्मण में पुत्र को 'परिवार का रक्षक' तथा पुत्री को 'दुखों का स्रोत' कहा गया है।)
- जाबालोपनिषद में चार आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ संन्यास) का उल्लेख
- चावल, नमक, मछली, हाथी तथा बाघ आदि का ज्ञान हुआ जो कि ऋग्वैदिक में ज्ञात नहीं था (हाथी पालतु बनाने के साक्ष्य)
- यज्ञ अनुष्ठान बढ़ने से ब्राह्मणों की शक्ति में वृद्धि
- वर्णाश्रम व्यवस्था प्रमुख आधार (ऐतरेय ब्राह्मण में चारों वर्णों के कर्तव्य उल्लेखित)
- वर्ण व्यवस्था में कठोरता शुरू

शब्द	वर्ग
ऐहि	ब्रह्मण्ड
आगच्छ	क्षत्रिय

शब्द	वर्ग
आद्रब	वैश्व
आधव	शूद्र



विवाह : यह एक पवित्र संस्कार था



स्त्रियां (ऋग्वैदिक काल)

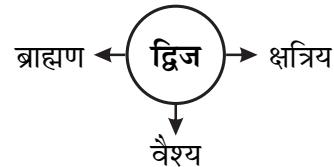
- पर्दाप्रथा एवं सती प्रथा प्रचलित नहीं
- स्थिति अच्छी, शिक्षा ग्रहण
- कन्याओं का उपनयन
- पुनर्विवाह, नियोगप्रथा एवं बहुपति विवाह प्रचलित
- अमाजू- अविवाहित महिलाएं
- बाल विवाह नहीं
- प्रमुख विदुषी- लोपामुद्रा, घोषा, सिक्ता, गार्गी, विश्वधारा, अपाला आदि।
- ऋग्वेद- 'पत्नी ही गृह है' (जायदस्तम)

आर्थिक स्थिति

- प्रारंभिक जीवन अस्थायी (मूलतः ग्रामीण)
- पशुपालन मुख्य पेशा, (कृषि गौण)
- गाय सर्वाधिक महत्वपूर्ण (ऋग्वेद में 176 बार उल्लेख)
- ऋग्वेद में बद्रई, रथकार, बुनकर, चर्मकार, कुम्हार आदि शिल्पियों का उल्लेख

धार्मिक स्थिति

- आर्य बहुदेवतादी होते हुए भी एकेश्वरवाद में विश्वास करते थे।
- प्रकृति का मानवीकरण कर उसकी पूजा शुरू।
- मुख्यतः प्रकृति पूजक
- आर्यों के देवताओं की श्रेणियां
 - आकाश का देवता- वरुण, मित्र, पूषन, विष्णु, सूर्य, आदित्य, उषा, अश्विन आदि।
 - अंतरिक्ष के देवता- इन्द्र, रुद्र, वायु, मरुत आदि।
 - पृथ्वी के देवता- अग्नि, सोम, पृथ्वी, बृहस्पति, सरस्वती आदि।
- इन्द्र- सर्वाधिक प्रतापी एवं लोकप्रिय देवता (आर्यों का युद्ध नेता)
- अग्नि- ऋग्वेद के 5वें मंडल में अग्नि सूक्त, (दूसरे महत्वपूर्ण देवता।)
- वरुण- तीसरा प्रमुख देवता, जल का देवता, अन्य नाम- ऋतस्य गोपा
- घौरू- सबसे प्राचीन ऋग्वैदिक देवता



■ इनका उपयन संस्कार होता था। शूद्रों का नहीं होता था।

आर्थिक स्थिति

- कृषि मुख्य पेशा, पशुपालन गौण
- लोहे के उपकरणों से कृषि में वृद्धि
- शतपथ ब्राह्मण में कृषि क्रियाओं का उल्लेख
- अथर्ववेद में सिंचाई साधनों- वर्णाकूप एवं नहर (कुल्पा) का उल्लेख
- सीता- हल की नाली।
- मुख्य फसल- धान, गेहूँ।
- चार प्रकार के मृदभांड की जानकारी- लाल, काले, चित्रित धूसर, काले पॉलिशदार।
- तैत्तिरीय ब्राह्मण में नगर की चर्चा हालांकि शुरूआती नगर ही स्थापित (हस्तिनापुर/कौशांबी जैसे Proto-urban site)
- श्रेष्ठिन/श्रेष्ठ्य- व्यापारी थे।
- शतपथ ब्राह्मण में महाजनी प्रथा का उल्लेख (कुसीदिन-सूदखोर)
- समुद्र का ज्ञान था (वैदिक ग्रंथों में समुद्र चर्चा), सिक्का प्रचलित नहीं हुआ था।
- उत्तरवैदिक ग्रंथों में कपास का जिक्र नहीं, बुनाई/कढ़ाई होती थी।

महत्वपूर्ण शब्दावली	
ब्रह्मि	धान
यव	जौ
गोधूम	गेहूँ

महत्वपूर्ण शब्दावली	
माण	उडद
मुद्रा	मूँग

धार्मिक स्थिति

- धर्म एवं ऋतु की संकल्पना
- प्रत्येक वेद के अपने पुरोहित हो गए।
- यज्ञ - सोमयज्ञ, अश्वमेघयज्ञ, वाजपेय यज्ञ, राजसूय यज्ञ (शक्ति प्रदर्शन)
- रुद्र, विष्णु इस काल के अन्य देवता
- इन्द्र के बदले प्रजापति (सृजन देवता) को सर्वोच्चता
- मृत्यु की चर्चा शतपथ ब्राह्मण, मोक्ष की उपनिषद में, पुनर्जन्म की वृहदराण्यक उपनिषद में, निष्काम कर्म सिद्धांत ईशोपनिषद में

महत्वपूर्ण शब्दावली	
पणि	व्यापारी
बेकनाट	सुदखोर

महत्वपूर्ण शब्दावली	
गवयतु	दूरी की माप
हिरण्य	सोना

ऋग्वेद में पशुओं का उल्लेख

- घोड़ा, बैल, भैंस, भेड़, बकरी, ऊँट का उल्लेख
- बाघ, हाथी का उल्लेख नहीं

कृषि संबंधी शब्दावली	
उर्वरा	जूते खेत
लांगल	हल
करिषु	गोबर खाद
अवट	कुआँ

कृषि संबंधी शब्दावली	
सीता	हल के निशान
कुल्पा	नहर
खिल्य	चारागाह

गायत्री मंत्र (सूर्य को समर्पित)

रचनाकार - विश्वामित्र

ऋग्वेद के तीसरे मंडल में उल्लेखित

■ नोट: ऋग्वैदिक काल में उपासना का दृष्टिकोण भौतिकवादी, पुनर्जन्म की अवधारण नहीं, यज्ञ की तुलना में प्रार्थना अधिक

वेद	पुरोहित
ऋग्वेद	होता
सामवेद	उद्गाता

वेद	पुरोहित
यजुर्वेद	अध्वर्यु
अथर्ववेद	ब्रह्मा

अन्य प्रथा

- त्रिवर्ग- धर्म, अर्थ, काम
- पुरुषार्थ- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
- उपाध्याय- वेदों के अध्यापक

ऋग्वेद (10 मंडल)	रचयिता
प्रथम	मेघातिथि, मधुच्छम्दा
द्वितीय	गृत्समद्
तृतीय	विश्वामित्र
चतुर्थ	वामदेव
पंचम्	अत्रि
षष्ठम्	भारद्वाज
सप्तम्	वशिष्ठ
आष्टम्	कण्व एवं अंगिरस
नवम्	सोम देवता एवं अन्य
दशम्	विमदा, इंद्र, शची

उपनिषद्/वेदांत

अर्थ- समीप बैठना

- ‘श्वेताश्वर’ में मोक्ष का उल्लेख
- ‘वृहदारण्यक’ में याज्ञवल्क्य एवं गार्गी संवाद
- वैदिक साहित्य के अंतिम भाग, इसलिए ‘वेदांत’ कहते हैं।
- कुल संख्या 108
- मुण्डकोउपनिषद् से ‘सत्यमेव जयते’
- नचिकेता एवं यम संवाद ‘कठोपनिषद्’ से
- ‘छान्दोग्य उपनिषद्’ में ब्रह्मचर्य, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ आश्रम का उल्लेख

आरण्यक

- दार्शनिक एवं रहस्यात्मक विषयों का वर्णन
- वन में पढ़ाने के चलते ‘आरण्यक’ कहलाए
- अथर्ववेद का कोई आरण्यक नहीं

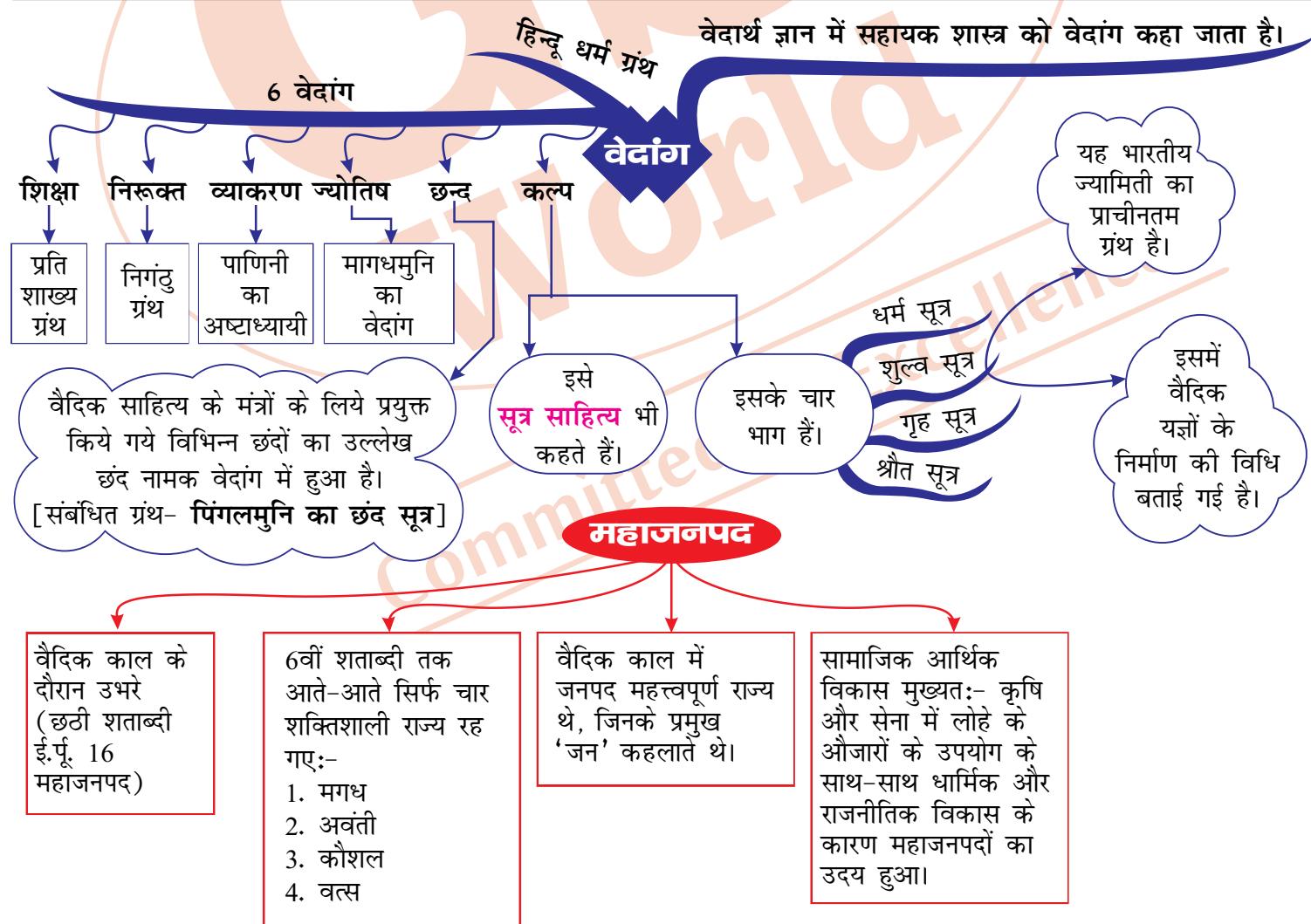
ब्राह्मण ग्रन्थ

- वैदिक संहिताओं की गद्यात्मक व्याख्या
- यज्ञों एवं कर्मकांडों को समझने हेतु रचित

ऋग्वैदिक देवता

मरुत	आंधी-तूफान के
यम	मृत्यु के
मित्र	शपथ एवं प्रतिज्ञा के
अश्विन	चिकित्सा के
अरण्यानी	जंगल की देवी
सरस्वती	नदी की देवी (विद्या की भी)
पर्जन्य	वर्षा के

वेद	ब्राह्मण	उपनिषद्	उपवेद	प्रमुख तथ्य
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद	ऐतरेय, कौषितकी शुक्ल यजुर्वेद → शतपथ कृष्ण यजुर्वेद → तैतरीय गोपथ पिप्पलाद शौनक	ऐतरेयोपनिषद, कौषितकी इशोपनिषद, वृहदारण्य कठोपनिषद, मैत्रायणी, श्वेताश्वतरोपनिषद	आयुर्वेद धनुर्वेद वान्धोग्योपनिषद, कैनोपनिषद	10 मंडलों में विभक्त, जिसमें 2-7 प्राचीन, 1028 सूक्त, (भाषा पद्यात्मक), 'असतों मा सद्गमय' ऋग्वेद से लिया गया, 'गायत्री मंत्र' तीसरे मंडल में, यज्ञों की विधियों का उल्लेख, गद्य और पद्य दोनों में, राजसूय/वाजपेय का उल्लेख, शुक्ल यजुर्वेद को 'वाजसनेयी संहिता' भी कहते हैं, मंत्रों के उच्चारण का काम 'अधर्यु' नामक पुरोहित द्वारा
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद	पंचविश, षडविश जैमीनीय	वान्धोग्योपनिषद, कैनोपनिषद	गन्धर्ववेद	साम (गान), इसके मंत्र देवताओं की स्तुति में गाये गए, 1875 रचनाएं (75 ऋग्वेद से लिए गए), भारतीय संगीत के विकास में सहायक
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद	मुंडकोपनिषद, माण्डुक्योपनिषद	शिल्पवेद	अथर्वा ऋषि के नाम पर अथर्ववेद, कुल 20 मंडल, 731 सूक्त, प्रमुख विषय- तंत्र-मंत्र, ब्रह्मज्ञान, औषधि प्रयोग, मगध एवं अंग महाजनपदों का उल्लेख, सभा एवं समिति प्रजापति की दो पुत्रियां।	



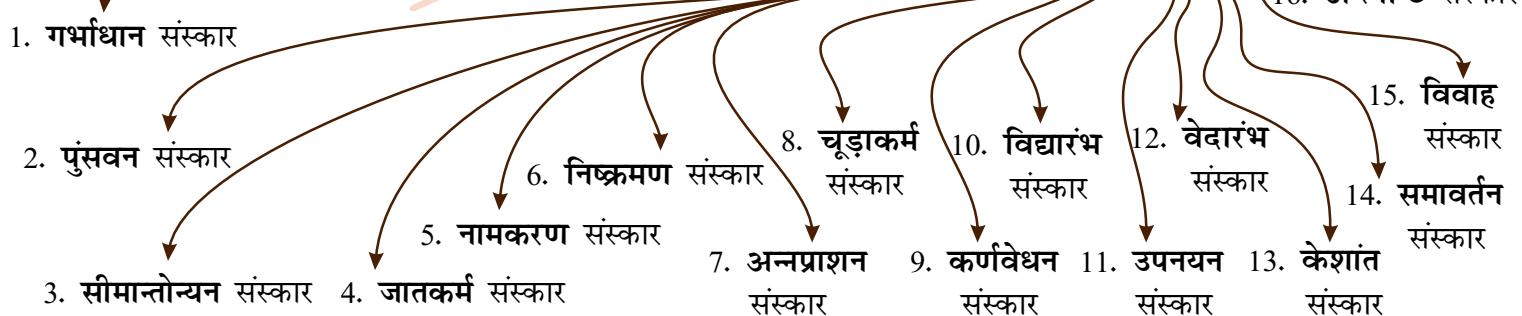
महाजनपदों का उदय

महाजनपद	राजधानी	क्षेत्र (आधुनिक स्थान)
अंग	चंपा	भागलपुर, मुंगेर (बिहार)
मगध	गिरिब्रज/राजगृह	पटना, गया (बिहार)
काशी	वाराणसी	वाराणसी के आस-पास (उत्तर प्रदेश)
वत्स	कौशाम्बी	इलाहाबाद के आस-पास (उत्तर प्रदेश)
वज्ज्ञ	वैशाली	मुजफ्फरपुर एवं दरभंगा के आस-पास का क्षेत्र (बिहार)
कोशल	श्रावस्ती	फैजाबाद (उत्तर प्रदेश)
अवन्ति	उज्जैन/ महिष्मती	मालवा (मध्य प्रदेश)
मल्ल	कुशीनारा	देवरिया (उत्तर प्रदेश)
पंचाल	अहिच्छत्र, कम्पिल्य	बरेली, बदायूँ, फरुखाबाद (उत्तर प्रदेश)
चेदि	शक्तिमती	बुंदेलखण्ड (उत्तर प्रदेश)
कुरु	इन्द्रप्रस्थ	आधुनिक दिल्ली, मेरठ एवं हरियाणा के कुछ क्षेत्र
मत्य	विराटनगर	जयपुर (राजस्थान) के आस-पास के क्षेत्र
कम्बोज	हाटक	राजोरी एवं हजारा क्षेत्र (उत्तर प्रदेश)
शूरसेन	मथुरा	मथुरा (उत्तर प्रदेश)
अश्मक	पोटली/पोतन	गोदावरी नदी क्षेत्र (दक्षिण भारत का एक मात्र जनपद)
गंधार	तक्षशिला	रावलपिंडी एवं पेशावर (पाकिस्तान)

संस्कार

संस्कार का अर्थ है-
परिष्कार या शुद्धिकरण।

गृह्य सूत्र में निम्न 16 प्रकार के संस्कारों की मान्यता है।



बीं ई. पू. के धार्मिक आंदोलन

जैन धर्म

बौद्ध धर्म

शैव धर्म

भागवत धर्म

जैन धर्म

- जैन साहित्य को 'आगम सिद्धांत' कहा जाता है।
- 'जिन' शब्द से जैन बना (अर्थ- विजेता)
- निर्ग्रथ यानी जैन साधु
- उदय का कारण- हिन्दूओं में रूढ़िवादी कर्मकांड एवं ब्राह्मणों का वर्चस्व
- संस्थापक- तीर्थकर
- प्रथम तीर्थकर - ऋषभदेव
- ऋषभदेव और अरिष्टनेमि तीर्थकर का नाम ऋग्वेद में उल्लेखित
- ऋषभदेव- इक्ष्वांकु वंश से संबंधित थे।

जैन धर्म के शाही संरक्षक

उत्तर भारत में

- बिंबसार
- अजातशत्रु
- चंद्रगुप्त मौर्य
- बिंदुसार
- हर्षवर्द्धन
- बिंदुसार
- खारवेल

दक्षिण भारत में

- कदम्ब राजवंश
- गंग राजवंश
- अमोघवर्ष
- कुमारपाल
(चालुक्य शासक)

ऋषभदेव

अन्य नाम

- आदिनाथ, आदिश्वरा, युगादिदेव, प्रथमाराजेश्वर
- जन्म- अयोध्या
- पुत्र- भरत, बाहुबली

त्रिरत्न

- सम्यक् दर्शन
- सम्यक् ज्ञान
- सम्यक् आचरण

महाकृत

- ब्रह्मचर्य
- अहिंसा
- अस्तेय
- अपरिग्रह
- अमृषा

- इन महाकृतों को 'अनुव्रत' भी कहा जाता है।

- ब्रह्मचर्य को महावीर ने बाद में जोड़ा। बाकी चार का प्रतिपादन पाश्वर्नाथ ने किया था।
- श्वेतांबर- (स्थूलभद्र)- श्वेत वस्त्र धारण करने वाले
- दिगंबर- (भद्रबाहु)- नग्न रहने वाले

संथारा

- जैन धर्म का हिस्सा
- श्वेतांबर इसे 'संथारा' कहते हैं।
- दिगंबर 'संलेखना' कहते हैं।
- आमरण अनशन की अनुष्ठान विधि

जैन धर्म की मुख्य शिक्षाएं

- संसार को दुःख मूलक माना गया है।
- दुःख का मूल कारण- तृष्णा
- ईश्वर में विश्वास लेकिन ईश्वर के अस्तित्व को 'जिन' से नीचे रखा है।
- वर्ण व्यवस्था की निंदा नहीं की, बल्कि सुधार का प्रयास किया।
- आत्मा के स्थानांतरणमन और कर्म सिद्धांत में विश्वास
- जैन धर्म में अजीव (निर्जीव सत्ता) का विभाजन पाँच भागों (पुद्गल, काल, आकाश, धर्म तथा अधर्म) में किया गया है।
- जैन धर्म में पुनर्जन्म, कर्मवाद, मोक्ष एवं सत्ता को स्वीकारा गया है।
- यह वेद की अपौरुषेयता तथा ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकारता है।
- जैन मत के अनुसार विश्व शाश्वत है तथा केवल संघ सदस्यों हेतु 'कैवल्य' का विधान है।

प्रमुख जैन तीर्थकर और उनके प्रतीक चिन्ह

नाम	प्रतीक चिन्ह	नाम	प्रतीक चिन्ह
ऋषभदेव	वृषभ	विमलनाथ	वाराह
अजितनाथ	गज	अनन्तनाथ	श्येन
संभवनाथ	अश्व	धर्मनाथ	बत्र
अभिनन्दन नाथ	कपि	शांतिनाथ	मृग
सुमतिनाथ	कौच	कुंथुनाथ	अज
पद्मप्रभु	पद्मम्	अरनाथ	मीन
सुपाश्वर्णनाथ	स्वास्तिक	मलिलनाथ	कलश
चन्द्रप्रभु	चन्द्र	मुनिसुत्रत	कूर्म
सुविधिनाथ	मगर	नेमिनाथ	नीलकमल
शीतलनाथ	कल्पवृक्ष	अरिष्टनेमि	शंख
श्रेयांसनाथ	गेण्डा	पाश्वर्णनाथ	सर्प
पूज्यनाथ	महिष	महावीर	सिंह

जैन संगीतियां

वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	मुख्य बातें
प्रथम (332-298 ई.पू.)	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र	12 अंगों का संकलन
द्वितीय (6वीं शताब्दी)	बल्लभी	क्षमाश्रण	12 अंगों को लिपिबद्ध किया गया

540 ई. पूर्व में जन्म

जन्मस्थान- कुंडग्राम या कुंडलपुर
(वैशाली) बिहार

पिता- सिद्धार्थ (ज्ञातृक कुल)

माता- त्रिशला (लिच्छवी राजा चेतक की बहन)

30 वर्ष की उम्र में संन्यास जीवन- 12 वर्ष की तपस्या के बाद साल वृक्ष के नीचे (ऋग्युपालिका नदी के तट पर, जृम्मिकाग्राम के नजदीक) ज्ञान की प्राप्ति (कैवल्य)

महावीर स्वामी (वर्द्धमान)

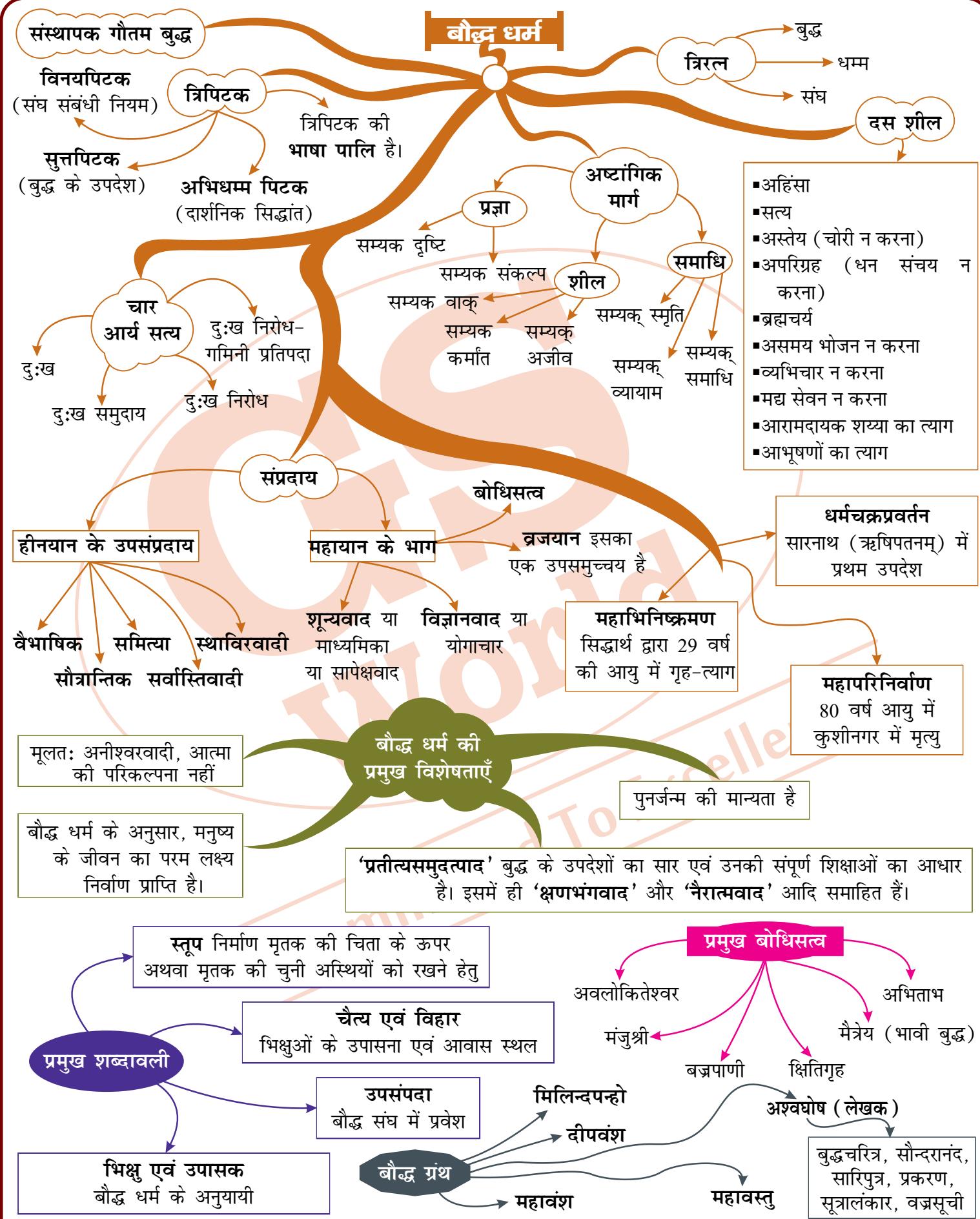
कैवल्य प्राप्ति के बाद महावीर कहलाएः-

1. जिन (विजेता)
2. अहंत (पूजा)
3. निर्ग्रथ (बंधनहीन)

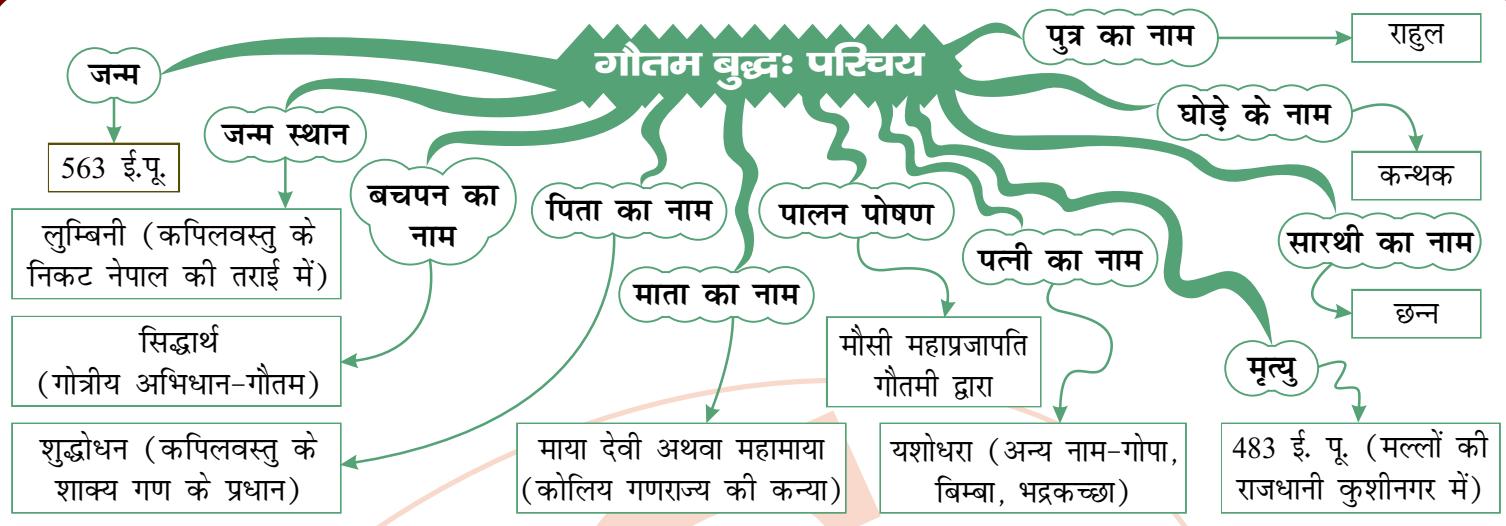
मल्लराजा सूस्तिपाल के राजप्रसाद में महावीर स्वामी को 'निर्वाण' प्राप्त हुआ।

पाँचवें व्रत 'ब्रह्मार्चय' को जोड़ा

24वें तीर्थकर
(बौद्ध धर्म के वास्तविक संस्थापक)



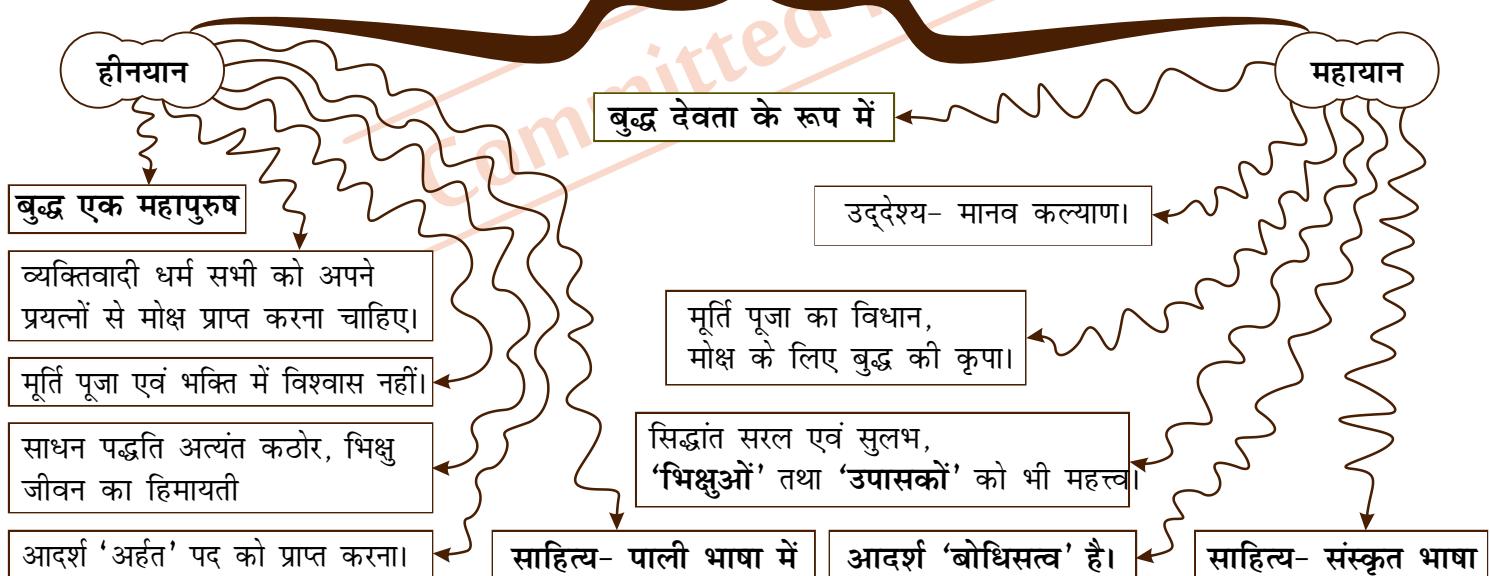
गौतम बुद्धः परिचय



बौद्ध संगीतियाँ

संगीत	स्थान	समय	शासक	अध्यक्ष	कार्य
प्रथम	सप्तपर्णी गुफा (राजगृह)	483 ई.पू.	अजातशत्रु	महाकशयप	बुद्ध के उपदेशों का सुत्तपिटक तथा विनयपिटक में संकलन
द्वितीय	वैशाली	383 ई.पू.	कालाशोक	साबकमीर (सर्वकामनी)	स्थविर एवं महासंघिक में विभाजन
तृतीय	पाटलिपुत्र	250 ई.पू.	अशोक	मोग्गलिपुत्त तिस्स	अभिधम्मपिटक का संकलन
चतुर्थ	कुण्डलवन (कश्मीर)	72 ई.	कनिष्ठ	वसुमित्र	संघ का हीनयान एवं महायान संप्रदायों में विभाजन

हीनयान एवं महायान में अंतर



प्राचीन बौद्ध विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय

संस्थापक

अवस्थित

- नालन्दा
- ओदन्तपुरी
- विक्रमशिला
- सोमापुरी
- बल्लभी

- कुमारगुप्त प्रथम
- गोपाल
- धर्मपाल
- धर्मपाल
- भट्टारक

- बिहार
- बिहार
- बिहार
- बंगाल
- गुजरात

बौद्ध एवं जैन मतों में तुलना

समानता

संस्थापक- क्षत्रिय कुल

वेदों की प्रमाणिकता के प्रति अनास्था

कर्मकाण्डों के फली-भूत होने का निषेध। कर्म व पुनर्जन्म को मान्यता

शूद्रों व महिलाओं के द्वारा मोक्ष प्राप्ति की संभावना का विरोध

असमानता

बौद्ध 'निर्वाण' इसी जीवन में संभव मानते हैं, जबकि जैन शरीर से मुक्ति के पश्चात् ही इसे संभव मानते हैं।

बौद्ध मत मुक्ति हेतु 'मध्यम मार्ग' का उपदेश देता है, जबकि जैन कठोर साधना पर बल देता है।

बुद्ध ने जाति प्रथा की कठोर निन्दा की है, जबकि महावीर ने नहीं।

महावीर ने बुद्ध की अपेक्षा अंहिसा व अपरिग्रह पर अधिक बल दिया है।

संप्रदाय	संस्थापक	मुख्य विचार
भौतिकवादी	अजित-केसकम्बलिन	अच्छे या बुरे कर्मों का कोई फल नहीं होता, अधिकतम सुख प्राप्त करना चाहिए।
अक्रियावादी	पूरण कश्यप	'न तो कर्म होता है और न पुनर्जन्म'
आजीवक, नियतिवादी	मक्खलि गोशाल	आत्मा को अनेकानेक पुनर्जन्मों के पूर्व निर्धारित अटल चक्र से गुजरना पड़ता है।
नित्यवादी	पकुध कच्चायन	सब कुछ पूर्व से ही निश्चित है।
अनिश्चयवादी	संजय वेलटपुत्त	न तो यह कहा जा सकता है कि स्वर्ग या नरक है या फिर नहीं है।

- संस्थापक बिंबिसार (544 ई.पू. गद्दी पर बैठा)
- वैवाहिक संबंधों द्वारा साम्राज्य विस्तार
- बिंबिसार का राजवैध - जीवक

बिंबिसार के वैवाहिक संबंध

- चेटक (लिच्छवी शासक) की बेटी 'चेलना' से
- कोशल नरेश प्रसेनजित की बहन 'महाकोशल' से
- मद्रदेश की 'क्षेमा' से

अजातशत्रु (492-460 ई.पू.)

- 'कुणिक' उपनाम
- प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन
- शासनकाल के 8वें वर्ष बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ
- काशी, बज्जि संघ को हराया, लिच्छवियों में फूट डलवायी

उदयिन (460-444 ई.)

- पाटलिपुत्र (कुसुमपुरा) की स्थापना
- राजधानी को राजगृह से पाटलिपुत्रा स्थापित किया
- जैन धर्मावलंबी
- 'श्रेणिक' उपनाम

महापदमनंद (संस्थापक)

- 'एकराट' शासक
- शूद्र शासक
- 'सर्वक्षत्रान्तक' कहलाया (क्षत्रियों का नाशक)
- 'कालि का अंश' उपनाम
- इसके कलिंग विजय का वर्णन खारवेल के 'हाथीगुफा अभिलेख' में दिया गया है।
- महाबोधि वंश में 'उग्रसेन' नाम
- 'पाणिनी' इसके मित्र थे
- भार्गव (पशुराम का अवतार) कहते हैं।

'पितृहंता वंश' कहलाया

हर्यक वंश
(544-412) ई.पू.

शिशुनाग वंश
(412-344) ई.पू.

मगाध साम्राज्य एवं
समकालीन राजनीति

नन्दवंश
(344-322) ई.पू.

मौर्य काल
321-185 ई.पू.

शिशुनाग

- जनता द्वारा चयनित शासक कहलाया
- अंतिम शासक नन्दिवर्द्धन (महानंदिन)
- वत्स पर अधिकार
- इसके समय मगध की सीमा मालवा तक विस्तारित हो गई। (मालवा दूसरी राजधानी)

कालाशोक

- दिव्यावदान में 'काकवर्ण' कहा गया
- राजधानी पुनः पाटलीपुत्र ले गया
- 'द्वितीय बौद्ध संगीति' आयोजित कराई

प्रमुख शासक

- चंद्रगुप्त मौर्य (संस्थापक)
- बिंदुसार
- अशोक
- वृहद्रथ (अंतिम शासक)

स्रोत:-

- कौटिल्य का अर्थशास्त्र
- जैन साहित्य
- दीपवंश एवं महावंश
- मुद्राराक्षस (विशाखदत्त)
- यूनानी लेखकों नियार्कस, मेगास्थनीज (इडिका) आदि का विवरण

पहली बार अखिल भारतीय सम्प्राज्य का निर्माण

धनानंद

- इसके जैन अमात्य शकटाल तथा स्थलूभद्र थे।
- इसका सेनापति भद्रशाल था।
- सिंकंदर का समकालीन, सिंकंदर ने 326 ई.पू. में आक्रमण किया, सिंकंदर ने 'निकैया और बउकेफला' नगर स्थापित किए।
- यूनानी ग्रंथों में 'अग्रमीज' कहा गया है।
- चाणक्य ने चंद्रगुप्त मौर्य की सहायता से धनानंद की हत्या कराई।

- सेल्यूक्स निकेटर (305 ई.पू.) को पराजित किया (ऐप्पियानस द्वारा उल्लेख)
- सेल्यूक्लस की बेटी (कार्नेलिया) हेलेना से विवाह और कंधार, हेरात, काबुल और मकरान प्रांत की प्राप्ति।

- प्लूटार्क के अनुसार चन्द्रगुप्त ने संपूर्ण भारत को रौंद डाला था

चंद्रगुप्त मौर्य

- एण्ड्रोकोट्स (एप्पियॉनस एवं प्लूटार्क ने कहा)
- विलियम जोंस ने 'सैण्ड्रोकोट्स' को चंद्रगुप्त मौर्य से पहचाना
- महिला अंगरक्षक होती थी।

- इसने तक्षशिला में हुए दो विद्रोह को दबाने हेतु सुसीम और अशोक को भेजा
- तारानाथ (बौद्ध विद्वान) ने बिंदुसार को '16 राज्यों का विजेता' कहा है।

- यूनानी लेखों में 'अमित्रोचेट्स' या 'अमित्रोकेडीज' (शत्रुनाशक) कहा गया है।
- अन्य नाम- अमित्रघात, भद्रसार (वायुपुराण), तथा सिंहसेन (जैन ग्रंथ)

- आजीवक संप्रदाय का अनुयायी
- सीरियाई राजदूत 'डाइमेक्स' आया था
- एंटिओक्स से दार्शनिक, सूखी अंजीर तथा मीठी मदिरा की मांग

- भारत में शिलालिखों की शुरूआत की
- अशोक के अभिलेख 1837 में सर्वप्रथम जेम्स प्रिसेप ने पढ़े।
- मास्की, गुर्जरा, नेतृत तथा उड़ेगोलम के लेखों में अशोक का नाम मिलता है।

बिंदुसार

**मौर्य काल
321-185 ई. पू.**

मगाध साम्राज्य एवं समकालीन राजनीति

- निग्रोध द्वारा अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित करने का वर्णन दीपवंश, महावंश में है।
- उपगुप्त से बौद्ध दीक्षा प्राप्त की (दिव्यावदान में वर्णन)

- बिंदुसार के शासनकाल में अशोक अर्वति (उज्जयिनी) का उपराजा था।
- 269 ई.पू. राज्याभिषेक, 273 ई.पू. में राजा बना।
- पुराणों में 'अशोकवर्द्धन' कहा गया

- बराबर की पहाड़ियों में 'कर्ण, चोपार, सुदामा तथ विश्व झोपड़ी' का निर्माण (आजीविकों हेतु) वहीं 'नागार्जुन गुफा' दशरथ ने दी थी।
- अशोक के 7वें अभिलेख में आजीविकों का उल्लेख
- अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा (बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु)
- 84,000 स्तूपों का निर्माता (बौद्ध परंपरा के अनुसार)

- अभिषेक के 8वें वर्ष कलिंग (राजधानी-तोसली) पर आक्रमण (13वां शिलालेख में वर्णन)
- मिस्ट्र राजा फिलाडेल्फस (टालमी-II) ने डियानीसियस को अशोक के दरबार में भेजा।

शिलालेख

- 14 विभिन्न लेखों का समूह 8 स्थानों से प्राप्त
- शिलालेखों में ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक एवं अरमाइक लिपि का प्रयोग,
- सहगौरा ताप्रपत्र (गोरखपुर) तथा महास्थान अभिलेख (बोगरा बांग्लादेश) प्राकृत भाषा, ब्राह्मी लिपि में लिखे गए हैं।
- शिलालेख की खोज 1750 में टी. फेन्नीलर द्वारा

अशोक के अभिलेख

- ग्रीक एवं अरमाइक लिपि (अफगानिस्तान)
- खरोष्ठी लिपि (उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान)
- ब्राह्मी लिपि (शेषभारत)
- खरोष्ठी लिपि दायरों से बायी लिखी जाती थी।

परीक्षापयोगी तथ्य

- रानी का अभिलेख- कौशाम्बी अभिलेख
- रुम्मिनदे ई अभिलेख- अशोककालीन सबसे छोटा स्तंभलेख जिसमें भू-राजस्व दर घटाने का वर्णन।
- पृथक शिलालेख- धौली एवं जौगढ़, इनमें 11,12,13वें लेख नहीं मिलते। इनकों 'पृथक कलिंग प्रज्ञापक' कहा गया है।
- धौली अभिलेख- 'सारी प्रजा मेरी संतान है।'
- जौगढ़ अभिलेख- शासन में भ्रष्टाचार रोकने हेतु अधिकारियों के हस्तांतरण की बात
- एर्गुडि वृहद शिलालेख की लिपि दायें से बायें है जबकि अन्य सभी में बायें से दायें हैं।
- 13वें शिलालेख में यवन शासकों (टालेमी-II, एलेकजेंटर, ऐटियोक-II, मग अंतकिनी) का उल्लेख।
- कंगनहल्ली (कर्नाटक) शिलालेख में ब्राह्मी लिपि में 'राण्यो अशोक' (राजा अशोक) का उल्लेख है।

भारतीय समाज के बारे में

- समाज सात श्रेणियों (दार्शनिक, कृषक, पशुपालक, कारीगर, योद्धा, निरीक्षक, मंत्री) में विभाजित।
- दास प्रथा के प्रचलन का अभाव
- कोई भी व्यक्ति अपनी जाति से बाहर न तो विवाह कर सकता था न ही कोई पेशा अपना सकता था।
- रूपजीवा- स्वतंत्र वेश्यावृत्ति

अशोक के स्तंभ लेख (7)

- केवल ब्राह्मी लिपि में (छ: अलग स्थानों से प्राप्त)
1. प्रयाग स्तंभ लेख (कौशाम्बी से अकबर ने इलाहाबाद के किले में स्थापित कराया)
 2. दिल्ली टोपरा (फिरोज शाह तुगलक द्वारा टोपरा से दिल्ली लाया गया)
 3. दिल्ली मेरठ (फिरोजशाह दिल्ली लाया)
 4. रामपुरवा (चंपारण बिहार, खोज-कारलायल द्वारा)
 5. लौरिया अरेराज - पूर्वी चंपारण
 6. लौरिया नंदनगढ़ - पश्चिमी चंपारण

अशोक

मौर्य काल
321-185 ई. पू.

मेंगास्थनीज (किताब-इंडिका)

नगर प्रशासन

- समितियों का विभाजन 6 भागों में जिसमें 30 सदस्य थे। (प्रत्येक में 5)
- बिक्री कर मूल्य का 10वां भाग थी।
- कर की चोरी पर मृत्युदंड की सजा

- चर - जासूस
- कुमार / आर्यपुत्र / राष्ट्रिक - प्रांतों का प्रशासक
- ग्राम - प्रशासन की सबसे छोटी इकाई (मुखिया 'ग्रामीक')

- अशोक के समय मौर्य साम्राज्य में 5 प्रांत थे जिन्हें 'चक्र' कहा जाता था।
- मंत्रिपरिषद् - सम्राट की सहायता हेतु
- तीर्थ - अर्थशास्त्र के अनुसार शीर्षस्थ अधिकारी (महामात्र)
- जस्टिन के अनुसार, चंद्रगुप्त की सेना में 9000 हाथी थे।

- गोप - सबसे छोटा प्रशासक (10 गाँवों का शासक)
- एग्रोनोमाई - मार्ग निर्माण अधिकारी
- एस्टिनोमाई - नगर पदाधिकारी
- न्यायालय - धर्मस्थलीय, कंटकशोधन
- गुप्तचर - संस्था, संचरा, चर
- नायक - युद्ध में सेना का नेतृत्वकर्ता
- सेनापति - सैन्य विभाग का सर्वोच्च अधिकारी
- महामात्य सर्प - गुप्तचर विभाग का प्रमुख
- सीताभूमि - सरकारी भूमि
- राजुक - न्यायाधीश
- अदेवमातृक - बिना वर्षा की भूमि

मौर्यकालीन प्रशासन

मौर्यकालीन स्थापत्य

**मौर्य काल
321-185 ई. पू.**

मगध साम्राज्य एवं समकालीन राजनीति

मौर्यकाल

**शुंग वंश
185-75 ई.**

- संस्थापक - वशुमित्र (75 ई.पू.)
- ब्राह्मण वंश
- शासक - वसुदेव, भूमिमित्र, सुशर्मन आदि।

**कण्व वंश
72-28 ई. पू.**

- **प्रमुख शासक** - अग्निमित्र, वसुमित्र, वज्रमित्र, देवभूति आदि।
- कालिदास की रचना 'मालविकाग्निमित्र' का नाटक शुंग शासक अग्निमित्र पर केंद्रित है।
- 'पतंजलि' पुष्यमित्र के दरबारी थे।

- अशोक के स्तंभों पर यूनानी एवं इरानी प्रभाव
- स्तूप मौर्यकालीन स्थापत्य की देन (सांची का महास्तूप, सारनाथ का धर्मराजिका स्तूप, भरहुत एवं तक्षशिला स्तूप, पिपरहवा (सबसे प्राचीन))
- 'धौली हस्ति' (उदयगिरी पहाड़ी को काटकर एक शैल कृत हाथी की मूर्ति)
- दीदारांगज से यक्षी की, परखम से यक्ष तथा बेसनगर से यक्षिणी की मूर्ति
- मौर्यकालीन मूदभांडों में सबसे उत्कृष्ट उत्तरी काली पॉलिश वाले मृतभांड (NBPW) हैं।
- एकाशम स्तंभ (सर्वोत्कृष्ट सारनाथ सिंह स्तंभ) राष्ट्रीय चिन्ह
- रामपुरवा में नदुआ बैल, संकिशा में हाथी
- अशोक के स्तंभों में सिंह, घोड़ा, हाथी, बैल प्राप्त होते हैं।

- **संस्थापक** - वृहद्रथ को हटाकर पुष्यमित्र शुंग (185 ई.पू.) राजधानी - पाटलपुत्र
- वाणभट्ट के हर्षचरित्र में पुष्यमित्र को 'अनार्य' कहा गया है।
- पुष्यमित्र शुंग ब्राह्मणवादी था। इसने मिनांडर, डेमेट्रियस, खारवेल के आक्रमणों को विफल किया।
- अयोध्या अभिलेख (धनदेव) के अनुसार पुष्यमित्र ने दो अश्वमेघ यज्ञ करवाए थे।
- भरहुत स्तूप का निर्माण पुष्यमित्र ने किया तथा सांची स्तूप पर पाषाण वेदिका बनवाई
- भागभद्र के शासनकाल में यवन शासक एण्टियालकिट्स के राजदूत हेलियोडोरस ने विदिशा में गरुड़ स्तंभ बनवाया।

- स्थापना-सिमूक (60-ई.पू.- 37 ई.पू.)
 - अमरावती एवं प्रतिष्ठित राजधानी
 - इन्होंने ब्राह्मणों एवं बौद्ध भिक्षुओं को भूमि दान देने की प्रथा की शुरूआत की
 - सातवाहन का अर्थ 'सात द्वारा संचालित'
 - पुराणों में 'आंध्र मृत्यु' भी कहा गया है।
 - क्षेत्र आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र एवं तेलंगाना
 - उत्तराधिकारी - इक्षवाकु

- पहली सदी ई. पू. के मध्य से तीसरी सदी के शुरूआत तक

शतकर्णी प्रथम

- नानाघाट अभिलेख (भूदान साक्ष्य)
- पुराणों में इसे 'कृष्ण पुत्र' कहा गया है।

हाल

- महानतम् सातवाहन शासक था।
- कवि (गाथासप्तशती रचना)
- दरबार में गुणाद्य, सर्ववर्मन निवास करते थे।

वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी

- गौतमीपुत्र शतकर्णी का उत्तराधिकारी
- इसे शक शासक रुद्रदामन ने दो बार हराया था।
- 'दक्षिणापथेश्वर' उपनाम
- नासिक, काले और अमरावती से इसके अभिलेख मिले हैं।

गौतमीपुत्र शतकर्णी

- विजयों की जानकारी नासिक अभिलेख से
- 'एकमात्र' एवं 'अद्वितीय ब्राह्मण' कहलाया
- इसके घोड़ों ने 'तीन सम्मदों का पानी' पिया था।
- जोगलथम्बी से प्राप्त चाँदी के सिक्कों पर एक तरफ 'नहपान' दूसरी तरफ 'गौतमीपुत्र' का नाम अंकित।
- उपाधिया- राजाराज, बेंकटस्वामी विध्यनरेश
- चातुर्वर्ण्य को फिर से स्थापित किया
- 'वर्ण व्यवस्था का रक्षक', 'वेदों का आश्रयदाता' कहलाया।

क्या आप जानते हैं?

हाथी गुफा अभिलेख

- 1825 में ए. स्टर्लिंग द्वारा देखा गया।
- 1885 में डॉ. भगवान लाल इंद्रजी द्वारा इसका पहला विश्वसनीय रिकार्ड आया।

- पहली शताब्दी ईसा पूर्व में कलिंग में एक नए राजवंश का उदय हुआ, जिसे चेदि राजवंश के नाम से जाना जाता है। चेदि वंश को महामेघवंश भी कहते हैं।

संस्थापक- महामेघवाहन

- महामेघवाहन का अर्थ है 'महान बादलों के भगवान'
- 'खारवेल' महान शासक। यह मगध से जैन तीर्थकर शीतलनाथ की मूर्ति लाया।
- खारवेल (महामेघ का पुत्र था)

हाथीगुफा अभिलेख (2 BCE)

- उद्यागरी पहाड़ी
- ब्राह्मी लिपि, प्राकृत भाषा
- जैन लोगों को गांव दान में दिए जाने का उल्लेख
- चोल, चेर, पाण्डियों को खारवेल द्वारा पराजित किए जाने का उल्लेख

शक

- भारतीय स्नोतों में शको को 'सीथियन' कहा गया है।
- प्रथम शासक- मोगा
- नहपान (महाराष्ट्र) गौतमी पुत्र शतकर्णी से हारा था।

- रुद्रदामन (130-150 ई.पू.)- सर्वाधिक प्रसिद्ध। इसने शतकर्णी-II को दो बार हराया
- सुदर्शन झील की मरम्मत
- संस्कृत का संरक्षक
- जूनागढ़ अभिलेख (संस्कृत)

कला एवं संस्कृति (सातवाहन)

- सातवाहनों ने सर्वप्रथम 'शीशे की मुद्राएं' चलाई
- सातवाहन ब्राह्मण थे और 'कृष्ण की पूजा' करते थे।
- सातवाहन पहले स्वदेशी राजा थे जिन्होंने 'स्वयं के सिक्के' जारी किए जिन पर शासकों के चित्र थे।
- अधिकारिक भाषा प्राकृति, लिपि ब्राह्मी थी
- कार्लिंचैत्य का निर्माण, अमरावती एवं नागार्जुनकोंडा स्तूपों का निर्माण

(यूथिडेमिड कूल से)

डेमेट्रियस-। 180 रुपू.

- भारतीय सीमा में सर्वप्रथम प्रवेशकर्ता
 - इसने ‘साकल’ को अपनी राजधानी बनाया
 - ‘राजा’ की उपाधि
 - इसने यूनानी तथा खरोष्ठी लिपि में सिक्के चलाए।

मिनांडर 165-145 ई. पू.

- डेमेट्रियस कुल से था।
 - ‘मिलिन्दपन्हों’ में इसकी नागसेन से वार्ता संकलित है।
 - बौद्ध धर्म अनुयायी

मौर्योत्तर काल में पश्चिमी विदेशी आक्रमणकारियों में बैकिट्टुया के ग्रीक प्रमुख थे।

यूनानियों की देन

- यूनानी राजाओं ने सिक्कों पर राजाओं के नाम एवं तिथिया उत्कीर्ण शुरू की
 - ट्रूप-चांदी के सिक्के
 - सर्वप्रथम मुद्रालेख तथा सोने के सिक्के जारी किए
 - काल गणना, संवत् का प्रयोग, सप्ताह के 7 दिन, 12 राशियां, कैलेंडर वर्ष।
 - नाटकों में पर्दा (यवनिका) यूनानियों की देना।
 - हेलोनिस्टिक कला का विकास
 - भारत में ज्योतिष के विकास में यूनानी सहायक रहे
 - सर्वप्रथम यूनानी आक्रमणकारियों ने 'हिन्दूकश पर्वत' पार किया

हिन्दू- यवना

दूसरी शताब्दी ई. पू. से
पहली शताब्दी ई. तक
शासनकाल

इक्ष्वाकु वंश (सौर वंश)

- बौद्ध धर्म अनुयायी
 - ये सातवाहनों के सामंत थे
 - संस्थापक - इष्वाकु
 - प्रथम जैन तीर्थकर ऋषभदेव इक्ष्वाकु राजा थे

इक्ष्वाकु राजा शैव थे और वैदिक संस्कार करते थे, लेकिन उनके शासनकाल में बौद्ध धर्म भी फला-फूला। कई इक्ष्वाकु रानियों और राजकुमारों ने वर्तमान नागार्जुनकोंडा में बौद्ध स्मारकों के निर्माण में योगदान दिया।

आंध्र इक्वाक्

इस राजवंश ने लगभग तीसरी और चौथी शताब्दी ईसवीं के दौरान विजयपुरी (आंध्र प्रदेश में आधुनिक ‘नागार्जुनकोंडा’) में अपनी राजधानी से भारत की पूर्वी कृष्णा नदी घाटी में शासन किया। इक्ष्वाकुओं को उनके प्रसिद्ध नामों से अलग करने के लिए विजयपुरी के ‘आंध्र इक्ष्वाकु’ के रूप में भी जाना जाता है।

मौर्याचाल

परीक्षोपयोगी
जानकारियाँ

- शकों ने 'क्षत्रप प्रणाली' चलाई तथा प्रांतों में द्वैध शासन की प्रणाली प्रारंभ थी।
- यूनानियों ने 'मिलिटरी गवर्नरशिप' की परिपाठी चलाई।
- शक 'त्रातार' (मुक्तिदाता) उपाधि लेते थे।
- कुषाणों ने सर्वाधिक शुद्ध स्वर्ण सिक्के तथा ताम्र सिक्के चलाए।
- कुषाणों ने 'रेशम मार्ग' पर नियंत्रण किया (कनिष्ठ ने)।
- 'पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' - अज्ञात यूनानी नाविक द्वारा रचित है।
- मौर्याचालीन प्रमुख बंदरगाह- सोपारा, मृगुकच्छ, देवल, पोलूरा, चौल, नौरा, कोरकई, पुहार, साइला आदि।
- व्यापार एवं विनियम में मुद्राओं का प्रयोग मौर्याचाल युग की प्रमुख देन है।
- मौर्याचाल काल में आर्य देवताओं के समानांतर गैर-आर्य देवता भी स्थापित हो गए।
- 'भक्ति' का विकास इस काल के धर्म की प्रमुख विशेषता।
- इस काल में बढ़ी संख्या में जनजातीय तत्वों तथा विदेशी तत्वों का आत्मसातीकरण किया गया।

कुषाण शासक

- कुषाण वंश का संस्थापक
- केवल तांबे के सिक्के जारी
- सिक्कों पर यूनानी राजा हर्मियस की आकृति, दूसरी तरफ अपनी।
- सिक्कों पर 'धर्मस्थिदस' तथा 'धर्मस्थित' उत्कीर्ण

विम
कडफिसस
45-127 ई.

- कुषाण शक्ति का 'वास्तविक संस्थापक'
- बड़ी संख्या में सोने एवं तांबे के सिक्के चलाने हेतु जाना जाता है।
- सिक्कों पर यूनानी एवं खरोष्ठी लिपि
- शैव मत का अनुयायी
- सिक्कों पर शिव, त्रिशूल एवं नंदी की आकृति
- 'माहेश्वर' की उपाधि

हुविष्क

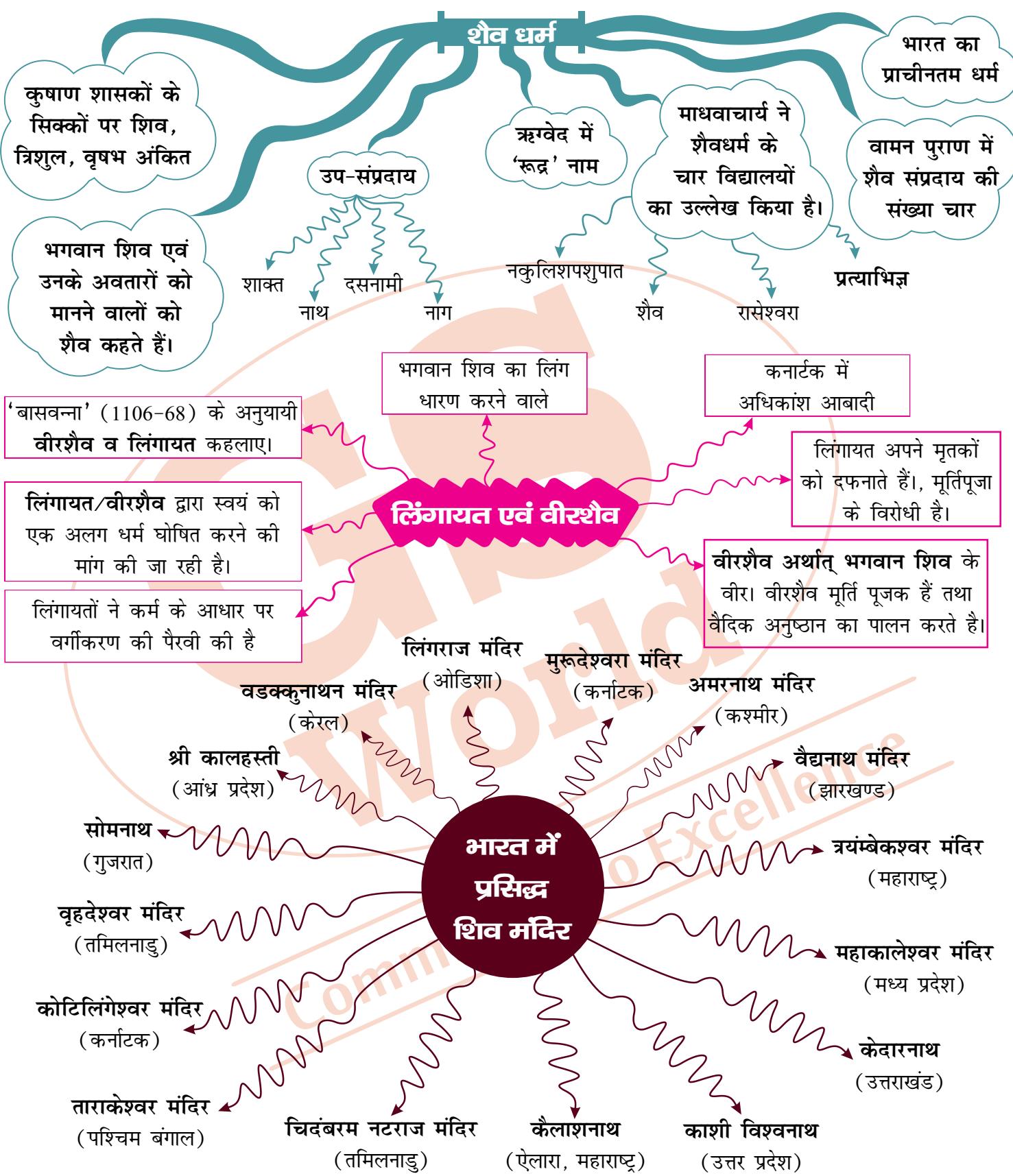
- कश्मीर में 'हुक्कपुर' नामक नगर बसाया।
- सिक्कों पर शिव, स्कंद तथा विष्णु की आकृति।

कनिष्ठ

- कनिष्ठ ने हान राजवंश के सम्राट हान हो-तो के सेनापति को हराया
- कुषाणों ने संस्कृत भाषा को प्रमुखता दी।
- अश्वघोष को संस्कृत का प्रथम नाटककार माना जाता है।

- सर्वाधिक प्रसिद्ध कुषाण शासक
- 'शक युग' का शुरूआतकर्ता
- 'द्वितीय अशोक' उपनाम
- 78 ई. में 'शक संवत' की शुरूआत।
- मुख्य राजधानी- पेशावर (पुरुषपुर)
- कश्मीर में 'कनिष्ठपुर' नगर बनाया
- पाटलिपुत्र पर आक्रमण कर अश्वघोष, बुद्ध का भिक्षापात्र प्राप्त किया।

- महास्थान (बोगरा) से प्राप्त कनिष्ठ की मूर्ति 'सोने की मुद्रा' में है।
- मथुरा से प्रतिमा मिली है।
- इसने गांधार एवं मथुरा शैली का विकास किया।
- दरबारी विद्वान- पार्श्व, वसुमित्र, अश्वघोष, नागार्जुन, चरक, माथरा।
- यह महायान का अनुयायी था।
- संस्कृत में आयोजित चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किया (कश्मीर, कुंडलवन प्रथम सदी)।
- सारनाथ बौद्ध अभिलेख कनिष्ठ से संबंधित है।



उदयगिरी पहाड़ी विदिशा (मध्यप्रदेश) पर शैव गुफा का निर्माण चंद्रगुप्त-II के सेनापति वीरसेन द्वारा कराया गया था। यहाँ ‘उदयगिरी गुहालेख’ भी है।

भागवत संप्रदाय

गुप्त सम्प्राट 'परम भागवत'
उपाधि ग्रहण करते थे।

प्रवर्तक
कृष्ण

अंपोलेडोटस (इंडो-ग्रीक शासक) के सिक्कों पर सर्वप्रथम भागवत धर्म के चिन्ह मिलते हैं।

विदिशा/वेसनगर के गरुड स्तंभ पर भागवत धर्म संबंधी साक्ष्य।

महर्षि पाणिनी के सूत्रों में भागवत धर्म एवं वासुदेव की पूजा का उल्लेख।

हेलियोडोरस (भागवत) द्वारा बनवाया गया

वासुदेव

संकर्षण

अनिरुद्ध

**पंचवीर
(पाषाण लेख, मथुरा)**

वासुदेव

संकर्षण या बलराम

प्रद्युम्न

प्रद्युम्न

साम्ब

चतुर्त्युह

अनिरुद्ध

मक्खलि गोशाल

1

संप्रदाय

वैष्णव संप्रदाय
ब्रह्म संप्रदाय
रुद्र संप्रदाय
सनक संप्रदाय

मत

विशिष्टाद्वैत
द्वैत
शुद्धद्वैत
द्वैताद्वैत

आचार्य

रामानुज
आनन्दतीर्थ
वल्लभाचार्य
निम्बार्क

2 घोर अक्रियवादी

1 आजीवक

3 यदृच्छावाद

4 भौतिकवादी

5 अनिश्चयवादी

वारकरी

7 श्री वैष्णव

संप्रदाय

संस्थापक

8 परमार्थ

रामभक्त

6 नामदेव

7 रामानुज

8 रामदास

9 रामानंद

गुप्त एवं गुप्तोत्तर काल

गुप्त संभवतः
कुषाणों के सामने थे।

संस्थापक-महाराज श्रीगुप्त
(240-280 ई.)

गुप्त साम्राज्य का उदय
प्रयाग के निकट कौशांबी में

गुप्तवंश

(275- 550 ई. तक)

गुप्त वंश का आरंभिक राज्य यू.पी.
और बिहार में था।

गुप्तकालीन वैष्णव अवशेष
देवगढ़ का दशावतार मंदिर
(बेतवा नदी के तट पर)

गुप्त सप्राट वैष्णव धर्म के
अनुयायी थे।

गुप्त संवत् शुरू किया

प्रथम महान् गुप्त शासक

गुप्त वंश का वास्तविक शासक

'महाराजाधिराज' की उपाधि

चंद्रगुप्त-

319-335/36 ई.

सिक्कों पर 'कुमारदेवी' का नाम

लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह

'परक्रमांक' उपाधि

इसने 8 प्रकार के सोने के सिक्के चलाए
(वीणावादन, गारुड़, अश्वमेध, आदि)

यह 'विष्णु का उपासक' था

'भारतीय नेपोलियन'
(विंसेट स्मिथ ने कहा है)

समुद्रगुप्त

(335-375 ई.)

'कविराज' की उपाधि, 'सिक्कों पर
वीणा बजाते' दिखाया गया

प्रयाग प्रशस्ति में 'लिच्छवी दौहित्र'

कहा गया है।

प्रयाग स्तंभलेख मूलतः
अशोक निर्मित है।

प्रयाग प्रशस्ति (हरिषेण)
चंपू शैली में लिखित है।

समकालीन नरेश- धनंजय,
नीलराज, उग्रसेन, विष्णुगोपा

बौद्ध विद्वान्
वसुबन्धु को संरक्षण

इसने दक्षिणापथ के राजाओं के प्रति
'ग्रहणमोक्षानुग्रह' की नीति अपनाई।

दरबारी विद्वान् (नवरत्न) - कालिदास, धन्वतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु,
वेताल भट्ट, घटकपर, वराहमिहिर, वररूचि

देवीचंद्रगुप्त नाटक में चंद्रगुप्त-॥
के बारे में जानकारी

शकों पर विजय के उपलक्ष्य में
चांदी के सिक्के चलाए

चंद्रगुप्त-॥
376-413/415 ई.

महरौली में लौह संभं
चंद्रगुप्त-॥ से संबंधित

उपाधियां- विक्रमादित्य, शकारि

फाह्यान दरबार में आया

स्वर्ण, रजत तथा ताम्र
मुद्राएँ चलाए।

अत्यंत महत्वपूर्ण नालंदा विश्वविद्यालय
की स्थापना की।

उपाधि - महेंद्रादित्य

मंदसौर अभिलेख (वत्सभट्टी) में
इसके सुव्यवस्थित शासक का वर्णन

सर्वाधिक गुप्तकालीन सिक्के
इसी ने निकाले

धनदैह, दामोदरपुर तथा
बैग्राम ताम्रपत्र

कुमारगुप्त-।
415-455 ई.

विलसड अभिलेख में गुप्त
वंशावली कुमारगुप्त-। तक है।

इसके समय हुणों ने
आक्रमण किया

सिक्कों पर गरुडध्वज अंकित

उपाधि- विक्रमादित्य

सिक्कों पर पद्मासन में
विराजमान लक्ष्मी,
धनुष-बाण लिए
राजा की आकृति

सुदर्शन झील का
पुनरुद्धार किया

स्कंदगुप्त ने पुष्यमित्र नामक
जातियों को हराया था

स्कंदगुप्त
455-467 ई.

इसने चीन (साँग सम्राट के दरबार) में राजूदत भेजे थे

विष्णुगुप्त-॥। अंतिम
गुप्त शासक
(540-550 ई.)

गुप्त शासकों ने सर्वाधिक
संख्या में सोने के
सिक्के चलाए।

नरसिंहगुप्त ने हूण
नरेश मिहिरकुल को
पराजित किया।

मिहिरकुल- तोरमाण का पुत्र

भानुगुप्त के ऐरण अभिलेख (510 ई.) से
'सती प्रथा' का पहला अभिलेख साक्ष्य।

तोरमाण- भारत पर दूसरे हुण
आक्रमण का नेता

महाबलाधिकृत-
सेनापति

महादण्यनायक-
न्यायाधीश

संधिविग्रहिक-
युद्ध तथा संधि से संबंधित

भुक्ति- प्रांत
(‘उपरिक’ इसका अधिकारी था)

गोप्ता- सीमांत प्रदेश

भूमि पर सम्राट का अधिकार

भाग- उत्पादक से प्राप्त 1/6 कर

हिरण्य- नकद कर

विष्टि- बेगार, पताका

निवर्तन, कुल्यावाप, द्रोणावाय,
आढ़वाप- भूमि माप के पैमाने थे

भट्ट- पुलिस कर

भूतोवात प्रत्यय- नशीली वस्तुओं पर

प्रणय- ग्रामवासियों पर अनिवार्य कर

निगम, श्रेणी, संघ- शिल्पी एवं व्यवसायी थे

गुप्तकालीन अधिकारी

दण्डपाशिक-
पुलिस विभाग का सर्वोच्च अधिकारी

कुमारमात्य- सर्वोच्च अधिकारी

महाअक्षपटालिक-
लेखा अधिकारी

भाण्डागाराधिकृत-
राजकोष का अधिकारी

विनयस्थिति संस्थापक-
शिक्षा एवं धर्म अधिकारी

भाट- पुलिस कर्मचारी

पुरपाल/द्रांगिक- नगर प्रशासक

महत्तर- गाँव का मुखिया

विषय (जिला)- इसका अधिकारी ‘विषयपति’

आर्थिक स्थिति

गुप्तकालीन बंदरगाह- ताप्रलिप्ति, भृगुकच्छ/भडौच, मुजरिस, आरिकामेडु, कावेरीपट्टनम्, घंटाशाला, कुदरा, चौल

श्रेष्ठी, सार्थवाह- व्यापारी थे

कौड़ी- खरीद-बिकी हेतु प्रयुक्त

दीनार- सोने का सिक्का (144 ग्रेन)

खिल

(न जोतने योग्य जमीन)

औदक
(दलदली भूमि)

अप्रहत
(जंगल भूमि)

वासु
(वास योग्य जमीन)

क्षेत्र
(खेती योग्य जमीन)

दास प्रथा प्रचलित थी

फाह्यान के अनुसार समाज में
अछूतों का प्रवेश वर्जित था।

वर्णों का आधार कर्म
न होकर जन्म था।

सामाजिक स्थिति

ब्राह्मणों को सर्वोच्च स्थान

स्त्रियों की दशा में गिरावट
(पर्दा प्रथा, सती प्रथा,
बाल विवाह, प्रचलित थे।)

कायस्थों का उदय

राजकीय धर्म- वैष्णव

गुप्तों ने परमभागवत उपाधि भारण की
और गरुड़ को राजकीय चिन्ह बनाया।

गुप्तकाल में मूर्ति उपासना का
केन्द्र बन गयी

फाह्यान के अनुसार, गुप्तकाल में कश्मीर,
अफगानिस्तान और पंजाब बौद्ध धर्म के केन्द्र थे।

बाघ, अंजता की गुफाओं पर
गुप्तकालीन अवशेष
(अंजता की गुफा सं. 16, 17, 19
गुप्तकालीन है।)

शतरंज खेल
गुप्तकाल में आया

शैक्षणिक केन्द्र- वल्लभी,
उज्जैनी, काशी,
मथुरा, पाटलिपुत्र,
(नालंदा बाद में हुआ)

महाभारत, रामायण का
अंतिम संकलन हुआ।

धार्मिक स्थिति

प्रमुख मंदिर- भीतरगाँव का ईट मंदिर,
सिरपुर का लक्ष्य मंदिर,
भूमरा एवं खोह का मंदिर

देवगढ़ (दशावतार मंदिर) में विष्णु को
शेषनाग शश्या पर विश्राम करते दिखाया गया है।
(पंचायतन शैली में निर्मित मंदिर)

धन्वतरि ने 'अष्टांग हृदय' नामक
आयुर्वेद ग्रन्थ की खोज की

नागार्जुन ने 'इस
चिकित्सा' की खोज की

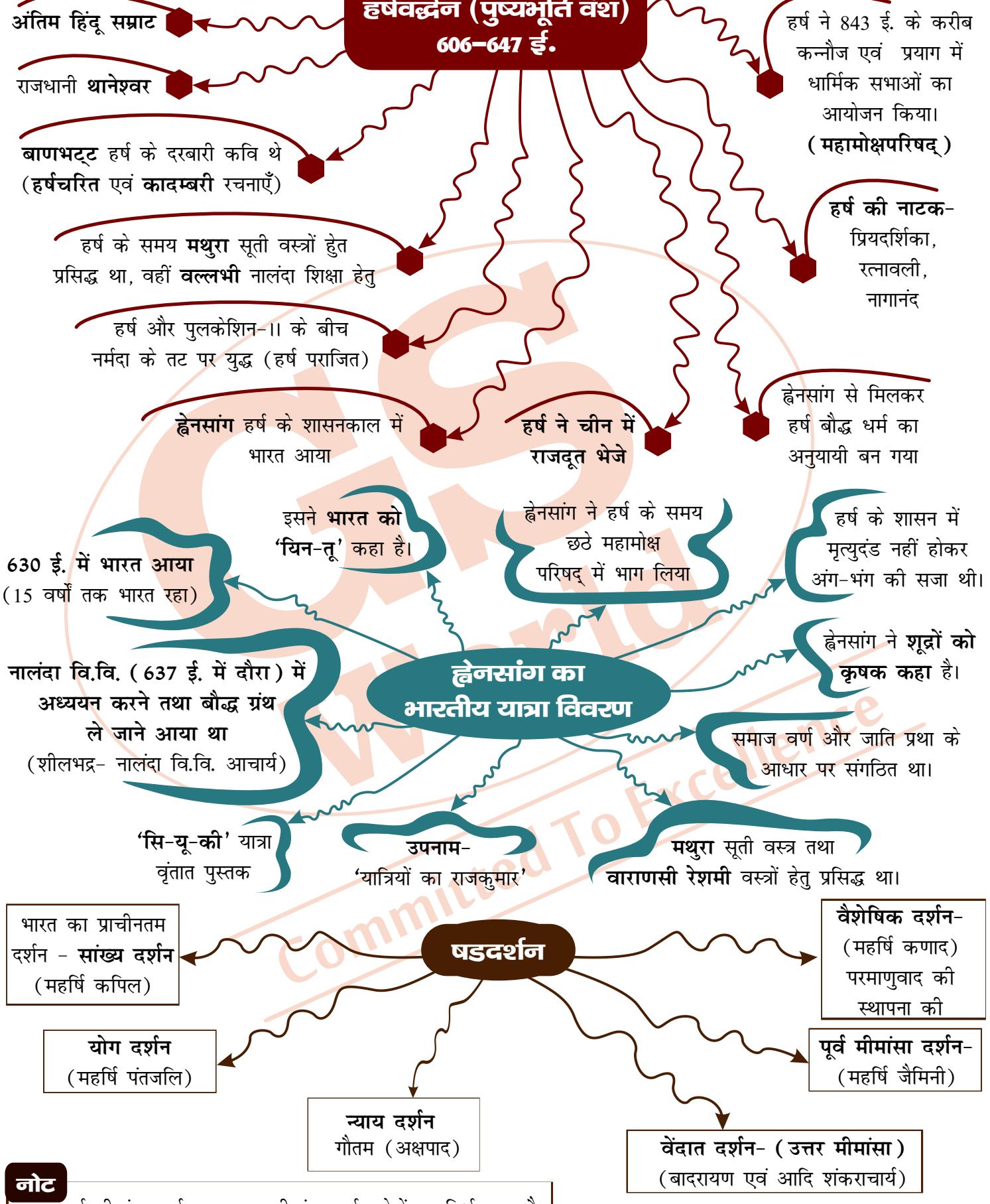
वराहमिहिर (ज्योतिष) ने
पंचसिद्धांतिका
लघु जातक आदि की रचना की।

ब्रह्मगुप्त ने गुरुत्वाकर्षण का
सिंद्धात दिया।

आर्यभट्ट गुप्तकाल में
प्रमुख गणितज्ञ

याज्ञवलक्य, नारद कात्यायन, वृहस्पति की
सृतियां गुप्तकाल में लिखी गई।

हर्षवर्घन (पुष्यभूति वंश) 606-647 ई.



नोट

पूर्व मीमांसा दर्शन व उत्तर मीमांसा दर्शन वेदों पर निर्भर रहा है।

- 'सोम महाविहार' का निर्माण (बांगलादेश)
- 'विक्रमशिला वि.वि.' की स्थापना
- इसने कन्नौज के शासक इन्द्रायुद्ध को हराकर चक्रायुध को कन्नौज की गढ़ी पर बिठाया
- 'उत्तरापथ स्वामी' उपाधि ली।
- 'त्रिपक्षीय युद्ध' (कन्नौज) से जुड़ा था।
- बौद्ध दर्शानिक 'हरिभ्र' इसके आध्यात्मिक उपदेशक थे।

संस्थापक-गोपाल, इसने ओंदतपुरी विश्वविद्यालय की स्थापना की।

धर्मपाल
770-815 ई.

- सुलेमान नामक अरब व्यापारी (9वीं सदी) ने पाल शासक को 'रूहमा' कहा है।
- पाल शासक महायान बौद्ध अनुयायी थे।

देवपाल

- मुंगेर राजधानी
- 'ओंदतपुरी बौद्धमठ' का निर्माण
- शैलेंद्रवंशीय शासक बालपत्रदेव को नालंदा में बिहार बनवाने की अनुमति
- वन्रदत्त (लोकेश्वर शतक) को संरक्षण दिया।

महीपाल-।

पालवंशा
(8-12वीं सदी तक)

- पाल वंश का दूसरा संस्थापक
- इसके काल में चौल शासक राजेन्द्र-। ने बंगाल पर आक्रमण कर इसे परास्त किया
- इसने तिब्बत में बौद्ध भिक्षु 'अतिस' को भेजा

रामपाल

अंतिम पालशासक

- लक्ष्मण सेन** - 1. दानसागर, अद्भुत सागर ग्रन्थों की स्थापना
2. दरबारी विद्वान्- जयदेव, धोमी, हलायुद्ध, सरना, उमापति, धौयी गोवर्धन

विजय सेन ने प्रद्युम्नश्वर मंदिर का निर्माण कराया था।

स्थापना- सामंत सेन

ঢাকাকেশ্বরী মন্দির (ঢাকা) সেন শাসকों দ্বারা নির্মিত হয়।

सेनवंश
11-12वीं सदी
(बंगाल में)

जयदेव 'राधा कृष्ण' पंथ के संस्थापक थे। (गीत गोविंद रचना)

राजधानी - नदिया (लखनऊ)

प्रमुख शासक - विजयसेन, बल्लाला सेन एवं लक्ष्मण सेन

हर्ष को 'कश्मीर का नीरो' कहा जाता है।
हर्ष प्रसिद्ध लोहार शासक था
कल्हण (राजतरिंगिणी) हर्ष का आश्रित कवि था।

संस्थापक

संस्थापक
संग्रामराज

संस्थापक - अवंतिवर्मन

स्थापक - दुर्लभवर्धन

उत्पाल वंश

कार्कोट वंश

लोहार वंश

प्रमुख शक्तिशाली राजा ललितादित्य ने 'मार्त्तण्ड मंदिर' का निर्माण कराया था।

नोट

जैनुल अबादीन (1420-70) को 'कश्मीर का अकबर' कहा जाता है।

(750-1000 ई. तक)
त्रिपक्षीय युद्ध (कन्नौज हेतु)
1. राष्ट्रकूट
2. पाल
3. गुर्जर प्रतिहार (विजेता)

नोट

- प्रतिहार का शाब्दिक अर्थ- द्वारपाल
- राजा भोज द्वारा 7वीं सदी में स्थापित ग्वालियर शिलालेख में प्रतिहारों के शुरुआती परिवार का वर्णन है।

स्थापना- 'हरिश्चन्द्र'
क्षेत्र- दक्षिण-पश्चिम राजस्थान

प्रमुख राजपूत
राजवंश

वास्तविक प्रथम शासक नागभट्ट-। (730-760 ई.)
- 'मलेच्छों का नाशक' उपाधि
- इसने अरबों से लोहा लिया

शुरुआत में थे चरवाहे व लड़ाके थे।

मिहिर भोज-। (836-885 ई.)

1. देवपाल और राष्ट्रकूट राजा ध्रुव ने इसे हराया था।
2. यह वैष्णव धर्मानुयायी था
3. 'आदिवराह' की उपाधि
4. राजाधानी कन्नौज
5. ग्वालियर प्रशस्ति में मिहिर भोज की उपलब्धियों का उल्लेख है।

गुर्जर प्रतिहार
वंश

प्रतिहारों के मंदिर निर्माण को सर्वाधिक विकास खजुराहो में हुआ जो अब यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज है।

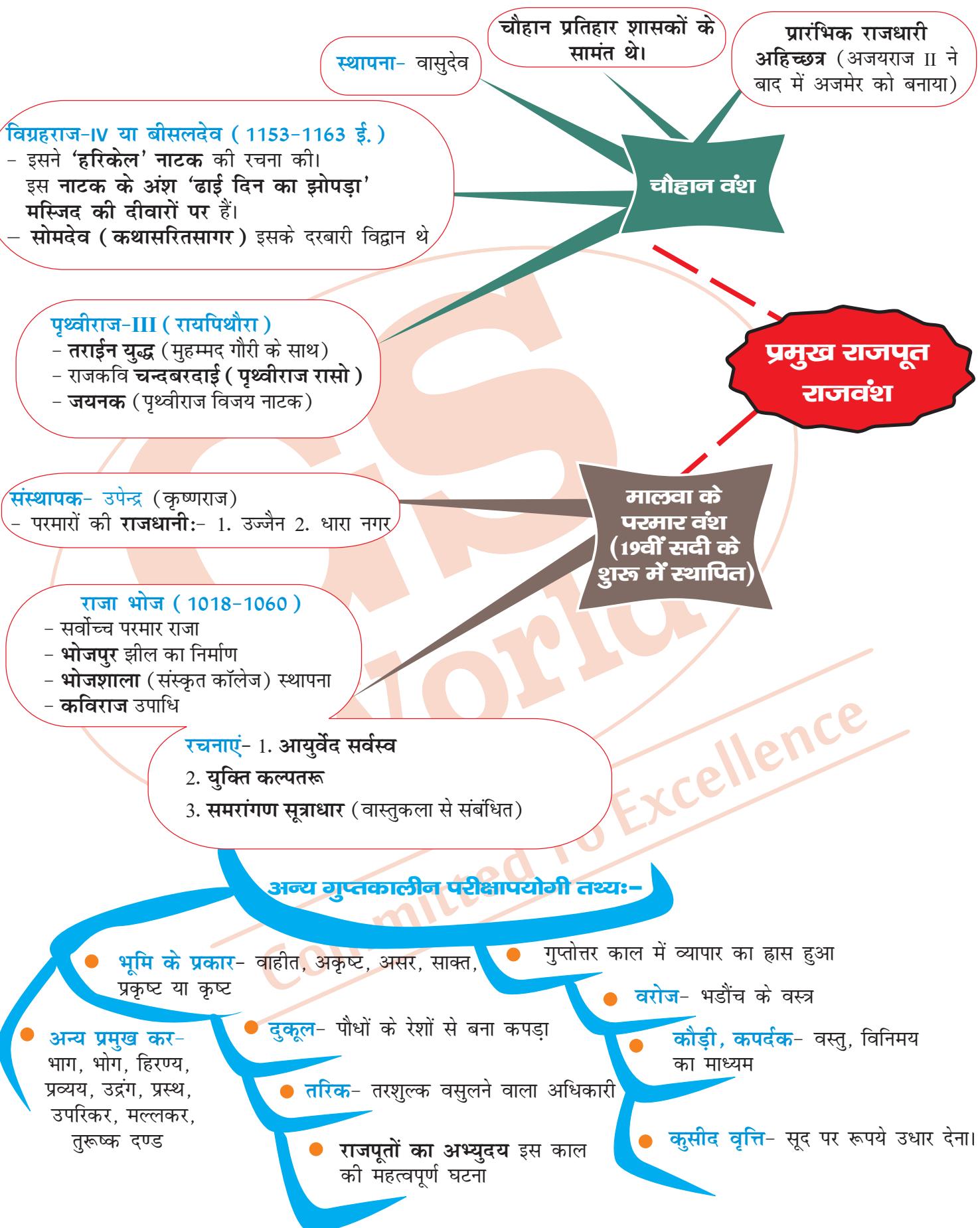
महीपाल-।

1. 'अल मसूदी' (बगदाद) इसके काल (915-16 ई.) में गुजरात आया
2. 'राजशेखर' इसके दरबारी विद्वान थे।

चालुक्य शासक पुलकेशिन-II के ऐहोल अभिलेख में सर्वप्रथम 'गुर्जर जाति' का उल्लेख है।

नोट

अल मसूदी का यात्रा विवरण मुरुज-उल-जहान के नाम से प्रसिद्ध है।



मंदिर स्थापना की शैलियाँ

- बेसर शैली - हिमालय से विंध्य क्षेत्र
- नागर शैली - विंध्याचल से कृष्णा तक
- द्रविड़ शैली - कृष्णा नदी से कन्याकुमारी तक

दक्षिण भारतीय राजवंश

संगम युग के साम्राज्य (3 ई.पू. - 3 ई.)

- चोल, चेर, पाण्ड्य

चोल राज्य (875-1175 ई.)

- संस्थापक - विजयालय (850-87) 'नरकेसरी उपाधि'
- कावेरी बेसिन के आस पास का क्षेत्र
- 'स्थानीय स्वशासन' प्रमुख विशेषता
- प्रतीक - टाइगर
- कास्य प्रतिमाएं सबसे उत्कृष्ट
- पंप, पोन्न, एन्न (कन्ड, त्रिरत्न)
- राजधानी - तंजौर या तंजावुर
- कवि - जयन्नोंदर, कंबन, पुगलेंदि औट्टकुट्टन (तमिल त्रिरत्न)
- बंगाल की खाड़ी को 'चोलों की झील' कहा जाता था।
- चोलों की नौसेना काफी उन्नत थी

संगम

संगम	अध्यक्ष	स्थल
प्रथम	अगस्त्य ऋषि	मदुरै
द्वितीय	तोलकाप्पियर	कापाटपुरम
तृतीय	नक्कीरर	उत्तरी मदुरै

प्रमुख राजा

परांतक-I 'मदुरकोंडा' की उपाधि, कृष्ण-III से तकोलम युद्ध में हारा

राजराज-I (1. श्रीलंका विजय 2. मुम्बिंचोलमंडल स्थापित 3. शैव 4. राजेश्वर मंदिर)

राजेंद्र-I (1. महिपाल को हराया 2. 'गंगैकोंडचोल' उपाधि 3. 'गंगैकोंडचोलपुरम' नगर स्थापित)

राजेंद्र-II 'प्रकेसरी' उपाधि

चोल प्रशासन

भूमि प्रकार - ब्रह्मदेय, शालाभोग, वेल्लनवगाई, देवदान, यतुर्वेदि मंगलम

मेरुमक्कल - अग्रहार, ब्राह्मण बस्तियों की सभा

नगरम - व्यापारी

कैलजु - सोने, सिक्के

प्रांत - मंडलम, कोट्टम, नाडु, कुर्म

बंदरगाह - पंपुहार, कावेरीपत्तनम

चोलकालीन मंदिर

1. चोलिश्वरा मंदिर - विजयालय

2. ब्रह्मपुरिश्वरा मंदिर

3. वृहदेश्वर मंदिर - 1011 ई. राजराज द्वारा निर्मित

4. ऐरातेश्वर मंदिर (राजेंद्र-II)

नोट: गंगईकोंड चोलपुरम नामक नगर राजेंद्र-I द्वारा निर्मित किया गया।

क्या आप जानते हैं ?

त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितार और श्यामा शास्त्री को कर्नाटक संगीत शैली की त्रिमूर्ति कहा जाता है।

चोल, चेर, काकतीय, पाण्ड्य, राष्ट्रकूट पल्लव, वकाटक, चालुक्य

राजराज-I ने 'मुमुदी चोलदेव' की उपाधि धारण की, जिसका अर्थ था 'वह स्वामी जो तीन मुकुट (चोल, चेरा और पाण्ड्य) का शृंगार करता है।'

चेर वंश

- **प्रमुख राजा**:- उदयन जेराल, नेदुनजेराल आदन, शेनगुट्टवन (लाल चेर)
- 'केरल पुत्र' कहे जाते हैं।
- क्षेत्र- आधुनिक कोंकण, मालावार तटीय क्षेत्र, उत्तरी त्रावणकोर, कोच्चि
- प्रतीक चिन्ह- धनुष

पाण्ड्य राज्य

- क्षेत्र-दक्षिणी तमिलनाडु (वर्तमान, तिरनेलबेली, रमनाड, मदुरै)
- स्त्रियों का शासन
- 'नेंडुजेलियन' प्रसिद्ध शासक
- मोतियों हेतु प्रसिद्ध
- राजधानी- मदुरई
- प्रतीक चिन्ह- मछली
- मेगास्थनीज इन्हें 'माबर' कहता है।
- बंदरगाह- कोकई (बंगाल की खाड़ी)
- पांड्य राजाओं ने साहित्य सम्मेलन 'संगम' का आयोजन किया था।

संगम साहित्य

- ये तमिल की प्राचीनतम रचनाएँ हैं।
- दो भागों में विभक्त (अगम, पुरम)
- प्रमुख रचनाएं- ऐतूतोगई, पत्तुपातु, पदितपत्तु, तोल्काप्पियम, शिलप्पादिकारम, मणिमेखलै, जीवका चिंतामणि, तिरुक्कुराल (पंचम वेद), अहनानरू, ऐंगरूनरू

अन्य प्रमुख संगमकालीन परीक्षापयोगी तथ्य

- प्रशासन- राजतंत्रात्मक एवं वंशानुगत थी।
- सभा- राजा का सर्वोच्च न्यायालय
- पेशेवर सैनिक (एनाडि-सेना प्रमुख)
- यद्ध में मारे सैनिकों की पाषाण मूर्तिया स्मारक के रूप में बनायी गई हैं।
- वेतर, बेलिर, वेल्लार - धनी किसान या शक्तिशाली लोग
- वेनिगर- व्यापारी (अवनम-बाजार)
- बंदरगाह- टिंडिस, मुजरिस, नेलसिंडा, नौरा, पुहार, शालियूर, कोर्कई, अरिकमेडु
- पाण्ड्य नरेश ने रोमन राजा ऑगस्टस का सहयोग प्राप्त करने हेतु दूत भेजे थे।
- राजस्व स्रोत- भूराजस्व (1/6 भाग)
- मा, बेलिफ- भूमि पैमाना
- अगस्तय ऋषि- वैदिक संस्कृति को दक्षिण भारत ले गए।
- मुरुगन- प्राचीन एवं प्राथमिक देवता
- मुख्य पेशा- कृषि

चालुक्य वंश (6-12वीं सदी)

- क्षेत्र - दक्षिण और मध्य भारत
- तीन अलग-अलग चालुक्य राजवंश थे।
 1. बादामी के चालुक्य- कर्नाटक में बादामी (वातापी) में राजधानी थी। प्रमुख शासक पुलकेशिन द्वितीय।
 2. पूर्वी चालुक्य- वेंगी में राजधानी। क्षेत्र - पूर्वी दक्कन।
 3. पश्चिमी चालुक्य- बादामी चालुक्यों के वंशज थे। दसवीं सदी के अंत में इनका उभार हुआ और कल्याणी से शासन किया।
- प्रमुख स्थापत्य- एहोल मंदिर, बादामी मंदिर, पट्टाडक्कल मंदिर।

**चोल, चेर, काकतीय,
पाण्ड्य, राष्ट्रकूट पल्लव,
वकाटक, चालुक्य**

काकतीय वंश

काकतीय वंश

- क्षेत्र - वारंगल, आंध्र प्रदेश, पूर्वी कर्नाटक, दक्षिणी ओडिशा
- मोतुपल्ली (बंदरगाह)
- राजधानी - ओरुगल्लु
- प्रोला - I ने काकतीय वंश को स्वतंत्र राजवंश बनाया
- प्रमुख शासक - रुद्राम्मा देवी, गणपति (सबसे महान काकतीय शासक)

वकाटक वंश

वकाटक वंश

(तीसरी सदी मध्य से ५वीं सदी तक)

वकाटक वंश के राजा ब्राह्मण थे

राजधानी - नगरधन

प्रमुख शासक -

1. विंध्यशक्ति (250-270 ई.)

2. रूद्रसेन-II

3. प्रवरसेन-II (सेतुबंध के रचनाकार)

4. सर्वसेना (हरिविजय के लेखक)

वकाटक गुप्तों के समकालीन थे

वकाटकों ने समकालीन राजवंशों से वैवाहिक संबंध बनाए (उदाहरण - गुप्तवंश की प्रभावती गुप्त के साथ रूद्रसेन-II ने शादी थी।)

क्षेत्र - मध्य दक्षिण

वकाटक शैव धर्म के अनुयायी थे।

वकाटक राजा 'हरिसेन' के संरक्षण में अंजता गुफाओं के चट्टानों को काटकर बौद्ध विहार, चैत्य बनाए गए - अंजता गुफा 16, 17, 19 वकाटक स्थापत्य उत्कृष्टता के उदाहरण हैं (खासकर महाभिनिष्क्रमण पेटिंग)

वैद्धरभारती - वकाटकों के समय विकसित संस्कृत की शैली थी।

पुराणों में 'वकाटकों' की चर्चा है।

अंजता शिलालेखों में विंध्यशक्ति को 'द्विज' के रूप में वर्णित तथा इसकी सैन्य उपलब्धियों की प्रशंसा हुई है।

प्रवरसेन ने 'सप्ताट, धर्ममहाराज, हरितिपुत्र' की उपाधियां धारण की

प्रवरसेन वकाटक शक्ति का वास्तविक संस्थापक था।

वकाटकों के समय हाथी देवता सामान्य रूप में पूजे जाते थे।

नोट

जुलाई 2021 में, रामप्पा मंदिर (1213 ई. में निर्मित) को यूनेस्को के 'विश्व धरोहर स्थल' (भारत का 39वां) में शामिल किया गया है।

- 'रामप्पा' नाम इस मंदिर के शिल्पकार रामप्पा के नाम पर रखा गया है।
- निर्माणकर्ता - काकतीय राजा गणपति देव के सेनापति रेचारला रूद्र द्वारा

**चोल, चेर, काकतीय,
पाण्ड्य, राष्ट्रकूट पल्लव,
वकाटक, चालुक्य**

दक्षिण भारतीय राजवंश

पल्लव वंश (4-9वीं ई.)

- संस्थापक- सिंहविष्णु (राजधानी- कांची), भारति इसके दरबारी कवि थे।
- पल्लव शासकों के समय चट्टानों को काटकर मन्दिर बने

महेंद्रवर्मन- I

- शैव अनुयायी, 'मजविलास प्रहसन' की रचना (उपाधि- मत्तविलास, विचित्रचित्त, गुणभर)

नरसिंहवर्मन- I

- 'वातापीकोड़' उपाधि
- महाबलीपुरम (मामल्लापुर) में एकाशम रथों का निर्माण, शोर मंदिर
- इसके समय 'हेवनसांग' कांची आया

नरसिंहवर्मन- II

- उपाधि- राजसिंह, आगमप्रिय, शंकरभक्त
- कैलाशमंदिर (कांचीपुरम) का निर्माण
- 'दण्डन' इसके दरबार में थे।

क्या आप जानते हैं ?

कैलाशनाथ मंदिर (एलोरा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र)

- ऐलिफेंटा नाम पुर्तगालियों ने दिया था।
- यह मंदिर भारत में चट्टानों को काटकर बनाए गए हिंदू मंदिरों में सबसे बड़ा है।
- निर्माण राष्ट्रकूट राजा, 'दंतिदुर्ग' (735-757 ईस्वी) के शासन के दौरान शुरू हुआ।
- मंदिर पर प्रमुख कार्य राजा दंतिदुर्ग के उत्तराधिकारी 'कृष्ण प्रथम' (757-773 ईस्वी) द्वारा किया गया था।
- यह मंदिर (गुफा 16) एलोरा की 34 गुफा मंदिरों और मठों में से एक है।

मंदिर में कई जटिल नक्काशीदार पैनल हैं, जो रामायण, महाभारत और कृष्ण के कारनामों के दृश्यों को दर्शाते हैं। मंदिर परिसर में पांच अलग-अलग मंदिर हैं; इनमें से तीन गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों को समर्पित हैं।

राष्ट्रकूट वंश (8वीं सदी के मध्य)

- संस्थापक- दंतिदुर्ग
- राजधानी- मान्यखेत
- राष्ट्रकूट चालुक्यों के अधीन थे
- प्रमुख शासक- कृष्ण-5, ध्रुव, गोविंद-1, कृष्ण
- ऐलोरा के कैलाश मंदिर का निर्माण (कृष्ण-1)
- इन्द्र III के समय 'अलमसूदी' (अरब) आया था।
- एलोरा, ऐलिफेंटा गुफाओं में कई निर्माण

अमोघवर्ष- I

- राजधानी- मान्यखेत
- प्रथम कन्ड काव्य रचना
- 'कविराज मार्ग' तथा 'प्रश्नोत्तरमालिका' की रचना कन्नड़ में की
- जैन धर्म का अनुयायी (जिनसेन के प्रभाव में)
- 'जिनसेन व महावीराचार्य' तथा 'स्वयं-भू' इसके संरक्षण में थे।
- इसके समय ब्रोच (Broach) प्रमुख बंदरगाह था।
- सुलेमान (अरब व्यापरी) ने अमोघवर्ष-I को विश्व के चार महानतम राजाओं में से एक कहा (तीन अन्य में बगदाद के खलीफा, कॉन्स्टेंटिनोपल के राजा और चीन के सम्राट थे)

योल, चेट, काकतीय, पाण्ड्य, राष्ट्रकूट पल्लव, वकाटक, चालुक्य



प्रमुख स्थनाएँ

स्थना

स्थनाकार

पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी	अज्ञात
हिस्टोरिका	हेरोडोटस
नेचुरल हिस्टोरिका	प्लिनी
ज्योग्राफी	टॉल्मी
ए रिकार्ड ऑफ द बुद्धिस्ट कंट्रीज (प्यो-क्यो की)	फाह्यान
एस्से ऑन वेस्टर्न वर्ल्ड (सी-यू-की)	ह्वेनसांग
ए रिकार्ड ऑफ द बुद्धिस्ट रिलीजन एज प्रैक्टिस्ड इन इंडिया एंड मलाया	इत्सिंग
कंग्यूर, तंग्यूर	तारानाथ
मुरुज-अल-जहाब	अलमसूदी
तहकीक-ए-हिन्द	अलबरूनी
अष्टाध्यायी	पाणिनी
रामायण	वाल्मीकि
महाभारत	वेदव्यास
अर्थशास्त्र	चाणक्य
इण्डिका	मेगास्थनीज
पंचतंत्र	विष्णु शर्मा
महाभाष्य	पतंजलि



प्रमुख स्थनाएँ

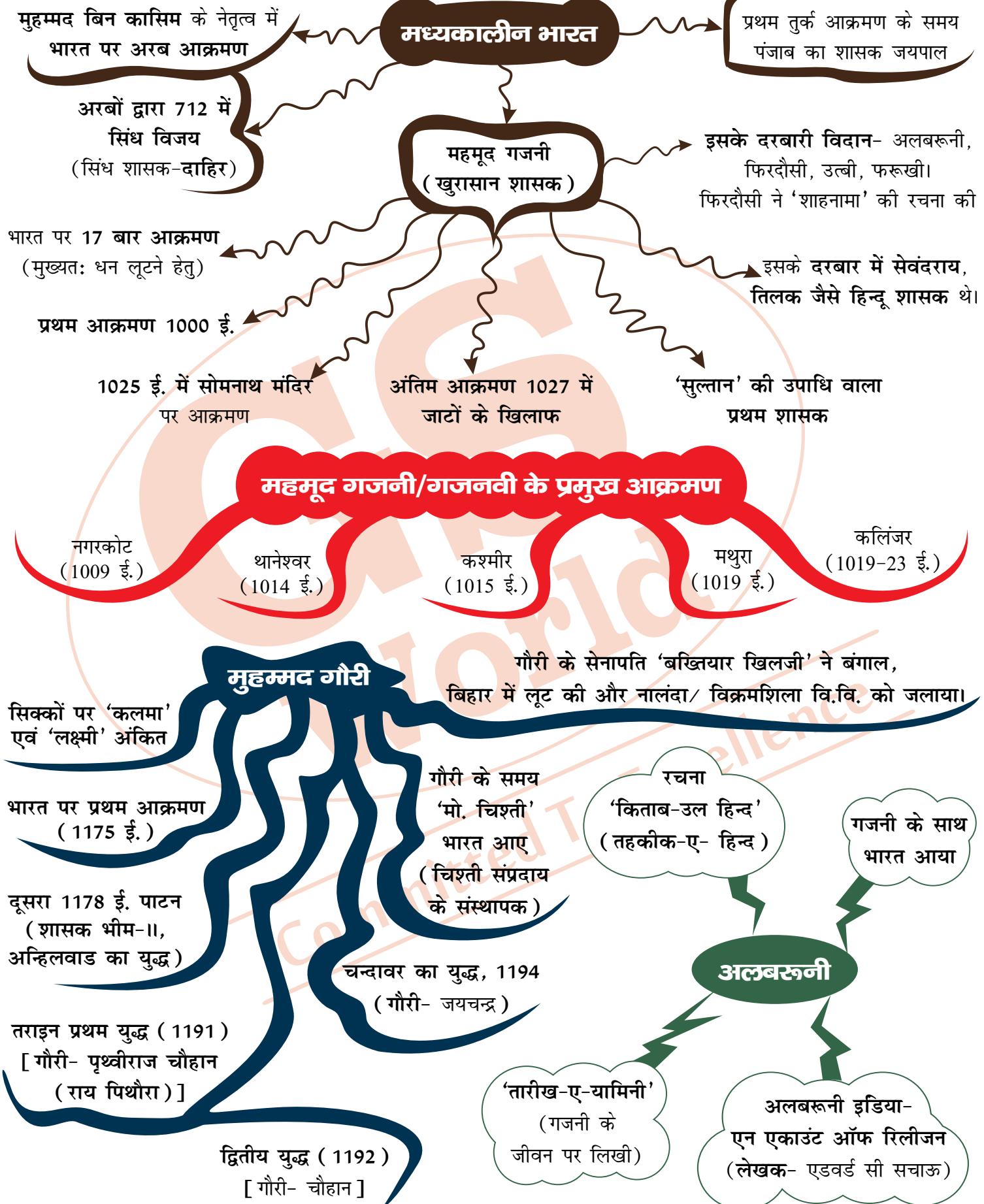
सत्सहसारिका सूत्र	नागार्जुन
बुद्ध चरित	अशवघोष
महाविभाषाशास्त्र	वसुमित्र
स्वजनवासवदत्ता	भास
कुमारसम्भवम्	कालिदास
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास
मेघदूतम्	कालिदास
रघुवंशम्	कालिदास
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास
नाट्यशास्त्र	भरतमुनि
देवीचन्द्रगुप्तम्	विशाखदत्त
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
मृच्छकटिकम्	शूद्रक
सूर्य सिद्धांत	आर्यभट्ट
वृहत्संहिता	वाराहमिहिर
कथासरित्सागर	सोमदेव
किरातार्जुनीयम्	भारवि
हर्षचरित	बाणभट्ट



प्रमुख स्थनाएँ

दशकुमारचरितम्	दण्डी
कादम्बरी	बाणभट्ट
वासवदत्ता	सुबन्धु
नागानन्द	हर्षवर्द्धन
रत्नाली	हर्षवर्द्धन
प्रियदर्शिका	हर्षवर्द्धन
पृथ्वीराज विजय	जयनक
कर्पूरमंजरी	राजशेखर
शब्दानुशासन	राजा भोज
बृहत्कथामंजरी	क्षेमेन्द्र
विक्रमांकदेवचरित	विल्हण
गीत गोविन्द	जयदेव
पृथ्वीराजरासो	चन्द्रबरदाई
राजतरंगिणी	कलहण
काव्यमीमांसा	राजशेखर

मध्यकालीन भारत



दिल्ली सल्तनत

गुलाम वंश, खिलजी वंश,
तुगलक वंश, तुर्क थे।

लोदी वंश
अफगान थे।

सैयद वंश अरब थे।

**गुलाम वंश
(मामलुक वंश)
(1206-90 ई.)**

प्रमुख शासक

संस्थापक-
कुतुबुद्दीन ऐबक

इल्तुतमिश

मुहुजुद्दीन बहरामशाह

जासिरुद्दीन महमूद

रजिया सुल्तान

मसूदशाह

बलबन

ऐबक का अर्थ-
'चंद्रमा का देवता'

राजधानी-
लाहौर

1206 में शासक

'लाखबख्श' उपाधि

'मलिक', 'सिपहसालार' की
पदवी धारण की।

इल्तुतमिश की
उत्तराधिकारी

अल्तुनिया से
शादी की

प्रथम मुस्लिम
महिला शासक

**रजिया सुल्तान
(1236-40)**

मलिक याकूत को
'अमीर-ए-अखूर' नियुक्त किया।

'नायब' या 'नायब-ए-ममालिकात' पद का सृजन

बहरामशाह

रजिया के खिलाफ विद्रोह में शामिल।

कुतुबुद्दीन ऐबक
1206-1210 ई

गौरी का गुलाम था

चौगान खेलते वक्त मृत्यु
(1210)

'हसम निजामी' को संरक्षण

गज़नी के महमूद से
दासमुक्ति पत्र प्राप्त किया

प्रमुख स्थापत्य- कुतुबमीनार की नींव, (कुतुब बखियार
काकी को समर्पित) कुवत-उल-इस्लाम मस्जिद, निर्माण,
ढाई दिन का झोपड़ा (मस्जिद)

'पाबोस', 'सिजदा',
का प्रचलन

'रक्त एवं लौह'
की नीति, अपनाई

वास्तविक नाम
'बहाउद्दीन'

बलबन

इल्तुतमिश
का दास

नासिरुद्दीन
महमूद ने
'उलूग खां' की
उपाधि दी।

इसने सुल्तान को
'ईश्वर की छाया'
माना

'दीवाने अर्ज'
(सैन्य विभाग)
की स्थापना

'चालीसा दल'
का दमन

इल्तुतमिशा (1210-36)

नाम का अर्थ-
‘साम्राज्य का रक्षक’

सुल्तान के पद को
वंशानुगत किया

दिल्ली सल्तनत का
वास्तविक संस्थापक

दिल्ली राजधानी थी

ऐबक की मृत्यु के समय
बदायूँ का सूबेदार

कुतुबुमीनार का
निर्माण पूरा

शुद्ध अरबी सिक्के
(चांदी का ‘टंका’, तांबे का ‘जितल’)

‘इक्ता’ प्रणाली
की शुरूआत

‘तुर्क-ए-चहलगानी’
का गठन

दिल्ली के अमीरों का
दमन किया

बदायूँ में ‘होजशम्सी’,
जोधपुर में ‘अंतरिक्कन का
दरवाजा’ का निर्माण

सुल्तानगढ़ी का
मकबरा

‘भारत में प्रथम मकबरा’
बनाने का श्रेय

खिलजी वंश (1290-1320 ई.)

जलालुद्दीन फिरोज खिलजी

खिलजी वंश
का संस्थापक

- राजधानी-किलोखरी
- कूलागढ़ में राज्याभिषेक

‘आरिज-ए-मुमालिक’
(सेना मंत्री) का पद

कैकुवाद द्वारा
‘शाइस्ताखाँ’ की उपाधि

रीद-ए-मुमालिक-
गुप्तचर विभाग

वरीद-
संदेशवाहक

मुनहियान-
सूचनादाता

कोतवाल-
किलों की देखभाल

मुर्त्तब-
निरीक्षक

बलबन के लालमहल में

राज्याभिषेक

अलाउद्दीन खिलजी

'सिंकंदर' की उपाधि

बचपन का नाम
'गुरुशास्प'

इसके काल में मंगोलों के
कई आक्रमण हुए

1296 में 'देवगिरी' पर
आक्रमण कर
'रामचन्द्रदेव' को हराया

अमीर खुसरो द्वारा
इसे दी गई उपाधियाँ-
1. विश्व सुल्तान,
2. युग का विजेता,
3. जनता का चरवाहा

'चराई कर', 'गढ़ी कर' लगाया

सेना का 'केन्द्रीकरण' किया

'दीवान-ए-रियासत'
(आर्थिक मामले) की स्थापना

'राशनिंग प्रणाली' की शुरूआत

खुसरों शाह प्रथम
भारतीय मुसलमान था
जो दिल्ली का शासक बना।

अलाउद्दीन के
चार अध्यादेश

1. अमीरों के मेल-
मिलाप तथा
उत्सवों पर रोक

2. गुप्तचर
प्रणाली का
गठन

4. मद्य-
निषेध

3. खालसा
भूमि द्वारा
राजस्व
वृद्धि

प्रशासनिक कार्य

सेना को नकद वेतन,
स्थायी सेना की शुरूआत
घोड़ा दागने,
सैनिकों का हुलिया
लिखने की प्रथा

भूराजस्व बढ़ाकर 1/2 कर दिया

'मूल्य नियंत्रण प्रणाली' को लागू किया

मलिक काफूर को दक्षिण भारत भेजा

जमैयत खाना मस्जिद, अलाई दरवाजा (इस्लामी वास्तु कला का रूप),
सीरी का किला, हजार खम्भा महल का निर्माण

नए पद जैसे- 'दीवान-ए-रियासत', 'शहना-ए-मंडी', 'बरीद'
'मुनहियान' सृजित किए।

चित्तौड़ का नाम 'खिज्जाबाद' किया यहां का (राजा-रत्नसिंह) था।

कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी

'स्वयं को खलीफा
घोषित करने वाला
प्रथम सुल्तान।'

नोट:-



9654349902

अलाउद्दीन खिलजी का विजय अभियान

राज्य

उत्तर भारत में

गुजरात

शासक

रायकरन वघेला (कर्ण)

वर्ष

1299 ई.

खिलजी सरदार

उलूग खाँ और नुसरत खाँ

रणथम्भौर

राणा हम्मीर देव (चौहान शासक)

1301 ई.

उलूग खाँ और नुसरत खाँ

चित्तौड़

रतन सिंह

1303 ई.

अलाउद्दीन खिलजी

मालवा

महलकदेव

1305 ई.

आइनुलमूलक मुल्तानी

सिवाना

शीतलदेव (परमार वंशीय)

1308 ई.

कमालुद्दीन कुर्ग

जालौर

कान्हदेव या (कृष्णदेव)

1311 ई.

कमालुद्दीन कुर्ग

दक्षिण भारत में

देवगिरि

रामचन्द्र देव (यादव शासक)

1296 ई.

अलाउद्दीन खिलजी

देवगिरि

रामचन्द्र देव

1307 ई.

मलिक काफूर

वारंगल

प्रताप रूद्र देव (काकतीय शासक)

1309 ई.

मलिक काफूर

द्वारसमुद्र

बीर बल्लाल-III (होयसल वंश)

1310 ई.

मलिक काफूर

देवगिरि

शंकरदेव (सिंधण II)

1313 ई.

मलिक काफूर

दिल्ली सल्तनत में तुगलक शासकों ने सर्वाधिक समय तक शासन किया

रयासुद्दीन तुगलक (1320-25)

प्रमुख कार्य

- अन्य नाम- 'गाजी तुगलक' या 'गाजी मलिक'
- यह खुसरोशाह को हराकर 8 सिंतबर, 1320 को 'ग्यासुदीन तुगलकशाह' के नाम से गद्दी पर बैठा।
- 'तुगलकाबाद' शहर की नीवं रखी यहाँ स्थित दुर्ग को 'छप्पनकोट' कहते हैं।
- ग्यासुदीन तुगलक को निजामुद्दीन औलिया ने कहा था- 'हनूज दिल्ली दूर अस्त'
- 1325 में लकड़ी के भवन में दबकर मौत

लगान व्यवस्था को पुर्णव्यवस्थित किया।

लगान हेतु बटाई का प्रयोग पुनः प्रारंभ

ऋणों की वसूली बंद (भू-राजस्व 1/3)

'नहर सिंचाई पद्धति' शुरू करने वाला प्रथम शासक, कुओं का निर्माण कराया।

इसने अलाउद्दीन खिलजी की भूमि लगान, बाजार व्यवस्था का त्याग किया।

इसके समय कई दक्षिणी राज्यों (प्रथम- वारंगल) को दिल्ली सल्तनत में मिलाया गया।

अन्य नाम 'जौना खाँ' (उलूग खाँ)

'प्रिंस ऑफ मनीअर्स' कहलाया

इसने वारंगल के काकतीय एवं मदुरई के पाण्ड्य राज्यों को पराजित कर दिल्ली सल्तनत में शामिल किया।

'सर्वाधिक विद्वान सुल्तान'

इसे 'स्वर्णशील', 'पागल' एवं 'रक्तपिपासु' भी कहते हैं।

राजधानी 'दिल्ली' से 'देवगिरि' 1327 ई. में स्थानांतरित (नाम-दैलताबाद)

कांसा एवं तांबे के सिक्के चलाए

इब्नबतूता (मोरक्को, 1333 में भारत आया) को

'दिल्ली का काजी' बनाया तथा चीन राजदूत के तौर पर भेजा।

मोहम्मद बिन तुगलक (1325-51 ई.)

विवादित कदम

1. 1325 में दोआब में कर वृद्धि (कुल उपज का 50%)
2. 1327 राजधानी स्थानांतरण
3. 'सांकेतिक मुद्रा' का प्रचलन
4. खुरासान अभियान
5. कराचिल का सैनिक अभियान

'रेहला' (इब्नबतूता) में 'मु० तुगलक' के कार्यों का विवरण

इसके समय 'विजयनगर' (1336 ई.), बहमनी (1347) राज्य की स्थापना हुई।

'दीवान-ए-कोही' (कृषि विभाग) स्थापित।

'अकाल संहिता' का निर्माण

'तकावी कृषि' ऋण दिए

जैन विद्वान 'जिन प्रभुसूरि' तथा 'राजशेखर' से विचार-विमर्श किया।

नोट:-

बदायूनी मो. बिन. तुगलक इसकी मृत्यु पर कहता है- ‘सुल्तान को उसकी प्रजा से और प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिल गयी’।

दो बार राज्याभिषेक ‘थट्टा में’ 20 मार्च, 1351 को

पुनः ‘दिल्ली में’ अगस्त, 1351 को

‘कल्याणकारी निरंकुश शासक’ कहा जाता है।

अपने को ‘खलीफा’ कहा, सिक्कों पर ‘खलीफा का नाम’ अंकित किया

हेनरी इलियट, एलिफिंस्टन इसे ‘सल्तनत युग का अकबर’ कहते हैं।

इसके चलाए गए सिक्के-

1. शासगनी (चांदी)
2. अद्वा (मिश्रित धातु)
3. विख (मिश्रित धातु)

5 बड़े शहरों का निर्माण

(हिसार, फिरोजाबाद, फतेहबाद, जौनपुर, फिरोजपुर)

करीब 300 नगर निर्माण किए।

इसने ‘जियाउद्दीन बरनी’, ‘शम्स-ए-शिराज़’, ‘अफीक’ को शाही संरक्षण दिया

स्थापत्य निर्माण-

1. ‘कोटला फिरोजशाह दुर्ग’ का निर्माण
2. ‘खान-ए- जहाँ तेलंगानी’ का निर्माण

इसके समय चीन, ईरान, इराक, ख्वारिज्म आदि देशों में राजदूतों को भेजा गया।

इसने ‘तकावी ऋण’ माफ कर दिए, दंड संहिता को सुधारा तथा ‘सुल्तान को भेट देने की प्रथा’ समाप्त की

‘कर प्रणाली को मजहबी स्वरूप’ देते हुए 24 करों को समाप्त कर सिर्फ खुम्स (युद्ध लूट का माल), खराज (लगान), जजिया (धार्मिक), जकात लागू किया

आंतिम तुगलक शासक-नासिरुद्दीन महमूद तुगलक (इसके समय 1398 ई. में तैमूर लंग का आक्रमण हुआ।)

अन्य तथ्य

नासिरुद्दीन के समय ही ‘मलिक सरवर’ ने ‘जौनपुर’ में ‘स्वतंत्र राज्य’ स्थापित किया।

फिरोजशाह तुगलक

इसकी ‘तुष्टीकरण की नीति’ सम्प्राच्य विघटन हेतु जिम्मेदार थी।

‘ताश घडियाल संयंत्र’ (समय जानने हेतु) का निर्माण

इसने ‘ज्वालामुखी मंदिर’ पुस्तकालय के लुटे ग्रंथों में से कुछ का फारसी में ‘दलायते-फिरोजशाही’ नाम से अनुवाद कराया, वहीं आत्मकथा ‘फतूहात-ए-फिरोजशाही’ की रचना की।

दारूल शफा (खैराती अस्पताल)

‘रोजगार दफ्तर’ का निर्माण, ‘दीवान-ए-खैरात’ विभाग, ‘दीवान-ए-बंदगाँ’ (दास विभाग) का निर्माण

अशोक के दो स्तंभों को खिज्जाबाद और मेरठ से दिल्ली लाया

आर.सी. मजूमदार- “फिरोजशाह इस युग का सबसे धर्माध शासक था। संभवतः प्रथम सुल्तान था जिसने इस्लामी नियमों का कड़ाई से पालन करके उलेमा वर्ग को प्रशासकीय कार्यों में महत्व दिया।”

‘सरकारी पदों को वंशानुगत किया’, ‘सैनिकों को वेतन के बदले जागीर’ देने की प्रथा पुनः शुरू की।

‘फलों के बाग’ लगाए

‘हाब-ए-शर्ब’ (सिंचाई कर) लगाया जो उपज का 10% था।

संस्थापक- खिज्र खाँ

सैयद वंश (1414-15)

सल्तनत कालीन राजवंशों में सबसे
कम समय तक (37 साल)

जानकारी का स्रोत- याहिया बिन अहमद सरहिन्दी की 'तारीख-ए-मुबारकशाही'

मंगोलों का खुतबा पढ़वाया

यह 'तैमूरलंग का सेनापति' था।

खिज्र खाँ

'सुल्तान' के बजाय 'रैयत-ए-आला'
की उपाधि की

'मुबारकबाद'
की स्थापना

संप्रभु शासक के बजाय 'तैमूर के पुत्र शाहरुख के
प्रतिनिधि के तौर पर शासन'

'सैयद वंश का
योग्यतम शासक'

याहिया बिन सरहिन्दी
इसके संरक्षण में थे।

मुबारक शाह

अपने नाम का
खुतबा पढ़वाया
तथा सिक्के चलाए

अलाउद्दीन आलमशाह

अंतिम
सैयद शासक

'बहलोल शाह गाजी'

के नाम से गद्दी पर बैठा

संस्थापक-
बदलोल लोदी

दिल्ली पर स्थापित प्रथम अफगान राज्य

लोदी वंश (1451-1526 ई.)

लोदी वंश
का
अंतिम
शासक

'पानीपत का प्रथम युद्ध'
(1526)
बाबर के साथ

बहलोल लोदी

'बहलोली सिक्का'

चलाया

'राय प्रताप',
'राय दाटू'

जैसे हिन्दू सरदार
इसके दरबार में
महत्वपूर्ण पदों पर थे।

इसने जौनपुर के हुसैन
शाहशक्ती को हराया

भूमि पर गड़े धन में कोई हिस्सा नहीं लिया।

'लज्जत-ए-सिकंदरशाही' की रचना
(भारतीय संगीत पर पहला फारसी ग्रंथ) हुई

आगरा
शहर की
स्थापना की

सिंकंदर लोदी

'बदलगढ़ का
किला' बनाया

अन्य नाम-
निजामशाह

'फरहंगे सिंकंदरी'
नामक
आयुर्वेदिक ग्रंथ

इब्राहिम लोदी

'लेखा परीक्षण'
प्रणाली शुरू

'घटोली' या
'खातोली का युद्ध' (1518)
इब्राहिम लोदी और
राणा संग के बीच

अफगानों के 'समानता के व्यवहार' के
बदले सुल्तान को सर्वोच्च मानने पर बल

1506 में 'आगरा को राजधानी' बनाया

'गज-ए-सिंकंदरी'
शुरू (30 इंच)

खाद्यान्न करों
की समाप्ति

मुहर्रम ताजिए पर बैन,
हिन्दूओं पर पुनःजजिया कर लगाया

सल्तनत काल के प्रमुख अधिकारी तथा उनके कार्य

अधिकारी का नाम

कार्य

आरिज-ए-मुमालिक

सैन्य विभाग (दीवान-ए-अर्ज) का प्रधान। कार्य- सैनिकों की भर्ती

इंशा-ए-मुमालिक

पत्राचार विभाग का प्रधान

रसालत-ए-मुमालिक

विदेश विभाग का प्रधान

अमीर-ए-हाजिब (बारबक्त)

दरबारी शिष्टाचार के नियमों को लागू करता था।

अमीर-ए-बहर

आंतरिक शिष्टाचार के नियमों को लागू करना।

मुस्तौफी-ए-मुमालिक

महालेखाकार (एकाउण्टेण्ट जनरल)

दीवान-ए-रियासत

बाजार पर नियंत्रण रखना।

मजमुआदार

राजस्व संबंधी आय-व्यय को ठीक करना

मुहत्सिब

लोगों के आचरण पर नजर रखना।

मतशारिफ

शाही कारखाने की देखभाल

बरीद-ए-मुमालिक

सूचनादाता एवं गुप्तचर विभाग का प्रमुख।

सद्र-उस-सुदूर

धर्म संबंधी कार्यों का प्रमुख।

खाजिन

राजकीय आय का संग्रहकर्ता

काजी-उल-कुजात

न्याय विभाग का प्रमुख

मुफ्ती

धर्म की व्याख्या करना

अमीर-ए-दाद

बड़े नगरों का मजिस्ट्रेट

कोतवाल

शहरों में शांति व्यवस्था के लिए उत्तरदायी

सल्तनत काल के प्रमुख विभाग

नाम

विभाग

दीवान-ए-विजारत (वित्त संबंधी)

वजीर का विभाग

दीवान-ए-आरिज

सैन्य विभाग

दीवान-ए-रिसालत

विदेश विभाग

दीवान-ए-इंशा या दीवान-ए-अशरफ

पत्राचार विभाग

दीवान-ए-अमीरकोही

कृषि विभाग (मोहम्मद बिन तुगलक)

दीवान-ए-मुस्तखराज

राजस्व विभाग (अलाउद्दीन खिलजी)

दीवान-ए-खैरात

दान विभाग (फिरोजशाह तुगलक)

दीवान-ए-इस्तिहाक

पेंशन विभाग (फिरोज तुगलक)

दीवान-ए-बन्दगान

दास विभाग (फिरोज तुगलक)

दीवान-ए-वकूफ

व्यय विभाग (जलालुद्दीन खिलजी)

दीवान-ए-कजा मुमालिक

न्याय विभाग

नाइब-ए-मामलिकात (The regent)

वास्तविक शासक (de-facto ruler)

सल्तनत काल के प्रमुख विभाग

सरखेल

दस घुड़सवारों की टुकड़ी का प्रधान

सिपहसालार

दस सरखेल (100 घुड़सवार)

अमीर

दस सिपहसालार (1000 घुड़सवार)

मलिक

दस अमीर (10000 घुड़सवार)

खान

दस मलिक (100000 घुड़सवार)

सुल्तान

दसखान (सर्वोच्च सेनापति)

सल्तनतकाल के प्रमुख साहित्यकार एवं उनकी स्वनामें

साहित्यकार

रचना/रचनाएँ

मिनहाजुद्दीन सिराज

तबकात-ए-नासिरी

जियाउद्दीन बरनी

तारीख-ए-फिरोजशाही, फतवा-ए-जहाँदारी, कुव्वत-उल- तवारीख,
सना-ए-मोहम्मदी, हसरतनामा

शम्स-ए-सिराज

तारीख-ए-फिरोजशाही

याह्या बिन अहमद सरहिन्दी

तारीख-ए-मुबारकशाही

जमालुद्दीन

सियर-उल-आरफीन, मेहरूमाह

'अबुल फजल' मोहम्मद बिन हुसैन-अल-बैकाकी

तारीख-ए-मसूदी

फिरोज तुगलक

फतूहात-ए-फिरोजशाही

अज्ञात लेखक

सीरात-ए- फिरोजशाही

अमीर खुसरो

तुगलकनामा, आइन-ए- सिकन्दरी, लैला-मजनू, शीरी,-फरहाद,
नूह-सिपेहर, तारीख-ए-दिल्ली, मिफताह-उल-फतह

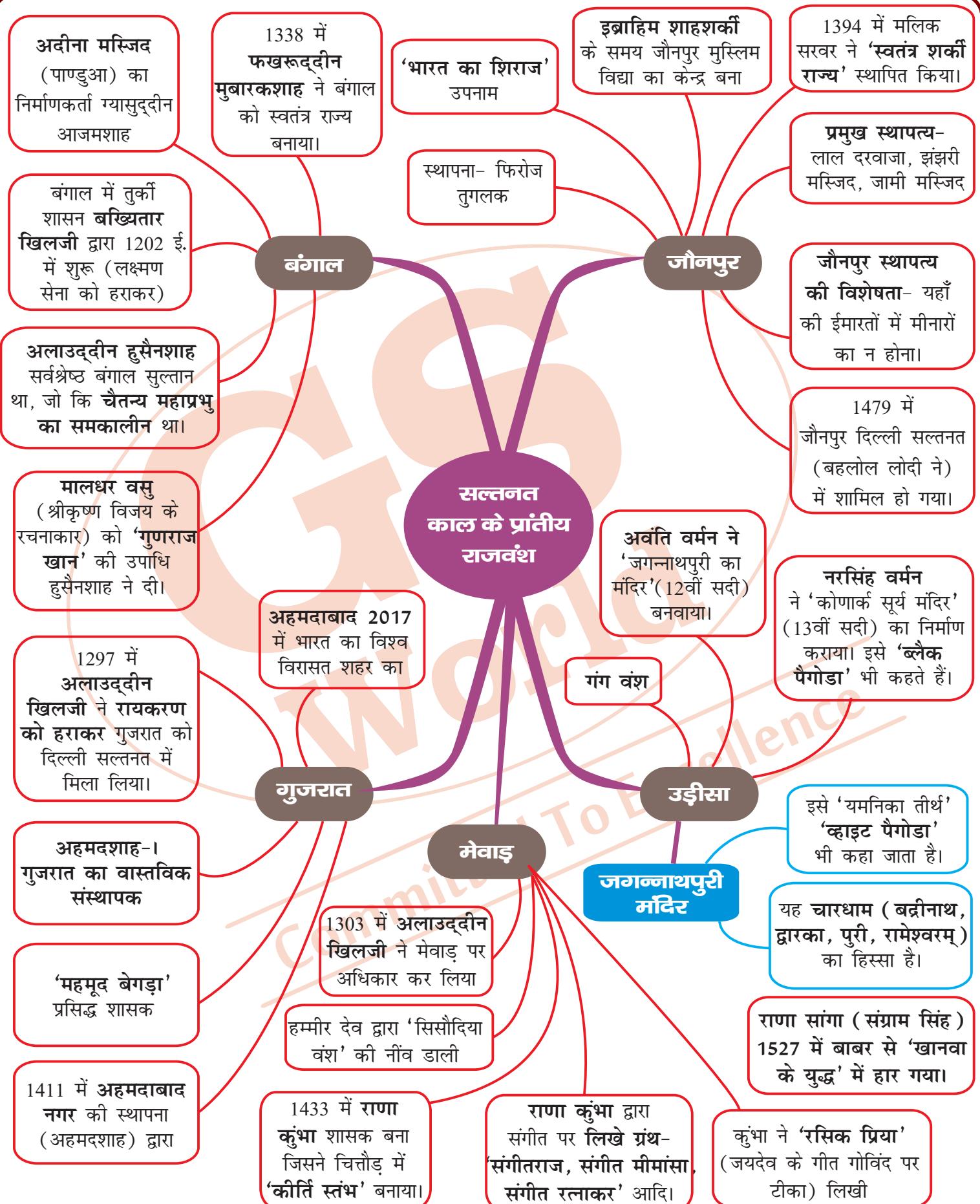
इब्नबतूता

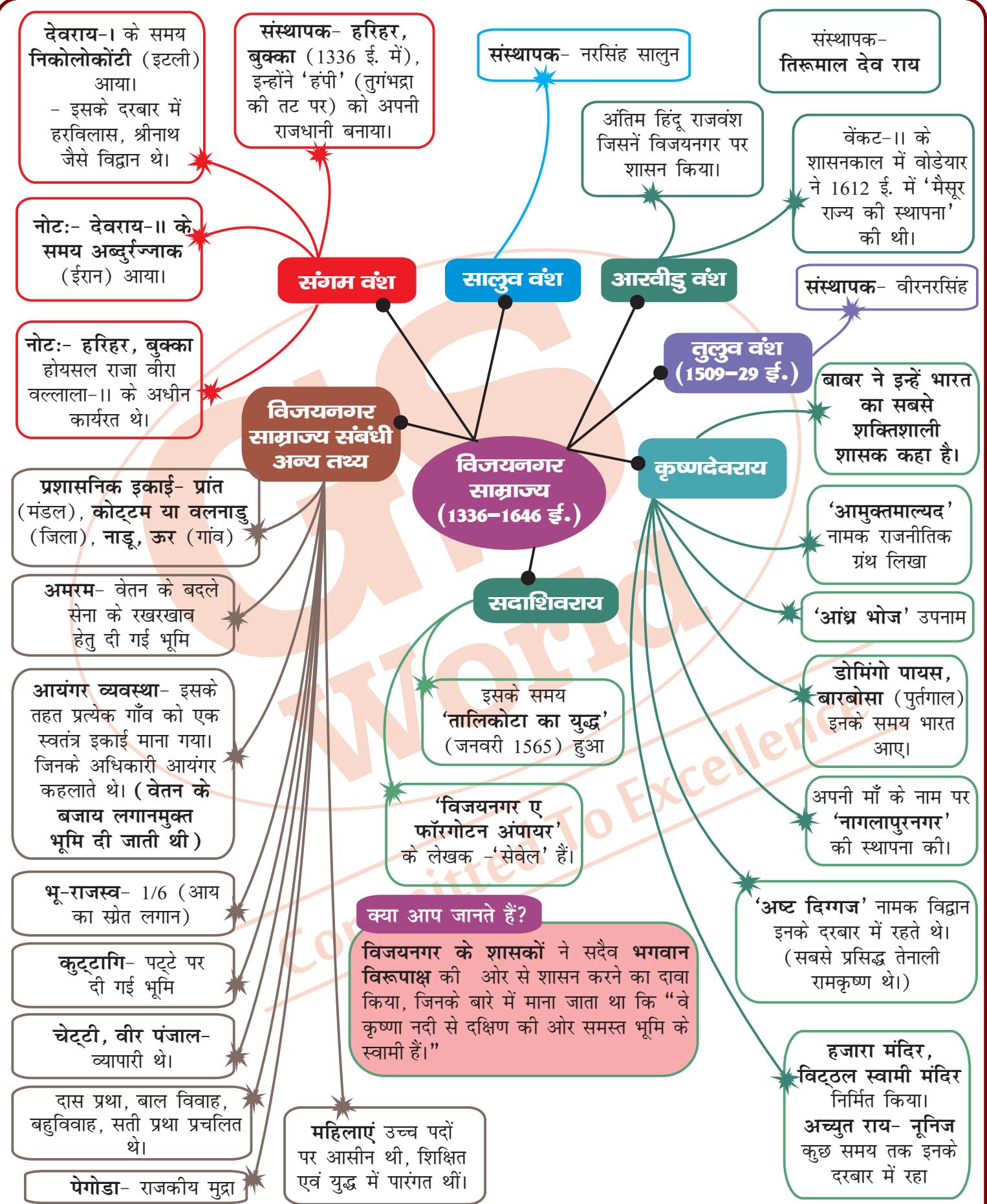
किताब-उल-रेहला

फिरदौसी

शाहनामा

सल्तनत काल के प्रांतीय राजवंश





बहुमनी राज्य

राजधानी-गुलबर्गा
(राजभाषा-मराठी)

1347 में
'हसनगंगू' द्वारा
स्थापना

ताजुद्दीन फिरोज ने
दौलताबाद के पास
बेधशाला बनवाई थी।

महमूद गवाँ ने
बीदर में मदरसा बनाया था,
जिसमें एक हजार छात्र
एवं शिक्षक रह
सकते थे।

निकितन (रूस)
1470 में बीदर आया
(शासक मुहम्मद-III)

बा-शरा
(इस्लाम सिद्धांत समर्थक)

फारसी देशों
में सर्वप्रथम सूफी
आंदोलन शुरू
हुआ था।

बे-शरा
(इस्लामी सिद्धांत में नहीं बंधे)

खानकाह
या मठ
(निवास)

12 सूफी
सिलसिले जिसमें
चिश्ती और सुहरावर्दी
(बा-शरा) थे।

सूफी धर्म

राज्य	वंश	संस्थापक	स्थापना
बीजापुर	आदिलशाही	युसूफ आदिलशाह	1489 ई.
अहमदनगर	निजामशाही	मलिक अहमद	1490 ई.
बरार	इमादशाही	फतेहउल्लाह इमादशाह	1490 ई.
गोलकुंडा	कुतुबशाही	कुली कुतुबशाह	1512 ई.
बीदर	बरीदशाही	अमीर अली बरीद	1526 ई.

शुरूआत दक्षिण
भारत (तमिल क्षेत्र)

अलवार (वैष्णव)
तथा नयनार (शैव)
संतों द्वारा विकास

भक्ति आन्दोलन

भक्ति आंदोलन
को दक्षिण से उत्तर
भारत रामानंद लाए

धार्मिक सरलता,
एकेश्वरवाद
पर बल

सगुण भक्ति

संत- तुलसीदास,
नामादास (दोनों रामभक्त)
निम्बार्क, चैतन्य, सूरदास,
मीराबाई, वल्लभाचार्य
(कृष्णभक्त)

निर्गुण भक्ति

- अण्डाल, महिला अलवार संत थीं।
- नयनार संत- मणिवायशर, तिरुनाकुकरशु, तिरुज्ञान संबंदर, आदि।

- मुहुमुद्दीन चिश्ती (1192 ई. में भारत आए) द्वारा 'भारत में चिश्ती सिलसिला की शुरूआत'
- प्रसिद्ध चिश्ती संत- निजामुद्दीन औलिया, बाबा फरीद, बिजित्यार काफी, शेख बुरहानुद्दीन गरीब।
- सुहरावर्दी सिलसिला की शुरूआत शेख शिहाबुद्दीन उमर सुहरावर्दी ने की, वहाँ शेख जकारिया ने इसका सुदृढ़ संचालन किया।
 - प्रमुख सुहरावर्दी संत- बुरहान, जलालुद्दीन तबरीजी, सैयद सुर्ख जोश।
- सत्तारी सिलसिला की स्थापना शेख अब्दुल सत्तारी ने की।
- कादरी सिलसिला- सैयद अब्दुल कादर (नादाद), भारत में मुहम्मद गौस द्वारा प्रसार।
 - मुगलशासक राजकुमार दारा कादरी सिलसिला के मुल्लाशाह का शिष्य था।
- नक्शबंदी सिलसिला- ख्वाजा उबेदुल्ला (भारत में इसका प्रसार शेख अहमद 'सरहिन्दी' जो अकबर के समकालीन थे, ने किया।)
- फिरदौसी सिलसिला (शेख शरीफउद्दीन याह्या) पटना में प्रसिद्ध हुआ।



ये श्री कृष्ण भक्त
अनुयायी थे। (हरे राम,
हरे कृष्ण' मंत्र तथा राधा-कृष्ण
की पूजा को लोकप्रिय बनाया)

इन्होंने भक्ति
में 'कीर्तन' की
शुरूआत की

अन्य नाम
'गौरांग',
'विश्वंभर'

बंगाल, उड़ीसा
में वैष्णववाद को
बढ़ावा दिया

चैतन्य स्वामी
(चैतन्य महाप्रभु)
(15वीं सदी)

क्षेत्र- असम

इनका संदेश
विष्णु या कृष्ण की
भक्ति पर केन्द्रित (लेकिन
कृष्णमूर्ति पूजा का
विरोध किया)

'भओना' की
शुरूआत

**भक्ति
आनंदोलन**

शंकरदेव

'सत्रीय' शास्त्रीय
नृत्य की शुरूआत।

भओना का
कथ्य पौराणिक
कथाओं पर
आधारित

प्रमुख संत
ज्ञानदेव, नामदेव
और तुकाराम

वरकरी संप्रदाय
(विट्ठल)

क्षेत्र
महाराष्ट्र

मुख्य देवता
बिठोवा
(कृष्ण के अवतार)

इसे 'पंढरपुर
आनंदोलन'
भी कहते हैं

मराठा शासक
शिवाजी के गुरु

रामदास

परमाथ संप्रदाय

'दासबोध' पुस्तक
लिखी

दक्षिण भारत में वैष्णवमत		
रामानुजाचार्य	विशिष्टाद्वैतवाद	श्री संप्रदाय
माधवाचार्य	द्वैतवाद	ब्रह्म संप्रदाय
विष्णुस्वामी	शुद्धद्वैतवाद	रुद्र संप्रदाय
निम्बार्काचार्य	द्वैताद्वैतवाद	सनकादि संप्रदाय

अन्य प्रमुख संत एवं संप्रदाय	
चंडीदास	- बाउल संप्रदाय
जयनाल	- बिश्नुई संप्रदाय
पुरंदरदास	- दासकूट संप्रदाय
दादू दयाल	- निपख संप्रदाय
रामानंद	- रामावत संप्रदाय
जगजीवन साहब	- सतनामी संप्रदाय

सिक्ख धर्म

गुरुनानक देव

सिक्ख धर्म के संस्थापक

सिंकदर लोदी के समय सिक्ख धर्म की स्थापना

'गुरु का लंगर' की शुरूआत

1469 में तलबंडी (ननकाना साहिब) में जन्म

ये बाबर, हुमायूं के समकालीन थे।

'उदासी' नामक धर्म प्रचारक यात्रा का प्रारंभ

एकेश्वरवाद और निर्गुन ब्रह्म उपासना पर बल

'सबद', 'जपजी साहिब' नामक रचनाएँ लिखी

मृत्यु डेराबाबा, करतारपुर, (1539 ई.)

गुरु अमरदास (1552-1574)-
'आनंदकारज', 'लवन' नामक विवाह पद्धति शुरू, धार्मिक साम्राज्यों को 22 गद्वियों में बांटा

गुरु अंगद देव (लहना) (1539-1552 ई.)
- गुरुमुखी लिपि के जनक,
- स्थानीय भाषा में गुरुनानक के उपदेशों का संकलन

गुरु रामदास (1574-1581)-
अमृतसर की स्थापना (अकबर ने जमीन दी थी), गुरुपद को पैतृक बनाया।

गुरु गोविंद सिंह (1675-1708)
- 13 अप्रैल, 1699 को आनंदपुर साहिब (पटना) में जन्म।
- पाहुल, सिंह एंव कौर की प्रथा पांच करार अनिवार्य।
इनकी रचनाएँ- जफरनामा, विचित्रनाटक, चंडी दी बार
- बहादुरशाह से संधि की तथा 'निर्मल' पदवी की स्थापना।

गुरु अर्जुन देव (1581-1606)-
आदि ग्रंथ संकलित, दरबार साहिब की स्थापना, तरन- तारन एंव करतारपुर नगर की स्थापना, मुगल शासक खुसरो की सहायता

गुरु तेग बहादुर (1664-1675)
- आनंदपुर साहिब की स्थापना, इस्लाम न स्वीकार करने पर औरंगजेब द्वारा मृत्युदंड (शीशगंज अभी यहाँ गुरुद्वारा है।)

नोट

26 दिसंबर - 'वीर बाल दिवस'

गुरु हरराय (1644-1661)
- दारा शिकोह का समर्थन

गुरु हरकिशन (1661-1664)
- 'बाल गुरु' उपनाम, चेतक से मृत्यु

मुगल साम्राज्य

बाबर

(1526– 1530)

- आगरा में ज्यामितीय विधि से बाग (नूरे अफगान) लगाया।
- 'गज-ए-बाबरी' नामक पैमाना।
- काव्य संग्रह 'दीवान' (तुर्की भाषा)
- 'मुबइयान' नामक पद्य शैली का विकास
- तोपखाने का प्रयोग भारत में शुरू हुआ।

बाबर संबंधी अन्य जानकारियाँ

- बाबर को भारत पर आक्रमण का निमंत्रण आलमा खाँ, दिलावर खाँ, और राणा सांगा ने दिया।
- भारत पर बाबर का पहला आक्रमण (1519 ई. बाजौर पर)
- 1530 में आगरा में मृत्यु (पहले आगरा के आरामबाग, फिर काबुल में दफनाया गया।)
- 'कलंदर' की उपाधि (उदारता के लिए)
- बंगाल शासक नुसरतशाह ने बाबर से संधि की थी।

स्थापना बाबर (1526 ई.)

मुगल तुर्क एवं सुनी मुसलमान थे

- पितृ पक्ष से तैमूर वंशज
- मातृ पक्ष से चंगेज खाँ का वंशज
- 'तुजुक ए-बाबरी' (आत्मकथा, तुर्की भाषा)
- 'चंगताई वंश' की नींव रखी
- 1504 ई. में काबुल पर अधिकार
- 11 वर्ष की आयु में (1494 ई.) में फरगना की गद्दी पर बैठा
- 1507 में 'पादशाह' की उपाधि धारण, इसके पहले 'मिर्जा' की उपाधि
- पुत्र- हुमायूं, कामरान, असकरी तथा हिंडाल

बाबर द्वारा लड़े गए युद्ध	विरोधी	तथ्य
पानीपत का प्रथम युद्ध	21 अप्रैल, 1526	इब्राहिम लोदी तुलगुमा युद्ध पद्धति (उज्बेक) एवं तोप का प्रयोग
खानवा	17 मार्च, 1527	राणा सांगा 'जिहाद' का नारा, 'तमगा' कर समाप्त, 'गाजी' उपाधि
चंदेरी	29 जनवरी, 1528	मेदनी राय (मालवा का राजपूत शासक)
घाघरा	6 मई, 1529	अफगान बाबर का अंतिम युद्ध

नोट

- तुजुक-ए-बाबरी के अनुसार राणा सांगा, कृष्णादेव राय (सबसे शक्तिशाली शासक) दो हिन्दू राज्य थे।
- तुजुक-ए-बाबरी (बाबरनामा) का तुर्की से फारसी में अनुवाद अब्दुल रहीम खानखाना ने किया।
- उस्ताद अली, मुस्तफा, बाबर के प्रसिद्ध निशानेबाज थे।



मुगल साम्राज्य

**हुमायूं
(1530–1556 ई.)**

- यह 1530 में आगरा में 23 वर्ष आयु में गद्दी पर बैठा (इसके पहले बदखान का सूबेदार था।)
- 1533 दीनपनाह नगर की स्थापना
- ‘हुमायूंनामा’ की रचना गुलबदन बेगम ने की।
- हुमायूं का मकबरा- (1570 में हाजी बेगम के निर्देशन में मीरक मिर्जा ग्यास द्वारा निर्मित। भारतीय उपमहाद्वीप का पहला उद्यान मकबरा, मुगलों का डौरमिटरी, चार बाग शैली में निर्मित यूनेस्को के वर्ल्ड हेरिटेज में 1993 में शामिल)
- जनवरी 1556 में दीनपनाह स्थित पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरकर मौत
- इतिहास लेनपूल- ‘हुमायूं गिरते-पड़ते जीवन से मुक्त हो गया जैसे तमाम जिंदगी वह गिरते-पड़ते चलता था।’
- हुमायूं ज्योतिष में विश्वास रखता था (सातों दिन 7 रंग के कपड़े पहनने का नियम)
- समकालीन गुजरात शासक बहादुरशाह था। हुमायूं एवं बहादुरशाह के बीच 1535 में युद्ध हुआ था।

**शेरशाह सूरी
(1540–1545)**

- अफगान वंश
- बचपन का नाम-फरीद
- पिता- जौनपुर में सासाराम के जमींदार
- मुहम्मद बहार खाँ लोहानी द्वारा ‘शेर खाँ’ की उपाधि
- बिलग्राम युद्ध के बाद उत्तर भारत में ‘सूरवंश अथवा द्वितीय अफगान साम्राज्य’ की स्थापना
- ‘रोहतासगढ़ का किला’, ‘किला-ए-कुहना’ मस्जिद (दिल्ली) बनाया
- कालिंजर अभियान के दौरान ‘उक्का’ नामक आग्नेय चलाते वक्त 22 मई, 1945 को मृत्यु

शेरशाह प्रशासन

- ‘सिंकंदर गज’, ‘सन की डंडी’ का प्रयोग
- 178 ग्रेन चांदी का ‘रूपया’, 380 ग्रेन तांबे का ‘दाम’
- आबवाब- स्थानीय आय को कहते थे।
- जरीब- माप की इकाई हेतु प्रयोग
- चौधरी, मुकद्दम- मुखिया थे।

हुमायूं के प्रमुख युद्ध	विरोधी	अन्य तथ्य
देवरा (1531)		
चौसा (25 जून, 1539)	शेर खाँ (शेरशाह सूरी)	- शेर खाँ विजयी रहा तथा ‘शेरशाह’ की पदवी ली
बिलग्राम (कन्नौज) (17 मई, 1540)	शेरशाह	- शेरशाह ने दिल्ली, आगरा पर भी कब्जा कर लिया। हुमायूं ईरान चला गया।
सरहिन्द (1555)	सिंकंदर	- पंजाब शासक को हरा दिल्ली पर पुनः कब्जा किया
मच्छीवारा (मई, 1555)	अफगान सरदार	- संपूर्ण पंजाब पर मुगलों का अधिकार

चार सङ्कों का निर्माण किया

1. सोनारगाँव से अटक तक (ग्रैंड ट्रॅक रोड़)
2. आगरा से बुरहानपुर तक
3. आगरा से चित्तौड़ तक
4. लाहौर से मुल्तान तक

मुगल साम्राज्य

अकबर (1556–1605)

1542 में अमरकोट के राणा वीरसाल के महल में जन्म

सुलह-ए-कुल की नीति चलाई

1564 में अकबर के समय पहला विद्रोह उजबेकों ने किया

दसवंत, अब्दुल समद, बसावन अकबर के दरबारी चित्रकार थे

1584 में 'इलाही संवत्' शुरू किया।

जैन गुरु हरिविजय सूरि को 'जगतगुरु', तथा जिनचंद्र सूरी को 'युग प्रधान' की उपाधि दी।

राज्याभिषेक 14 फरवरी, 1556 को कलानौर में (जलालुदीन मुहम्मद अकबर बादशाही गाजी) नाम से

सबसे महान मुगल शासक

'पेटीकोट शासन' (1560–62)
- माहम अनगा द्वारा मुगल शासन में मुख्य भूमिका निभाई गई।

झरोखा दर्शन, तुलादान, पायबोस जैसी पारसी परंपराओं को शुरू किया।

संरक्षक बैरम खाँ ('खान-ए-खाना' उपाधि)

अकबर के नौ-रत्न- अबुल फजल, फैजी, वीरबल, तानसेन, अब्दुर्रहीम खानखाना, टोडरमल, राजा मानसिंह, मुल्ला दो प्याजा, हकीम हुमाम।

अकबर द्वारा लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय

हरमदल से मुक्ति, दासप्रथा का अंत तीर्थ यात्रा कर समाप्त जजिया कर समाप्त राजधानी आगरा से फतेहपुर सीकरी हस्तांतरित इबादतखाना इबादतखाना में अन्य लोगों को अनुमति महजर घोषणा दीन-ए-इलाही की स्थापना राजधानी का लाहौर स्थानांतरण

- 1562
- 1563
- 1564
- 1571
- 1575
- 1578
- 1579
- 1582
- 1585

अकबर (1556–1605)

कुछ प्रमुख कार्य-

- सती प्रथा पर रोक के प्रयास
- विधवा विवाह को कानूनी मान्यता
- शादी हेतु लड़के (16), लड़की (14) आयु का निर्धारण। अकबर ने लड़कियों को अपनी पसंद से शादी करने की अनुमति दी थी।
- अनुवाद विभाग का गठन
- चित्रकारी हेतु अलग विभाग
- 'इबादतखाना' (फतेहपुर सीकरी) एक धर्मसंसद थी,
- अकबर की राजपूत नीति दमन एवं समझौते (विवाह, जागीर) पर आधारित थी।
- अकबर के 'मजहरनामा' (1579) का मसौदा शेख मुबारक ने तैयार किया। - विन्सेट स्मिथ ने मजहरनामा को 'अमोघत्व का आदेश' कहा है।

- अकबर के दरबार में एकाबीवा और मोसेराठ जैसे ईसाई विद्वान आए थे।
- अकबर सिख गुरु अमरदास एवं रामदास से मिला था।
- स्थापत्य निर्माण- आगरा का किला, फतेहपुर सीकरी में दीवाने खास, पंचमहल, बुलंद दरवाजा, इलाहाबाद का किला, लाहौर का किला।
- 'अकबरनामा' को अबुलफजल ने लिखा है।
- अकबर ने तानसेन को 'मियां' तथा 'कंठा भरण वाणिविलास' की उपाधि दी थी।



मुगल साम्राज्य

जहांगीर (1605-1627 ई.)

नूरजहाँ

शाहजहाँ (1627-1657)

जन्म- फतेहपुर सीकरी

सूफी संत सलीम चिश्ती के नाम पर 'सलीम' नाम

तुजुक-ए-जहाँगीरी (आत्मकथा) को मौतबिंद खाने ने पूरा किया।

'न्याय की जंजीर' या 'न्याय का घंटा' (आगरा में) लगाया।

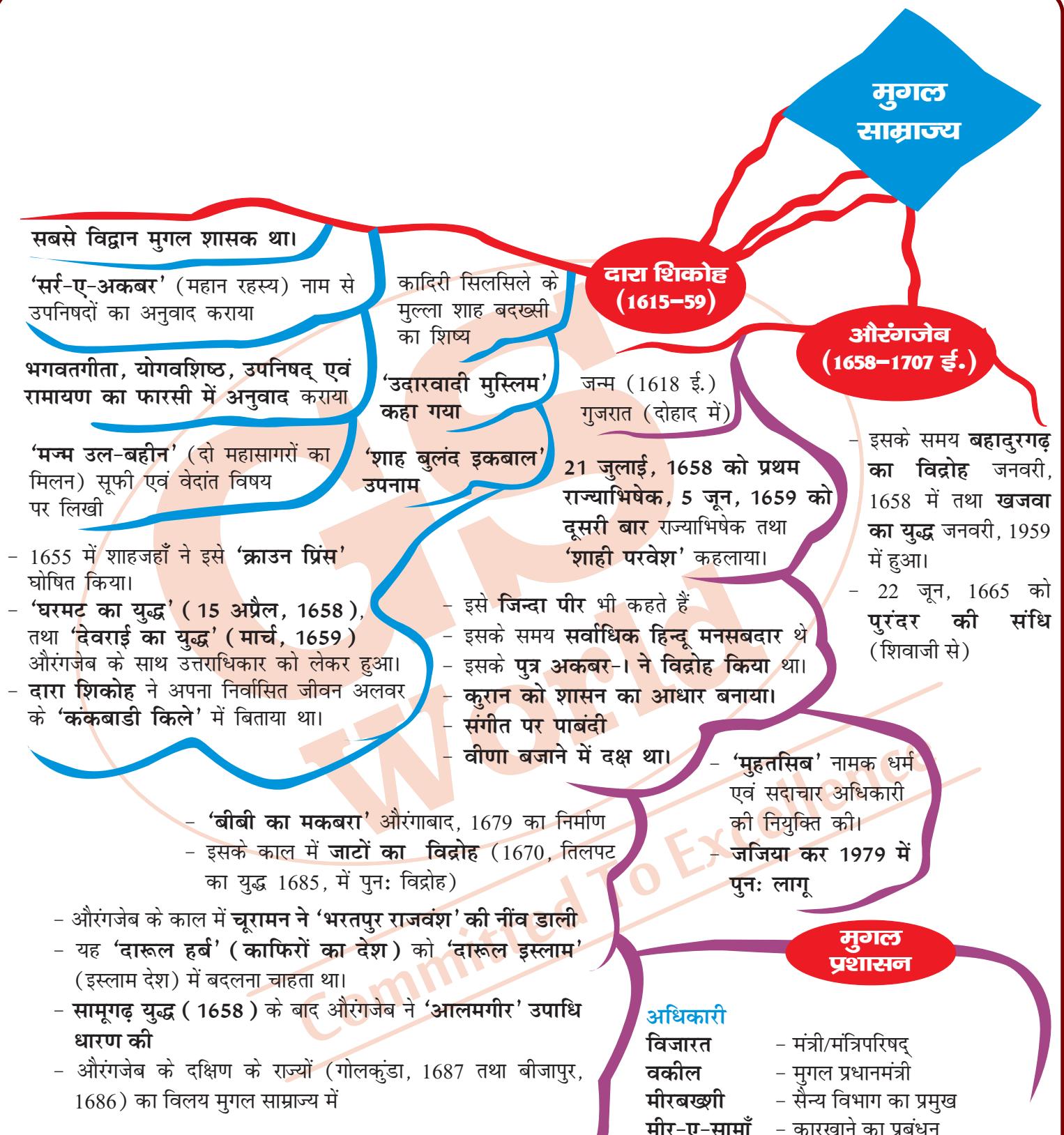
- इसके पुत्र खुसरो ने 1606 में विद्रोह किया (भैरावल का युद्ध)
- खुसरो की सहायता करने के कारण 5वें सिख गुरु अर्जुनदेव को जहाँगीर ने मरवा दिया।
- अन्य पुत्र 'खुर्रम' को 'शाहजहाँ' की उपाधि जहाँगीर ने दी थी।
- जहाँगीर के चित्रकार- उस्ताद मंसूर, मनोहर, फारूख बेग, अबुल हसन, आगा रजा, विशनदास आदि।
- जहाँगीर द्वारा आगरा में 'चित्रणशाला' (आगा रजा के निर्देशन में) की स्थापना।
- जहाँगीर चित्रकला में पारंगत था तथा इसका काल 'चित्रकला का स्वर्णयुग' कहलाता है।
- कौशांबी स्तंभ पर जहाँगीर का लेख, समुद्रगुप्त का 'प्रयाग प्रशस्ति' उल्कोण हैं।
- जहाँगीर के समय विदेशी यात्री- कैप्टन हॉकिंस (प्रथम), एडवर्ड टैरी, सर टॉमस रो, विलियम फिंच
- जहाँगीर को शहादरा (लाहौर) में दफनाया गया है।
- जनकल्याण हेतु 12 आदेश (शराब बिक्री बंद, गुरुवार एवं रविवार को पशु हत्या पर रोक, ऐम्मा नामक भूमि प्रमाणीकर आदि)
- 1613 में अंग्रेजों को सूरत में फैकट्री लगाने की अनुमति दी

- मिर्जा ग्यासबेग की पुत्री
- वास्तविक नाम मेहरूनिस्सा
- 1611 में जहाँगीर से विवाह
- जहाँगीर द्वारा 'नूरमहल', 'नूरजहाँ' की उपाधि दी।
- नूरजहाँ की मां अस्मत बेगम ने 'गुलाब से इत्र' निकालने की विधि खोजी।
- 'इतमाद-उद-दौला का मकबरा' नूरजहाँ ने 1626 में बनवाया। इसमें सफेद संगमरमर का उपयोग, पितरा दुरा का जड़ाउ काम हुआ है।
- 'जुन्ना गुट' नूरजहाँ से संबंधित था।

- माता- जगत गोसाई
- अन्य नाम खुर्रम
- फरवरी, 1628 को आगरा में राज्यभिषेक (अबुल मुजफ्फर शहाबुद्दीन मुहम्मद साहिब किरन-सानी उपाधि)
- आसफ खाँ को 'महावत' की उपाधि दी
- यमुना के दाहिने तट पर 'शाहजहाँनाबाद' की नींव (आगरा से दिल्ली राजधानी हेतु)
- लाल खाँ को 'गुण समुंदर' तथा जगन्नाथ को 'महाकविराय' की उपाधि दी।
- इसके बेटों (औरंगजेब, दारा शिकोह, शूजा) के बीच उत्तराधिकार का युद्ध हुआ।

- शाहजहाँ का पहला सैन्य अभ्यास बुंदेलों के खिलाफ था
- चहार तस्लीम और जमीनबोस प्रथा शाहजहाँ से संबंधित है।
- सुमताज महल की याद में ताजमहल बनाया। (रूपरेखा- उस्ताद अहमद लाहौरी)
- मयूरसिंहासन का निर्माता
- स्थापत्य का स्वर्णयुग:- 1. दिल्ली में-लाल किला, दीवाने आम, दीवाने खास, जामा मस्जिद। 2. आगरा में- मोती मस्जिद, ताजमहल लाहौर में-शीश महल
- चित्रकार- मुहम्मद फकीर, मीर हासिम
- संस्कृत विद्वान्- वंशीधर मिश्र, हरिनारायण मिश्र

मुगल साम्राज्य



नोट

मुगल राजस्व की अवधारणा तुकी मंगोल पर आधारित थी।

मुगल साम्राज्य

मुगल प्रशासन

- आमिल/अमलगुजार- जिले का वित्त अधिकारी (किसानों से लगान बसूली)
- शिकदार-परगना (महाल) में शांति व्यवस्था बनाना
- कारकून- राजस्व लेखा क्लर्क
- खुत/मुकद्दम/चौथरी- मुखिया
- मदद-ए-माश- लगानहीन भूमि
- दरोगा-ए-डाक चौकी सूचना एवं गुप्तचर
- मावदा/डीह- ग्राम
- नागला- ग्रामीण बस्तियां
- तिराजती- नकदी फसल

- राजस्व निर्धारण की पद्धतियां - जस्ती या दहशाला प्रणाली, बँटाई, गल्ला, बछाई, कानकूत, नस्क।
- खुदकाशत (खुद की जमीन पर खेती), पाहीकाशत (बॉटाईदार), मुजारियान (कृषि श्रमिक) कृषक वर्ग था।

- दास्तान-ए-अमीर-हम्जा (हम्जानमा) अकबर के समय चित्रांकित हुआ था।
- चांदनी चौक (दिल्ली) की रूपरेखा जहाँआरा (शाहजहाँ की बेटी) ने तैयार की।
- बैतुल-उल-उलम (पुस्तकालय) को जेबुनिस्सा (औरंगजेब की बेटी) ने स्थापित किया।
- मदरसा-ए-बेगम (दिल्ली) की स्थापना माहम अनगा ने की थी।
- दरबारी इतिहास लिखावाने की प्रथा अकबर ने शुरू की।
- खाका- भवन बनाने का नक्शा

- मुगल काल में गोवा, भड़ौच, मछलीपट्टनम जहाज निर्माण केन्द्र थे।
- सूती वस्त्र उद्योग उन्नत अवस्था में था। तथा इस पर शासक का पूर्ण नियंत्रण था।
- व्यापारी वर्ग - सेठ, बोहरा, मोदी वानिक, बंजारा
- अकबरकालीन स्थापत्य कला भारतीय एवं ईरानी शैलियों का सुंदर समन्वयन दर्शाती है।

मनसबदारी व्यवस्था

- अकबर ने अपने शासन के 11वें वर्ष लागू किया।
- यह 'मंगोलों की दशमलव पद्धति पर' आधारित थी।
- इसमें जात एवं सवार की द्वैध व्यवस्था लागू थी।
- यह मुगल सैन्य व्यवस्था का आधार था।
- मनसबदार (10-500 मनसब)
- उमरा (500-2500 मनसब)
- अमीर-ए-आनम (2500 से ऊपर)

दहशाला प्रणाली

- टोडरमल द्वारा 1579 में लागू
- इसमें भू-राजस्व उत्पादकता एवं कीमतों पर आधारित थी।

नोट

बाबर (काबुल)
जहाँगीर (लाहौर)

बहादुर शाह जफर (रंगून) का मकबरा भारत से बाहर है।

अकबर के महत्वपूर्ण सेन्य अभियान

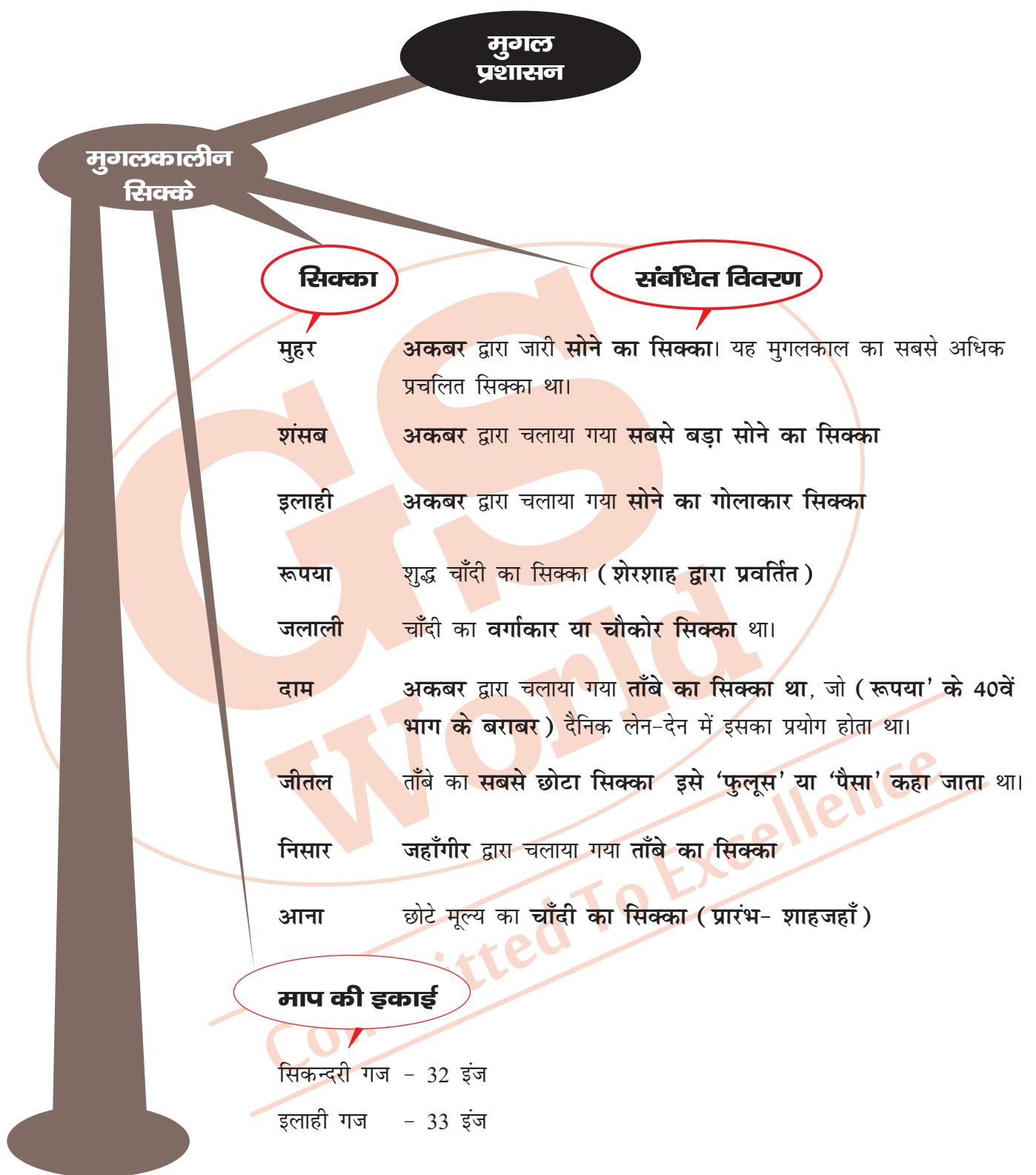
क्षेत्र	समय	पराजित शासक	नेतृत्वकर्ता
मालवा	1561 ई.	बाजबहादुर	अधम खान, पीर मुहम्मद खाँ
चुनार	1561 ई.		आसफ खाँ
गोण्डवाना	1564 ई.	बीर नारायण (रानी दुर्गावती संरक्षिका थी)	आसफ खाँ
आमेर	1562 ई.	भारमल ने स्वेच्छा से अधीनता स्वीकारी	
मेवाड़	1567 ई.	उदय सिंह	अकबर
रणथम्भौर	1569 ई.	सुरजन राय	भगवान दास एवं अकबर
कालिन्जर	1569 ई.	रामचन्द्र	मजून खाँ
गुजरात	1572 ई.	मुजफ्फर खाँ-III	खाने आजम (मिर्जा अजीज कोका)
गुजरात (द्वितीय आक्रमण)	1573 ई.	मिर्जा हुसैन मिर्जा का विप्रोह	अकबर (स्मिथ ने इसे इतिहास का सर्वाधिक द्रुतगामी आक्रमण कहा है।)
बंगाल एवं	1574-76 ई.	दाउद खाँ	मुनीम खाँ
हल्दीघाटी युद्ध	1576 ई.	महाराणा प्रताप	आसफ खाँ, मानसिंह
काबुल	1581 ई.	हकीम मिर्जा	मानसिंह एवं अकबर
कश्मीर	1586 ई.	यूसूफ खाँ, याकूत खाँ	कासिम खाँ और भगवान दास
सिन्ध	1591 ई.	जानी बेग	अब्दुरहीम खान खाना
उड़ीसा	1590-91 ई.	निसार खाँ	मानसिंह
बलूचिस्तान	1595 ई.	पन्नी अफगान	मीर मासूम
अहमद नगर	1595 ई.	बहादुर निजाम शाह (चाँद बीबी संरक्षिका)	शाहजादा मुराद, अब्दुरहीम खान खाना।
खानदेश	1600 ई.	अली खाँ	
असीरगढ़	1601 ई.	मीर बहादुर	अकबर की अंतिम विजय

औरंगजेब कालीन प्रमुख विद्रोह

विद्रोह	कारण
बुन्देला विद्रोह (1661 ई.)	ओरछा के शासक चम्पतराय के नेतृत्व में विद्रोह
अफगान विद्रोह (उत्तर-पश्चिम सीमांत क्षेत्र 1667 ई.)	उद्देश्य - 'पृथक् अफगान राज्य की स्थापना' (भागू के नेतृत्व में)
जाट विद्रोह (1669 ई.)	औरंगजेब के समय का पहला संगठित विद्रोह (किसान एवं भूमि के मुद्दे पर)
सतनामी विद्रोह (नारनौल मथुरा)	नेतृत्वकर्ता- बीरमान
सिख विद्रोह (1675 ई.)	उद्देश्य- धार्मिक कारण (एकमात्र धार्मिक विद्रोह)
अंग्रेजों का विद्रोह (1686 ई.)	अंग्रेजों को हुगली से बाहर खदेड़ दिया गया।
राजपूत विद्रोह (1679-1709 ई.)	उत्तराधिकार के विषय पर
अकबर-॥ का विद्रोह (1681 ई.)	मेवाड़ एवं मारवाड़ की सहायता से 11 जनवरी, 1681 में स्वयं को बादशाह घोषित किया।

मुगलकाल के उच्चाधिकारी

प्रमुख अधिकारी	विभाग
मीर-अतिश	शाही तोपखाने का प्रधान।
दीवान-ए-तन	वेतन और जागीरों से संबंधित मामलों का निपटारा।
दरोगा-ए-डाक चौकी	गुप्तचर विभाग का प्रमुख, पत्र व्यवहार का प्रभारी
मीर-ए-अर्ज	बादशाह के पास भेजे जाने वाले आवेदन-पत्रों का प्रभारी
मीर-ए-बहर	नौ-सेना का प्रधान
मीर-ए-तुजुक	धर्मानुष्ठान का अधिकारी
मीर-ए-बर्र	वन-विभाग का अधीक्षक
नाजिर-ए-बयूतात (या दीवान-ए-बयूतान)	शाही कारखानों का अधीक्षक
वाकिया-नवीस	समाचार लेखक
खुफिया-नवीस	गुप्त पत्र-लेखक
हरकारा	जासूस और सन्देश वाहक
मुशर्रिफ (लेखाधिकारी)	राज्य के आय-व्यय का लेखा-जोखा
मुस्तौफी (लेखा परीक्षक)	मुशर्रिफ के कार्यों की जांच
मुसद्दी	बंदरगाहों के प्रशासन की देखभाल



ਮुगल प्रशासन

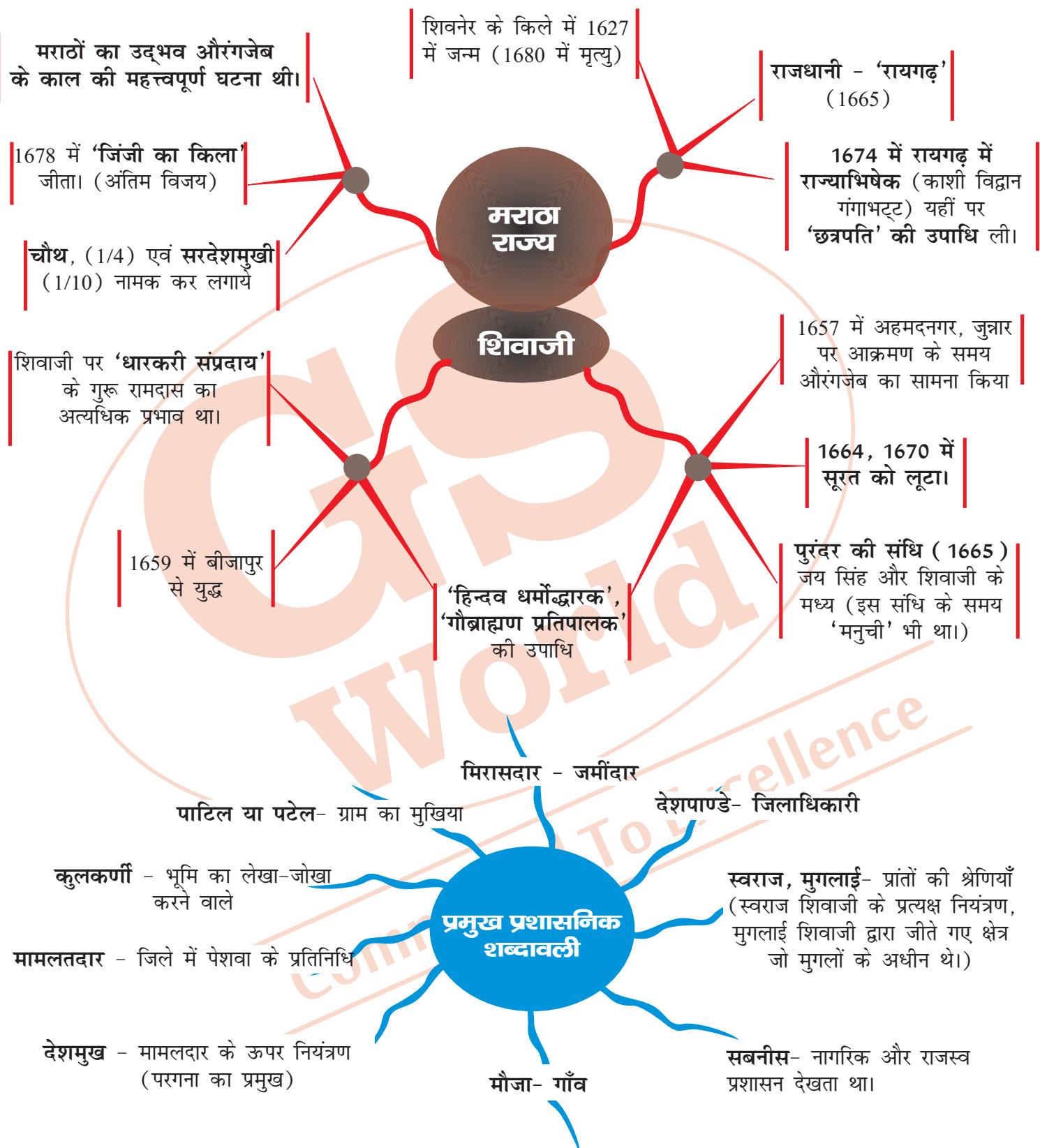
मुगलकालीन
रचनाएँ

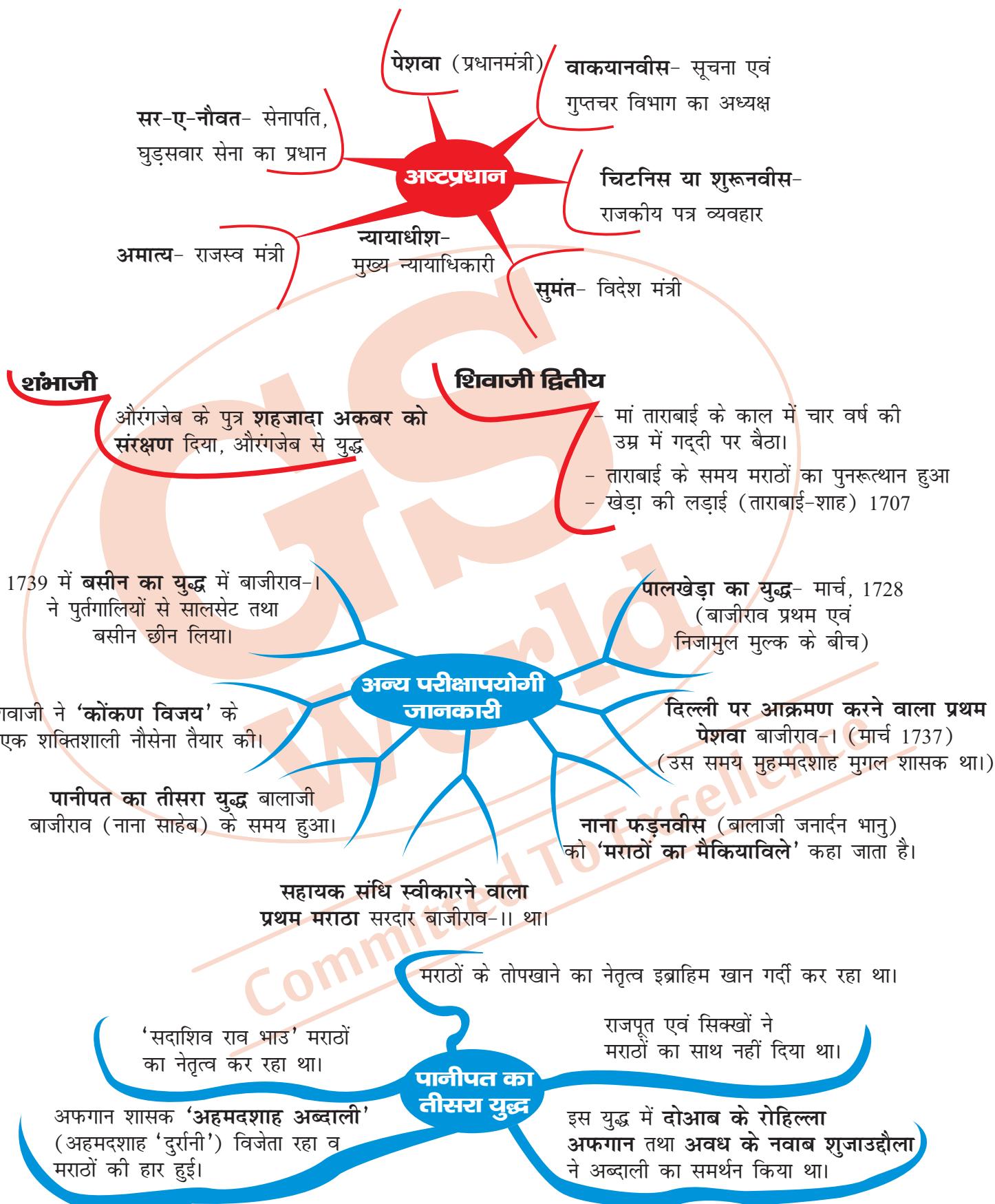
रचना	भाषा	रचनाकार
तुजुक-ए-बाबरी (बाबरनामा)	तुर्की	बाबर (आत्मकथा)
हुमायूँनामा	फारसी	गुलबदन बेगम
तारीख-ए-अल्फी	फारसी	मुल्ला दाऊद
अकबरनामा	फारसी	अबुल फजल
तबकाते-अकबरी	फारसी	निजामुद्दीन अहमद
मुन्तखब-उल- तवारीख	फारसी	अब्दुल कादिर बदायूँनी
तुजुके-जहाँगीरी	फारसी	जहाँगीर, मौतमिद खाँ
इकबालनामा-ए-जहाँगीरी	फारसी	मौतमिद खाँ
पादशाहनामा	फारसी	अब्दुल हमीद लाहौरी (मोहम्मद वारिस ने पूरा किया)
शाहजहाँनामा	फारसी	इनायत खाँ
आलमगीरनामा	फारसी	काजिम शीराजी
फुटहात-ए-आलमगीरी	फारसी	ईश्वरदास नागर
मुन्तखब-उल-लुबाव	फारसी	खफी खाँ
नुस्खा-ए-दिलकुशाँ	फारसी	भीमसेन सक्सेना
खुलासत-उत-तवारीख	फारसी	सुजानराय भण्डारी
मज्म-उल-तवारीख	फारसी	दारा शिकोह

मुगलकाल में आए विदेशी यात्री

विदेशी यात्री	मुगल शासक
राल्फ फिच (इंग्लैंड)	अकबर
सर टॉमस रो व कैप्टन हॉकिन्स (इंग्लैंड)	जहाँगीर
फ्रांसिस बर्नियर (फ्रांसिसी)	शाहजहाँ
पीटर मुंडी (इटली)	शाहजहाँ
निकोलाओमनूची (इटली)	शाहजहाँ
ट्रैवर्नियर (फ्रांसिसी)	शाहजहाँ







प्रथम (1775-82) - सालबाई संधि

आंग्ल-मराठा युद्ध

तृतीय (1817-19) - मराठा शक्ति

समाप्त, सतारा राज्य का गठन

द्वितीय (1803-05) - 1. देवगांव की संधि-

भोंसले, 2. शुरंजी अर्जन संधि - सिंधिया,

3. राजपुर घाट संधि - होल्कर के साथ की गई।

'अमृतसर की संधि'
रणजीत सिंह और चार्ल्स मेटकॉफ के बीच अप्रैल 1809 में हुई।

सआदत खान 'बुरहान उल मुल्क' अवध के स्वायत्त राज्य का संस्थापक था। (अवध के अंतिम नवाब वाजिद अलीशाह (1847-1856))

चिनकिलिज खाँ (निजाम उल मुल्क 'आसफजाह') ने 1724 में हैदराबाद में 'आसफशाही वंश' की स्थापना की।

बहादुरशाह-II (बहादुर शाह जफर) अंतिम मुगल सम्राट। 1857 के विद्रोह में शामिल, रंगून में 1862 में मृत्यु।

अकबर-II ने राम मोहन राय को 'राजा' की उपाधि की।

रणजीत सिंह (1792-1839)
सुकरचकिया मिसल के थे। इनके समय लाहौर (राजनीतिक) तथा अमृतसर (धार्मिक) राजधानी थी।

'जाटों का अफलातुन'
सूरजमल को कहते हैं। स्वतंत्र कनार्टक राज्य की स्थापना सादतुल्ला खाँ ने 1720 में की।

अलीगौहर 'शाहआलम-II' की उपाधि के साथ गद्दी पर बैठा। इसके समय पानीपत का तीसरा युद्ध (1761) तथा बक्सर का युद्ध (1764) हुआ।

बंगस- पठान राज्य (फरुखाबाद) मुहम्मद खाँ द्वारा स्थापित

स्वतंत्र रुहेलखंड के संस्थापक वीरदाउद, अली मुहम्मद थे।

मुहम्मदशाह के समय चिनकिलिज खाँ ने 1724 में 'स्वतंत्र हैदराबाद राज्य' की स्थापना की।

मुहम्मदशाह के समय ही नादिरशाह (इरान का नेपोलियन) ने 1738-39 में भारत पर आक्रमण किया।

अहमदशाह अब्दाली ने 5 बार भारत पर आक्रमण किया।

बहादुरशाह प्रथम (शाहे बेखबर) 65 वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठा।

औरंगजेब की मृत्यु के दौरान मुगल साम्राज्य में कुल 21 राज्य थे।

उत्तरवर्ती मुगल एवं अन्य राज्य

नोट

शाहआलम-II (अली गोहर) के शासनकाल के समय प्रचलित कथन है कि 'इसका शासन दिल्ली से पालम तक सिमट गया था।'

यूरोपीय कंपनियां	
कंपनी	स्थापना
पुर्टगाली ईस्ट इंडिया कंपनी	1498 ई.
अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी	1600 ई.
डच ईस्ट इंडिया कंपनी	1602 ई.
डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी	1616 ई.
फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी	1664 ई.
स्वीडिश ईस्ट इंडिया कंपनी	1731 ई.



यूरोपीय कंपनियों का भारत आगमन क्रम
(पुर्टगाली → डच → अंग्रेज → डेनिश → फ्रांसीसी)

आधुनिक भारत

अल्मीड़ा
(1505-09)

पुर्टगाली

अल्बुकर्क
(1509-15)

- प्रथम पुर्टगाली वायसराय
- अल्मीड़ा ने अजानीवा, किल्वा बेसीन (कोचिन) में किले निर्मित किए
- इसने मिस्र, तुर्की और बेगड़ा की सेना के साथ संघर्ष किया
- 'ब्लू वाटर' पॉलिसी या शांत जल-नीति (हिन्द महासागर में प्रभुत्व के लिए) चलाई

- दूसरा पुर्टगाली वायसराय
- हिन्दू महिलाओं से विवाह की नीति
- 1510 में बीजापुर (शासक-यूसूफ आदिलशाह) से गोवा छीन लिया।
- भारत में पुर्टगाली शक्ति की वास्तविक नींव रखी

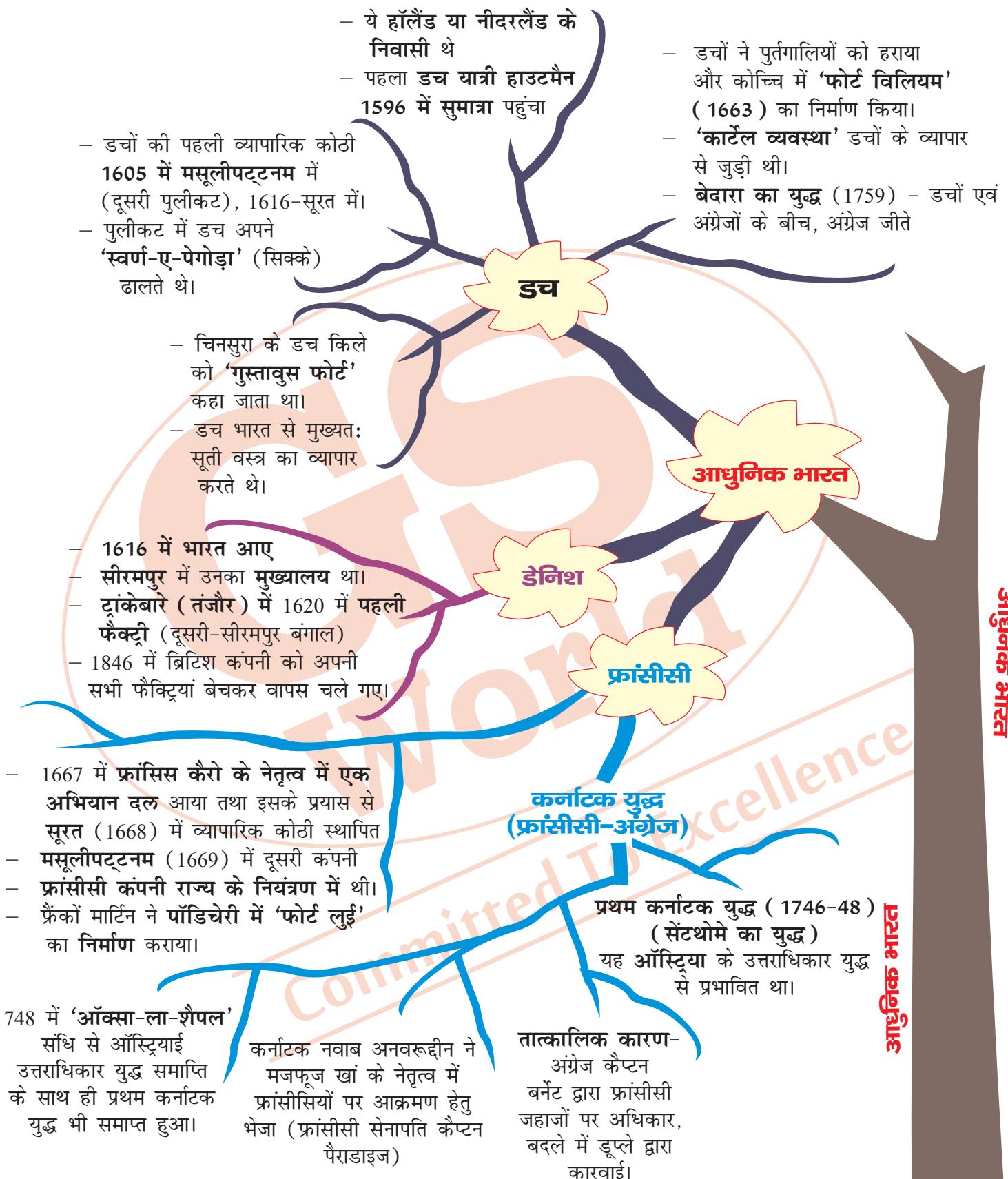
पुर्टगाली मुख्यालय को कोचिन से गोवा ले गया बंगाल में पुर्टगाली प्रभाव में वृद्धि का प्रयास

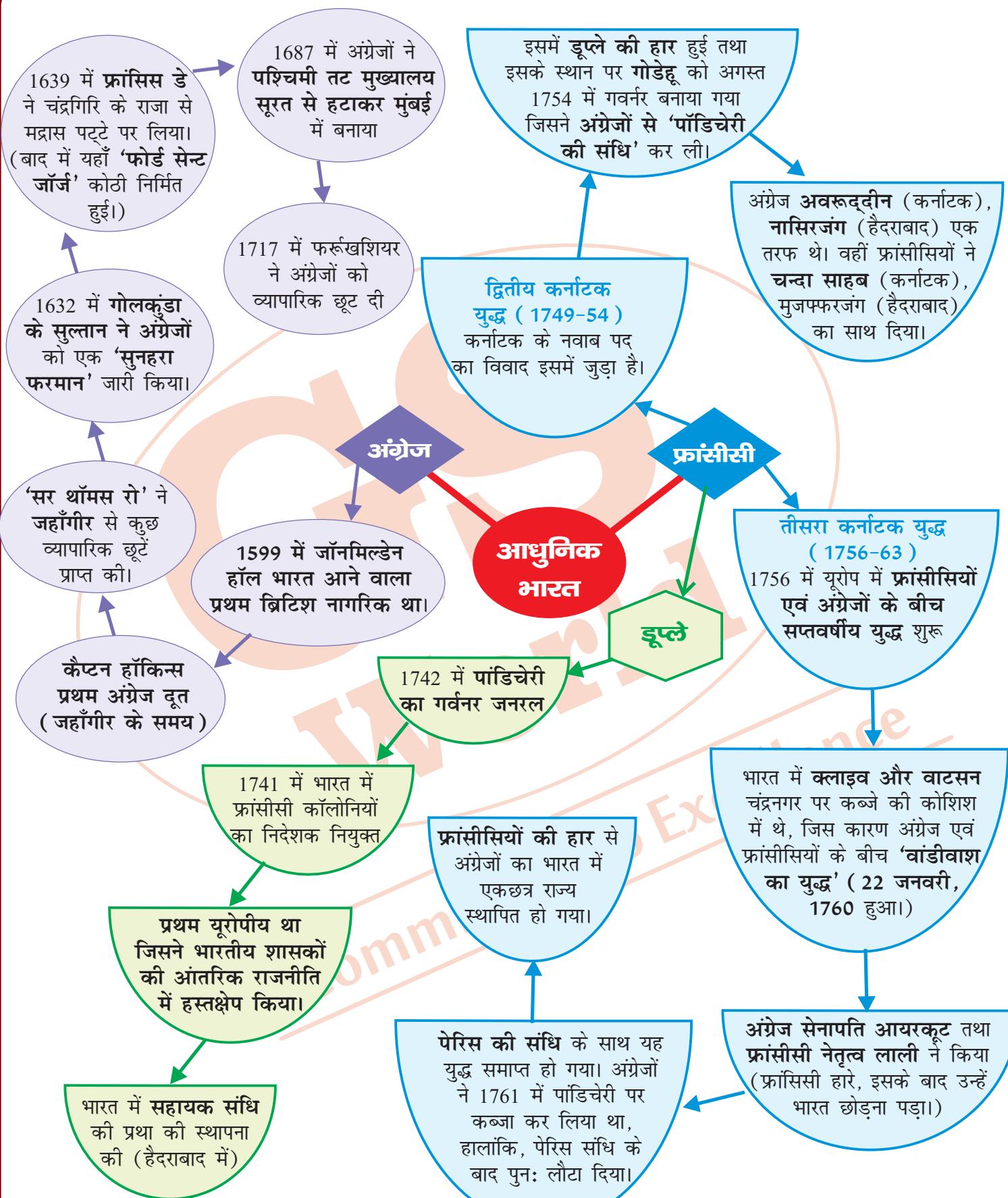
नीनो दा कुन्डा
(1529)

- अन्य तथ्य:-
- 1530 - पुर्टगालियों ने गोवा को अपने भारतीय राज्य की राजधानी बनाया।
 - 1535 - पुर्टगालियों ने दीव पर अधिकार कर दिया
 - 1612 - स्वाली का युद्ध पुर्टगाली एवं अंग्रेज के बीच (अंग्रेज अधिकारी थॉमस बेस्ट)
 - 1661 - पुर्टगाली सरकार ने ब्रिटेन को बम्बई दहेज के रूप में दिया।

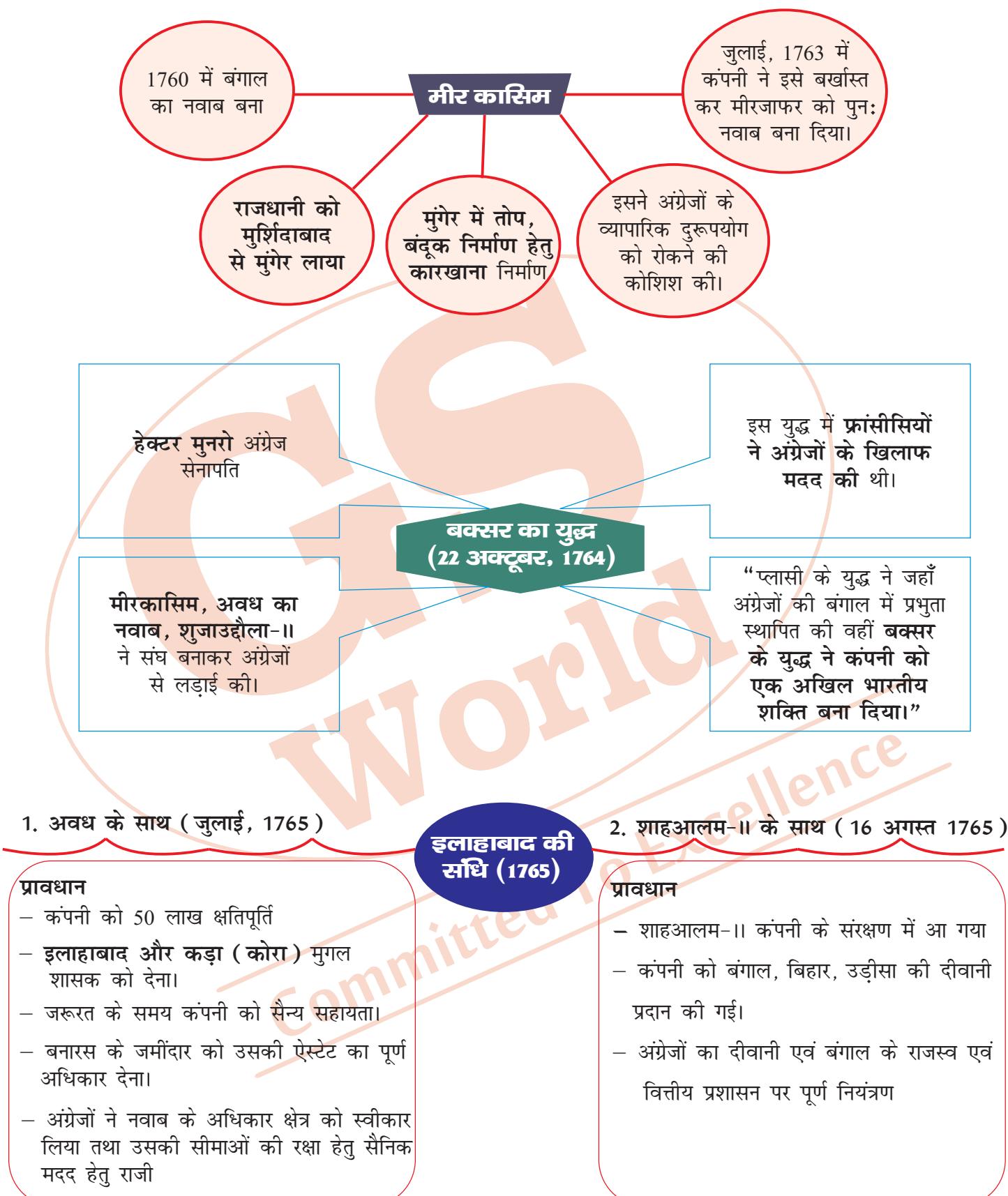
- यूरोपीय कंपनियों में पुर्टगाली सबसे पहले भारत आए और सबसे बाद में भारत से गए।
- वास्कोडिगामा (1498, 1502) पहला पुर्टगाली, जो भारत (कालीकट) आया (अब्दुल मजीद गुजराती पथ प्रदर्शक ने मदद की)
- दूसरा यात्री- पेट्रो अल्बेर्यर्स कैब्रल
- 'ईस्तादो द इंडिया' पुर्टगाली साम्राज्य को कहते थे।
- पहली व्यापारिक कोठी कोचीन में
- मुगल शासक अकबर ने 1602 में पुर्टगालियों से सेन्य सहायता हेतु एक दूत गोवा भेजा था।
- पुर्टगालियों ने भारत में ईसाई धर्म को बढ़ाने की कोशिश की।
- पुर्टगाली गवर्नर अल्फांसो डिसूज़ा (1542-45 ई.) के साथ जेसूइट 'फ्रांसिस्को जेवियर' भारत आया।
- स्थापत्य में 'गोथिक शैली' का आगमन हुआ।
- पुर्टगाली मध्य अमेरिका से आलू, मक्का भी भारत लाए।
- पुर्टगालियों ने भारत में तम्बाकू की खेती, जहाज निर्माण, प्रिटिंग प्रेस की शुरूआत की।
- 'कार्टज' (अमाडा काफिला) व्यवस्था के तहत पुर्टगाली जहाजों को अनुमति पत्र देते थे।











नौ-सैन्य सर्वोच्चता,
सैन्य कौशल एवं
अनुशासन

भारत में अंग्रेजों की सफलता के कारण

ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति की शुरूआत

अंग्रेजों द्वारा सेना पर अधिक व्यय

पुर्तगाली एवं डच इसाईयत के प्रचार पर अधिक केन्द्रित थे।

द्वितीय आंगल-मैसूर युद्ध

(1780- 84)

- हैदरअली-अंग्रेज (वॉरेन हेस्टिंग्स) के मध्य
- तात्कालिक कारण- अंग्रेजों द्वारा माही पर कब्जा।
- युद्ध के दौरान ही हैदर की मृत्यु के बाद टीपू सुल्तान ने मार्च, 1784 को अंग्रेजों से मंगलौर की संधि की।

हैदर अली

- 1755 में डिंडिगुल का फौजदार नियुक्त
- 1761 में मैसूर का शासक बना

प्रथम आंगल- मैसूर युद्ध

- 1767- 1769 में हैदरअली और अंग्रेजों के बीच।
- अप्रैल, 1769 में 'मद्रास की संधि' के साथ समाप्त

तृतीय आंगल-मैसूर

युद्ध (1790-92)

- लॉर्ड कॉनवालिस के समय टीपू सुल्तान और अंग्रेजों के बीच (त्रावणकोर के मुद्दे पर)
- 'श्री रंगपट्टनम की संधि' (18 मार्च, 1792) के द्वारा समाप्त

चतुर्थ आंगल- मैसूर युद्ध (1799 ई.)

- इस युद्ध में मराठा, निजाम तथा अंग्रेज सेनाएं एक साथ थीं।
- 4 मई, 1799 को अंग्रेजों द्वारा श्रीरंगपट्टनम पर कब्जा
- लॉर्ड वेलेजली अंग्रेज गवर्नर। वहाँ अंग्रेज सेनापति आर्थर वेलेस्ली, रिस और स्टुअर्ट थे।
- टीपू सुल्तान अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम की रक्षा करते हुए मारा गया।
- युद्ध के बाद वेलेजली को 'मार्किव्स' की उपाधि दी गई।
- युद्ध के दौरान टीपू ने अंतर्राष्ट्रीय सहयोग हेतु नेपोलियन, अरब, आदि को पत्र लिखा था।

आंगल- मैसूर युद्ध

टीपू सुल्तान (1750-1799 ई.)

- श्रृंगेरी मंदिर एवं देवी शारदा की मूर्ति स्थापना एवं मरम्मत करवाई
- 'शेर-ए-मैसूर' कहलाया
- श्री रंगपट्टनम (राजधानी) में स्वतंत्रता का वृक्ष लगाया
- जैकोविन क्लब का गठन किया (फ्रांसीसी सैनिकों की मदद से 1797 में)
- भारत में रॉकेट तकनीक का खोजकर्ता (रॉकेट संचालन पर 'फतुल मुजाहिदीन' नामक सैन्य मैनुअल लिखा)
- सामंतवाद के बजाय पूँजीवादी विकास को बढ़ावा
- इसने एक नया 'मौलुदी चंद्र सौर कैलेंडर' शुरू किया
- कारखानों को स्थापित करने के लिए एक 'राज्य वाणिज्यिक निगम' की स्थापना की।
- सेना को यूरोपीय मॉडल पर संगठित किया, सैनिकों के प्रशिक्षण हेतु फ्रांसीसी अधिकारियों की मदद ली।



तात्कालिक कारण
कारतूसों में गाय और
सुअर की चर्बी

10 मई, 1857 को मेरठ
से शुरूआत (11 मई
को बहादुरशाह जफर को
विद्रोहियों ने भारत का
नेता घोषित कर दिया।)

1857 की क्रान्ति

8 अप्रैल, 1857 को
मंगल पांडेय को
फांसी की सजा

इस समय भारत का
गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग
और अंग्रेज प्रधानमंत्री
पार्पस्टेन (लिबरल
पार्टी) थे।

विद्रोह में अंग्रेजों
का समर्थन करने
वाले राज्य

- ग्वालियर के सिंधिया
- इंदौर के होल्कर
- भोपाल के नवाब

- जोधपुर के राजा
- कश्मीर के महाराजा
- हैदराबाद के निजाम
- सिक्ख शासकों में
(पटियाला, नाभ)

क्रान्ति का प्रभाव

1858 का भारत शासन अधिनियम पारित कर व्यापक बदलाव किए गए।

ब्रिटिश कंपनी का स्थान 'ब्रिटिश क्राउन' ने ले लिया।

गवर्नर जनरल का नाम बदलकर 'वायसराय' किया गया। (लार्ड कैनिंग प्रथम वायसराय)

'भारत के राज्य सचिव' का नया पद 'पील आयोग' के सिफारिश पर सेना में बदलाव कर अंग्रेज सैनिकों एवं पदाधिकारियों में वृद्धि हुई। (सैनिक अनुपात 2:1)

बिहार, अवध के सैनिकों को 'गैर लड़ाकू' घोषित कर उनके बदले सिक्ख, गोरखा एवं पठानों की 'लड़ाकू जातियाँ' घोषित की गई।

विलय की पूर्व नीति के बदले भारतीय शासकों को उत्तराधिकारी चुनने का अधिकार

एक नवीन 'कृषि नीति' जारी की गई। 'लिंक्ड-बटालियन योजना' के जरिए यूरोपियन सेना को बेहतर ट्रेनिंग की व्यवस्था

सबके लिए एक समान सुरक्षा

धार्मिक मामलों में अहस्तक्षेप, ब्रिटिश साम्राज्य विस्तार पर रोक

सेना और तोपखाना विभाग पूर्णतः यूरोपियों हेतु आरक्षित कर लिया गया।

'पाश्चात्य संस्कृति' को बढ़ावा देने वाली शिक्षा व्यवस्था को लागू किया गया।

1857 ई. की महान क्राति के प्रमुख केन्द्र

केन्द्र	भारतीय नायक	ब्रिटिश नेतृत्व
दिल्ली	बहादुरशाह जफर, बख्त खाँ (सैन्य नेतृत्व)	निकलसन एवं हडसन
कानपुर	नाना साहब, तात्या टोपे (सैन्य नेतृत्व)	कैंपबेल
लखनऊ	बेगम हजरत महल	हेनरी लॉरेन्स, कैंपबेल
झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई	ह्यूरोज
इलाहाबाद	लियाकत अली	कर्नल नील
जगदीशपुर (बिहार)	कुँवर सिंह	विलियम टेलर, विंसेट आयर
बेरेली	खान बहादुर खाँ	हडसन
फैजाबाद	मौलवी अहमद उल्ला	कर्नल नील
फतेहपुर	अजीमुल्ला	जेनरल रेन्ड

नोट:- खालियर- तात्या टोपे, संभलपुर- सुरेन्द्र साई, हरियाणा- राव तुलाराम, मदसौर- फिरोजशाह (शहजादा हुमायूं) अन्य प्रमुख आन्दोलनकारी थे।

1857 के विद्रोह पर लिखी गई प्रसिद्ध किताबें

द इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस,
1857- वी.डी. सावरकर

द सिपॉय म्यूटिनी एंड द रिबेलियन ऑफ
1857- आर.सी. मजमूदार

असबाब-ए-बगावत
-ए-हिन्द
- सर सैयद अहमद खाँ

Eighteen Fifty Seven
- 1857- सुरेन्द्र नाथ सेन

‘हिन्दू-मुस्लिम घट्यंत्र का परिणाम’

सर जेम्स आउट्रम, डब्ल्यू टेलर

‘यह जनक्रांति थी’
डॉ. रामबिलास शर्मा

‘यह पूर्णतया सिपाही विद्रोह था’
सर जॉन लारेंस, सीले

‘यह राष्ट्रीय विद्रोह था’
बेंजामिन डिजरायली

‘1857 का विद्रोह स्वतंत्रता संग्राम नहीं था’ आर.सी. मजमूदार

‘यह सभ्यता और बर्बरता का संघर्ष था’ टी.आर. होम्स

‘यह विद्रोह राष्ट्रीय स्वतंत्रता हेतु सुनियोजित युद्ध था’
वी.डी. सावरकर और अशोक मेहता

‘यह ईसाईयों के विरुद्ध एक धर्मयुद्ध था’ एल.आर.रीज

स्थायी बंदोबस्त

विशेषता- जमींदारों को भू-स्वामी स्वीकारा गया (लगान की दर -10/11 सरकार, 1/11 जमींदार)

भूमि पर जमींदारों का अधिकार पैतृक एवं हस्तांतरणीय

1794 में 'सूर्यस्त नियम' लागू

जन्मदाता-हॉल्ट मेकेंजी

कंपनी के 30% भूभाग पर (यूपी, मध्य प्रांत एवं पंजाब (कुछ बदलावों के साथ) में लागू)

यह व्यवस्था प्रत्येक महाल (गाँव) के साथ स्थापित की गई, कृषक के साथ नहीं

ग्राम प्रधान अथवा लंबरदार को भू-राजस्व वसूली हेतु उत्तरदायी बनाया गया।

अंग्रेजों की प्रमुख आर्थिक नीतियां

महालवाड़ी पद्धति

सर्वप्रथम तमिलनाडु के बारामहल में लागू

ग्राम समाज भूमिस्वामी था

रैयतवाड़ी व्यवस्था

सर्वप्रथम 1792 में मद्रास प्रेसीडेंसी में

ब्रिटिश भूभाग के 51% क्षेत्र पर (मद्रास, बंबई का कुछ हिस्सा, पूर्वी बंगाल, असम, कुर्ग)

'टॉमस मूनरो' और 'कैप्टन रीड' इससे संबंधित हैं।

विशेषता- किसानों से सीधे 33% भू-राजस्व की वसूली, जो किसान जितनी भूमि जोतता था उसे उसका स्वामी मान लिया जाता था।



नोट

राष्ट्रीय आय का प्रथम वैज्ञानिक आकलन- डी.बी. के आर वी राव

- अर्थ- “यह भारतीय संपत्ति एवं वस्तुओं का इंग्लैंड की ओर एकत्रफा प्रवाह था।”
- इस सिद्धांत को देने वाले प्रथम व्यक्ति- दादा भाई नौरोजी
- नौरोजी को ‘ग्रांड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया’ कहा जाता है।
- ‘इंग्लैंड डेब्ट टू इंडिया’ में इन्होंने पहली बार धन के बहिर्गमन सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

- नौरोजी ने ‘द वांट्स एंड मींस ऑफ इंडिया,’ ‘ऑन द कॉमर्स ऑफ इंडिया’ लेख में इसकी व्याख्या की।
- वर्ष 1905 में इसे 'Evil of all Evils' अर्थात् अनिष्ट कहा।
- ‘पावर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया’ नामक किताब 1901 में लिखी।

अन्य प्रतिपादकों में

धन का बहिर्गमन सिद्धांत

भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव

1. अनौद्योगीकरण - भारतीय हस्तशिल्प उद्योग का हास
2. भारतीय अर्थव्यवस्था का ग्रामीणीकरण
3. भारत में अनेक शहरों का पतन
4. भारत में ब्रिटिश पूँजी का आगमन एवं भारतीय पूँजीपतियों को हतोत्साहन
5. भारतीय कृषि का वाणिज्यीकरण

कृषि के वाणिज्यीकरण (19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में) के प्रभाव-

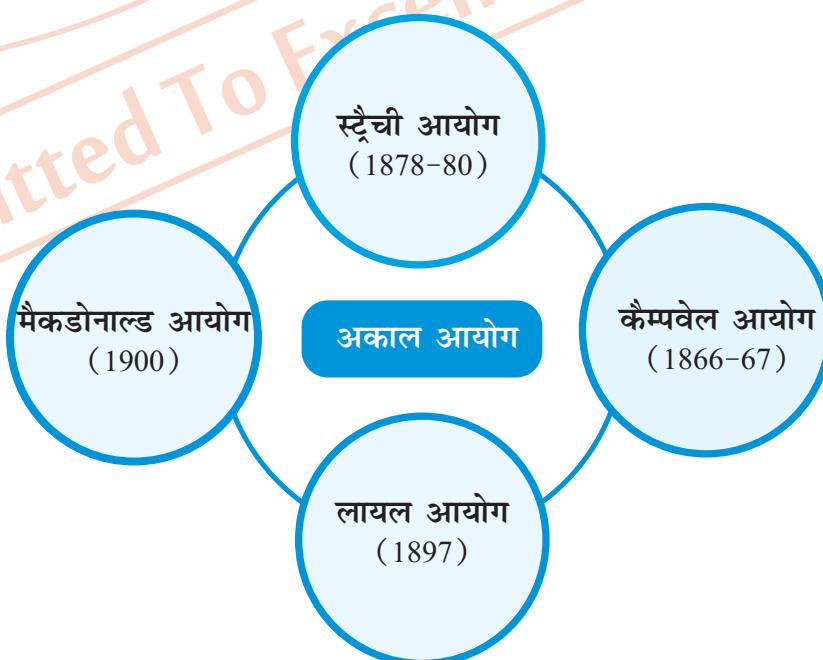
1. किसानों को हानि
2. ग्रामीण ऋणग्रस्तता में वृद्धि
3. गरीबी में वृद्धि
4. नकदी फसलों को महत्व इससे खाद्यान्नों की कमी हुई।

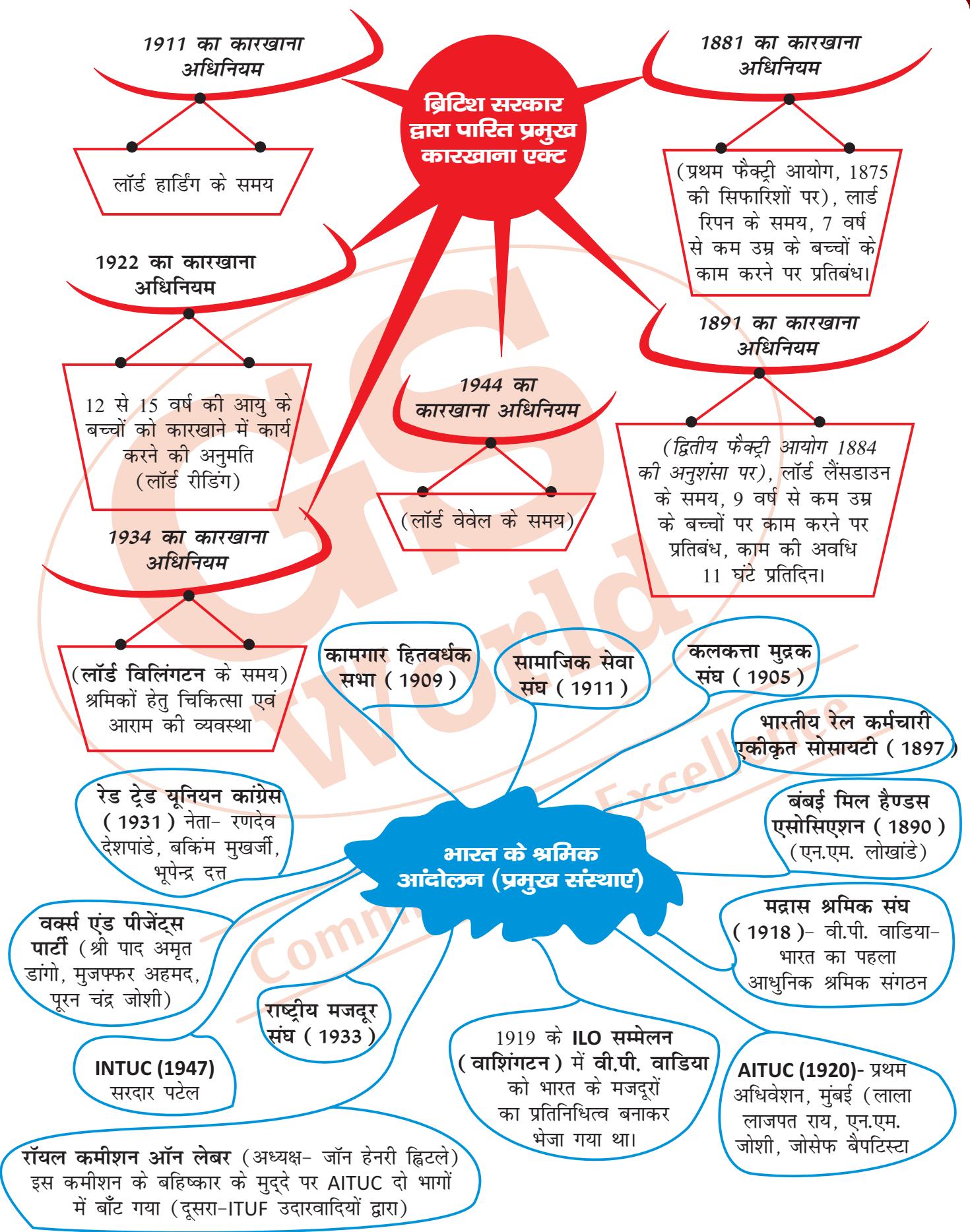
नोट:-

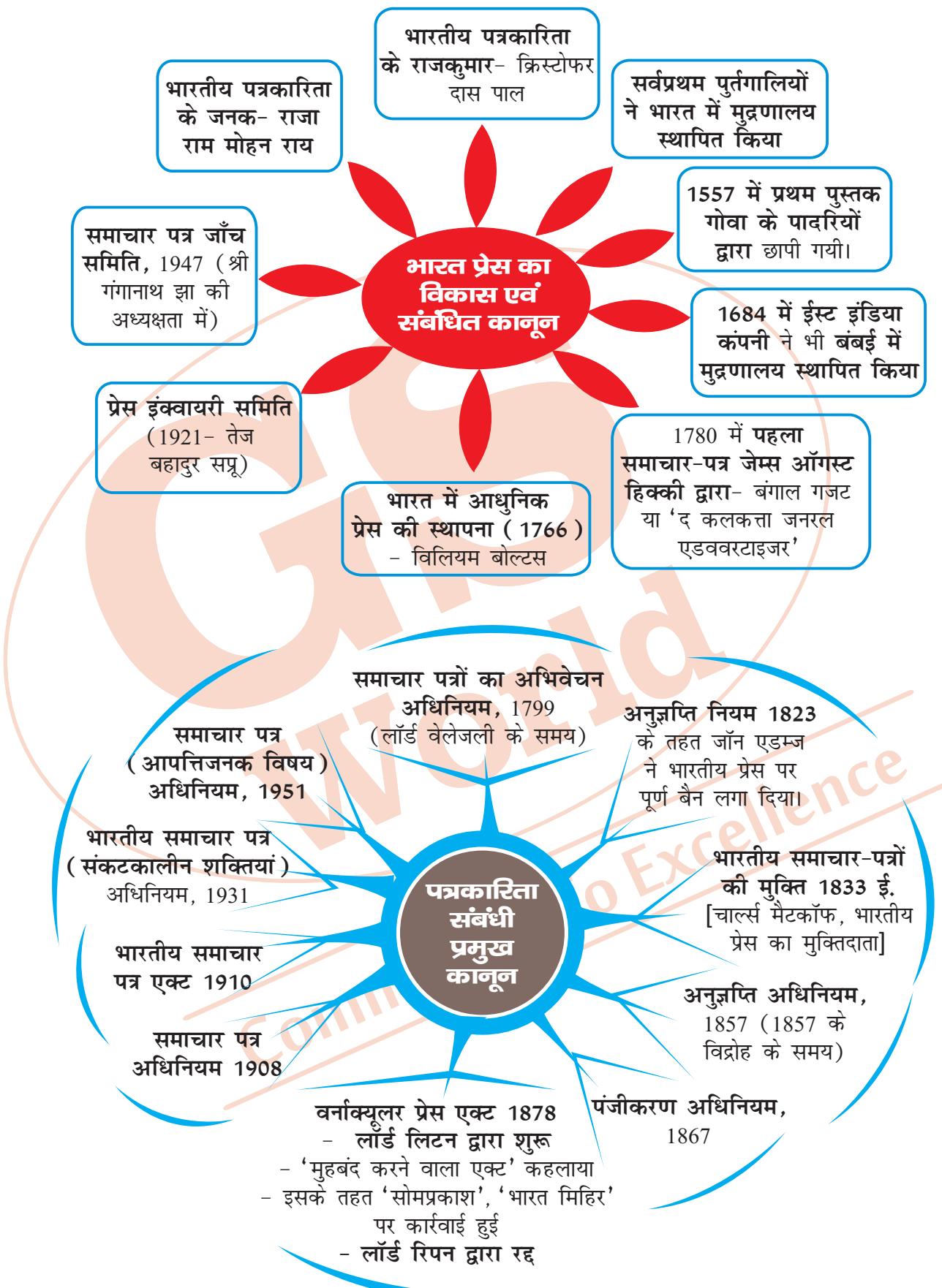
19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में आधुनिक उद्योगों का विकास हुआ जैसे:-

- 1853 में बंबई में ‘सूती वस्त्र’ (कावस जी भाई)
- 1855 में रिशरा में पहली जूट मिल
- 20 वीं सदी में देश में चीनी, सीमेंट आदि उद्योग स्थापित हुए।

1. महादेव गोविंद रानाडे- Essays on Indian Political Economy (1898)
रानाडे ने नौरोजी के ‘ड्रेन ऑफ वेल्थ थोरी’ को नकारते हुए भारत में गरीबी का प्रमुख कृषि के पिछड़ेपन को माना
2. रमेश चंद्र दत्त (अर्थशास्त्री) के लेख ‘इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया’ में उल्लेख। गोपाल कृष्ण गोखले, जी सुब्रह्मयम अच्यर, पृथ्वीचंद्र राय भी प्रमुख आर्थिक आलोचकों में से थे।
3. नोट: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने कलकत्ता, अधिवेशन (1896) में आधिकारिक तौर पर ‘धन के बहिर्गमन सिद्धांत’ को स्वीकृति दी थी।







ब्रिटिश कालिन समाचार एजेसियां

- एसोसिएट प्रेस ऑफ इंडिया- 1905
- फ्री प्रेस न्यूज सर्विस- 1927
- यूनाइटेड प्रेस ऑफ इंडिया- 1934
- प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया- 1947

आंग्ल- प्राच्य विवाद

1. लोक शिक्षा के मुद्दे पर था।
2. **प्राच्य भाषा के समर्थक (Orientalists)-** भारत में शिक्षा के प्रचार का माध्यम संस्कृत या अरबी हो (प्रमुख समर्थक एच.टी. प्रिंसेप, एच.एच. विल्सन)
3. **आंग्ल भाषा के समर्थक -** भारत में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी (समर्थक- मुनरो, एलफिन्स्टन, मैकाले)

शिक्षा का अधोमुखी नियन्त्रण सिद्धांत

भारतीय उच्च वर्गों को शिक्षित किया जाए जिनसे छनकर शिक्षा का प्रसार निम्न वर्ग तक पहुँचेगा

जोनाथन डंकन (1791)
ने बनारस में संस्कृत
विद्यालय खोला

ब्रेथन स्कूल (1849)
जे इंडी ब्रेथन ने खोला
(इसका संचालन आगे लॉर्ड डलहौजी) ने किया।

डेविड हेयर और
राजा राम मोहन राय
के प्रयत्नों से 1817 में
कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज

1813 के चार्टर एक्ट
में एक लाख
रुपये प्रावधान

विलियम जोंस ने
कालिदास की
'अभिज्ञान शाकुन्तलम'
का अंग्रेजी अनुवाद किया

'ए कोड ऑफ जेंटलॉज'
(मनुस्मृति का अंग्रेजी अनुवाद)

वारेन हेस्टिंग्स द्वारा
1781 में कलकत्ता
मदरसा की स्थापना

1800 में लॉर्ड वेलेजली
ने कंपनी के अधिकारियों
के प्रशिक्षण हेतु 'फोर्ट
विलियम कॉलेज'
(कलकत्ता) में की।

'विलियंस' द्वारा भगवद्गीता
और हितोपदेश का
अंग्रेजी अनुवाद (1785)

सर विलियम जोंस
द्वारा कलकत्ता में
'एशियाटिक सोसायटी'
की स्थापना

सर्वप्रथम ऑकलैंड द्वारा लागू

**चार्ल्स बुड
डिस्पेच, 1854**

जुलाई, 1854 में

'भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा' कहते हैं।

सिफारिशें- 1. अंग्रेजी भाषा के साथ देशी भाषा पर जोर
2. पाश्चात्य शिक्षा का प्रचार 3. गाँवों में देशी भाषा, जिसमें एंग्लो-
वर्नाकुलर विद्यालय 4. निजी स्कूलों हेतु अनुदान
5. पांच प्रांतों में लोक शिक्षा विभाग स्थापित (1855 में
लोक शिक्षा विभाग गठित) 6. 1857 में कलकत्ता, मुंबई, मद्रास में
विश्वविद्यालय स्थापित 7. सरकारी स्कूलों में धर्मनिरपेक्ष शिक्षा को बढ़ाया

हैंटर शिक्षा आयोग (1882-83)

प्राथमिक शिक्षा
स्थानीय भाषा में

सुझाव

प्राथमिक पाठशालों का नियंत्रण
नवसंस्थापित नगर एवं जिला
बोर्डों को दिया जाए।

माध्यमिक शिक्षा साहित्यिक एवं
व्यापारिक खंड पर बंटा हो।

प्रेसीडेंसी नगरों के अतिरिक्त अन्य शहरों,
गाँवों में, स्त्री शिक्षा प्रोत्साहन का सुझाव।

अंग्रेजों के समय भारत में शिक्षा

1902 में सर टार्मस
रेले आयोग की सिफारिश पर लाया गया

भारतीय सदस्य (सैयद
हुसैन बिलग्रामी, गुरुदास बनर्जी)

भारतीय वि.वि. एक्ट, 1904

उच्च शिक्षा हेतु
5 लाख रु. प्रतिवर्ष
5 वर्षों हेतु स्वीकृत

निजी कॉलेजों पर
भी कठोर नियंत्रण

गवर्नर जनरल को वि.वि.
की क्षेत्रीय सीमाएं निर्धारित
करने का अधिकार

मुख्य प्रावधान

भारत में 'शिक्षा
महानिदेशक' (एच.डब्ल्यू.
ऑरेज) की नियुक्ति

गोखले ने इस व्यवस्था
को देशभर में लागू करने
हेतु विधान परिषद् में
आवाज उठाई

वि.वि. पर सरकारी
नियंत्रण बढ़ा दिया गया।

शिक्षा पर सरकारी प्रस्ताव, 1913

सर्वप्रथम (1906) बड़ौदा की
रियासत ने प्राथमिक शिक्षा
को अनिवार्य किया।

प्रत्येक प्रांत में
वि.वि. की स्थापना

प्रस्ताव के मुख्य बिंदु

अनिवार्य शिक्षा का
उत्तरदायित्व लेने से इंकार

मुख्य बातें-

- भारतीय सदस्य- 1. आशुतोष मुखर्जी 2. जियाउद्दीन अहमद
- स्कूली शिक्षा 12 वर्ष की हो
- वि.वि. नियम उदार हों
- स्नातक 3 वर्षीय
- महिला शिक्षा को प्रोत्साहन

सैडलर वि.वि. आयोग 1917-19 सिफारिशें

अध्यक्ष- एम.ई. सैडलर

नोट

1919 माटेंग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों के तहत प्रांतों में शिक्षा विभाग एक निर्वाचित मंत्री के
अधीन कर दिया गया तथा केन्द्रीय अनुदान बंद कर दिया गया, जिससे शिक्षा का
स्तर गिरा (इसने शिक्षा को प्रांतों के अधीन कर दिया)





उदारवादियों की नीतियाँ

भारतीयों में राष्ट्रप्रेम एवं चेतना जागृत करना।

ब्रिटिश जनमत एवं ब्रिटिश भारत का भारतीयों के पक्ष में सुधारों हेतु प्रेरित करना।

भारतीय उद्योगों को बढ़ावा देने हेतु स्वदेशी प्रयोग, विदेशी का बहिष्कार

कांग्रेस पूर्व की प्रमुख राजनीतिक संस्थाएं

कलकत्ता भारतीय एसोसिएशन या इंडियन एसोसिएशन को कांग्रेस का पूर्ववर्ती माना जाता है।

1851 में 'जर्मींदारी एसोसिएशन' और 'बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसायटी' का विलय होकर 'ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन' बना।

1838 में बनी जर्मींदारी एसोसिएशन (लैंड होल्डर्स एसोसिएशन) भारत की पहली संगठित राजनीतिक सभा थी।

कांग्रेस पार्टी के संदर्भ में प्रसिद्ध इतिहासकार रजनीपाम दत्त ने कहा है कि "कांग्रेस ने साम्राज्यवाद के साथ लड़ाई और सहयोग दोनों किया है।"

1861 एवं 1892 के भारत परिषद् अधिनियम में किए गए सुधार उदारवादियों के दबाव में किए गए।

संवैधानिक एवं प्रशासनिक सुधार की मांग जैसे- सरकारी सेवाओं में भारतीयकरण

1886 में लोक सेवा आयोग

भारतीय व्यव की समीक्षा हेतु 'वेल्बी आयोग'

राष्ट्रीय आंदोलन में उदारवादियों का योगदान

तत्कालीन भारतीय समाज को नेतृत्व प्रदान किया।

1885 के कांग्रेस के गठन के बाद सरकार और कांग्रेस के रिश्तों में कड़वाहट

19वीं सदी में राष्ट्रवाद के उदय के कारण

भारत के अतीत का पुनः अध्ययन

मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का उत्थान

सुधार आंदोलनों का प्रभाव

विदेशी आधिपत्य का परिणाम

पाश्चात्य चिंतन, शिक्षा एवं साहित्य का प्रभाव

तत्कालीन विदेशी घटनाओं का प्रभाव



कांग्रेस का गठन

28 दिसंबर 1885 में बंबई में 'अखिल भारतीय कांग्रेस' का गठन (गोकुलदास तेजपाल संस्कृत स्कूल)

ए.ओ. ह्यूम, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी तथा आनंद मोहन बोस कांग्रेस के प्रमुख वास्तुकार थे

आरंभ में इसका नाम 'भारतीय राष्ट्रीय संघ' रखा गया था। दादाभाई नौरोजी के सुझाव पर बदलकर 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' किया गया

वहीं सेप्टी वाल्व के प्रति उत्तर में 'तड़ित चालक' का सिद्धांत दिया गया

कांग्रेस की स्थापना संबंधित 'सेप्टी वाल्व सिद्धांत' लाला लाजपत राय ने दिया था

ए.ओ. ह्यूम द्वारा 1883 में 'अखिल भारतीय कांग्रेस' का आयोजन

गठन के समय वायसराय लॉर्ड डफरिन

प्रथम अधिवेशन में अध्यक्ष W.C. Benergee (72 प्रतिनिधि) थे, महासचिव ह्यूम थे

अन्य तथ्य

भारतीय सुधार समिति (1887)- ब्रिटेन में दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में उदारवादी/नरमपंथी नेताओं ने अपनी मार्ग मनवाने के उद्देश्य से स्थापित की थी

कर्जन- मेरी इच्छा है कि कांग्रेस के शांतिपूर्वक मरने में मदद करना

डफरिन- कांग्रेस जनता के अल्पसंख्यक वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, कांग्रेस राष्ट्रद्रोहियों की संस्था है।

बंकिमचंद चटर्जी- कांग्रेस के लोग यदों के भूखे हैं।

कांग्रेस संबंधी प्रसिद्ध कथन

विपिन चंद्रपाल- कांग्रेस याचना संस्था है

लाला लाजपत राय- कांग्रेस सम्मेलन शिक्षित भारतीयों का वार्षिक मेला है

तिलक- यदि हम वर्ष में एक बार मेंढक की तरह टर्हाए तो हमें कुछ नहीं मिलेगा।

लॉर्ड कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियां

बढ़ते पश्चिमीकरण आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान का बढ़ना

उदय के कारण

अंग्रेजी सत्ता के स्वरूप की सही पहचान होना।

उदारवादियों से असंतोष

अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव

शिक्षा का विकास

राष्ट्रवादी विचारधारा वाले वर्ग का उदय

उग्र-राष्ट्रवादी चरण (1905-1919)

1890 के पश्चात् भारत में उग्र राष्ट्रवाद का उदय तथा 1905 तक पूर्व स्वरूप

प्रमुख नेता
अश्विनी दत्त, लाल-बाल-पाल, अरविंद घोष, चिपलंकर बंधु, राज नारायण बोस, आदि।

बंगाल विभाजन

1905 के कांग्रेस अधिवेशन में 'बंगभंग विरोधी अभियान' और 'स्वदेशी' का समर्थन किया गया

1906 के अधिवेशन में नौरोजी ने 'स्वशासन' की मांग की

19 जुलाई, 1905 को घोषणा तथा 16 अक्टूबर, 1905 को प्रभावी हुआ

बंगाल विभाजन का मुख्य उद्देश्य- कांग्रेस एवं स्वतंत्रता आंदोलन को दुर्बल करना और मुस्लिम संप्रदायवाद को उभारना था।

1. पश्चिमी बंगाल (राजधानी- कलकत्ता)
2. पूर्वी बंगाल (राजधानी ढाका, चँटगाँव, मालदा, राजशाही, त्रिपुरा के पहाड़ी क्षेत्र)

लार्ड हार्डिंग के समय 1911 के दिल्ली दरबार में बंगाल के विभाजन को रद्द करने की घोषणा हुई।

16 अक्टूबर को 'शोक दिवस' के रूप में आंदोलनकारियों ने मनाया, टैगोर ने 'अमार सोनार' गीत लिखा।

नोट

- राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् 15 अगस्त 1906 को सदगुरु दास बनर्जी द्वारा स्थापित
- बंगाल कैमिकल्स एवं फार्मा-आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय द्वारा स्थापित।

बाल गंगाधर तिलक

'लोकमान्य' की उपाधि

प्रसिद्ध कथन- 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा'

1 अगस्त, 1920
मृत्यु (2020 में 100 वर्ष)

'पूर्ण स्वतंत्रता' या 'स्वराज्य' के सबसे प्रारंभिक एवं मुख्य प्रस्तावकों में से एक

सूरत अधिवेशन
1907

- अध्यक्ष पद और स्वदेशी आंदोलन के मुद्दे पर उग्रवादियों एवं उदारवादियों में मतभेद
- उग्रवादी तिलक को अध्यक्ष बनाना चाहते थे,
- उदारवादियों के वर्चस्व के कारण रास बिहारी बोस अध्यक्ष बने।

- बेलेंटाइन चिरोल ने 'इंडियन अनरेस्ट' पुस्तक में तिलक को 'भारतीय अशांति का जनक' कहा।
- 1916 के लखनऊ पैकट पर तिलक और जिन्ना ने हस्ताक्षर किए थे।
- केसरी (मराठी भाषा), मराठा/महराटा (अंग्रेजी भाषा) नामक समाचार पत्र निकाले
- 'दक्कन एजुकेशन सोसायटी' (1884) के संस्थापकों में से
- महाराष्ट्र में 'गणेश चतुर्थी' और 'शिवाजी उत्सव' लोकप्रिय बनाया।
- 'गीता रहस्य' एवं 'आर्कटिक होम' नामक पुस्तकों लिखीं
- 1916 में बेलगाम में अखिल भारतीय होमरूल लीग की स्थापना, महाराष्ट्र (बॉम्बे को छोड़कर), मध्य प्रांत, बगर, कर्नाटक।

नोट:

तिलक ने कभी कांग्रेस के वार्षिक राष्ट्रीय सम्मेलन की अध्यक्षता नहीं की।

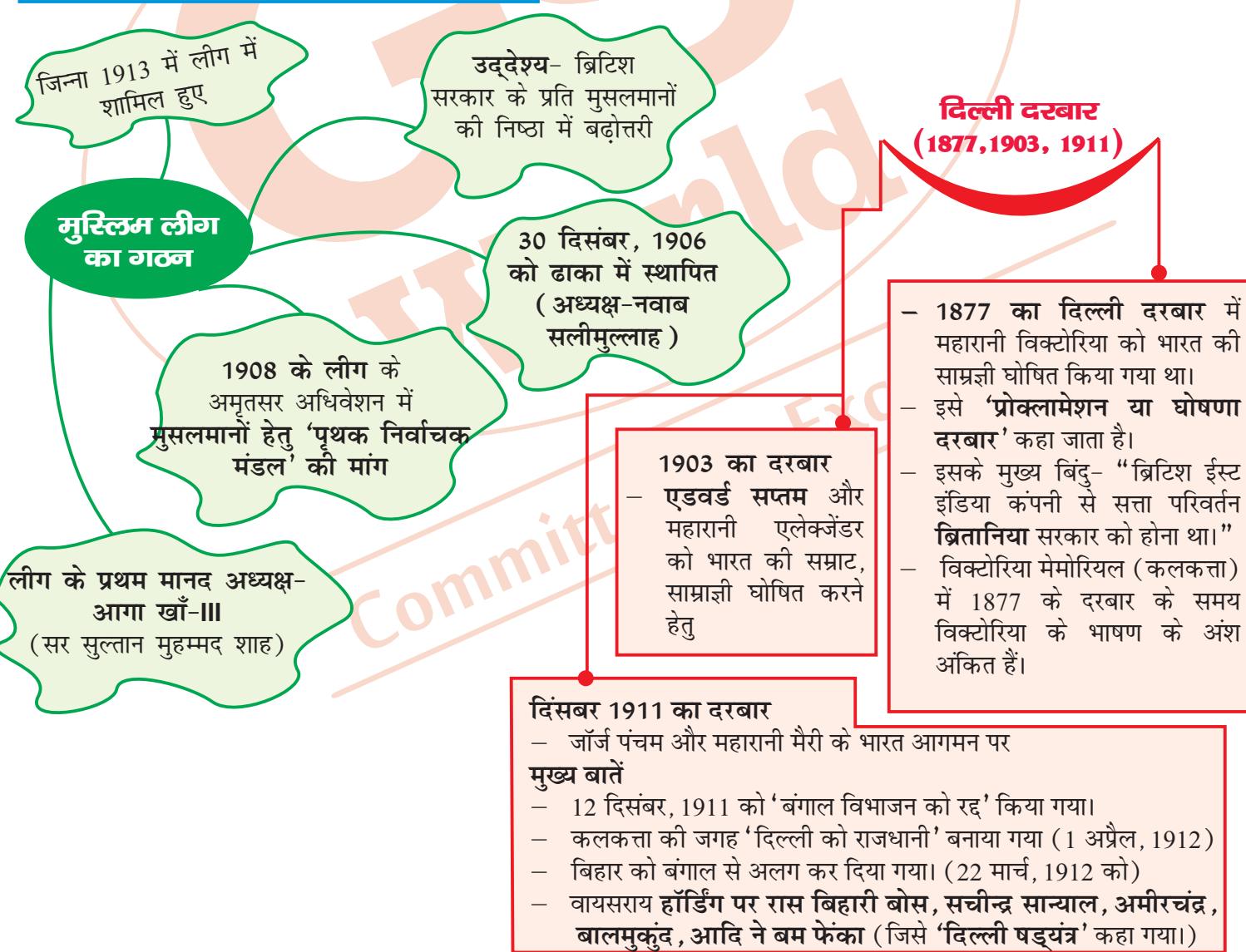
अंतर

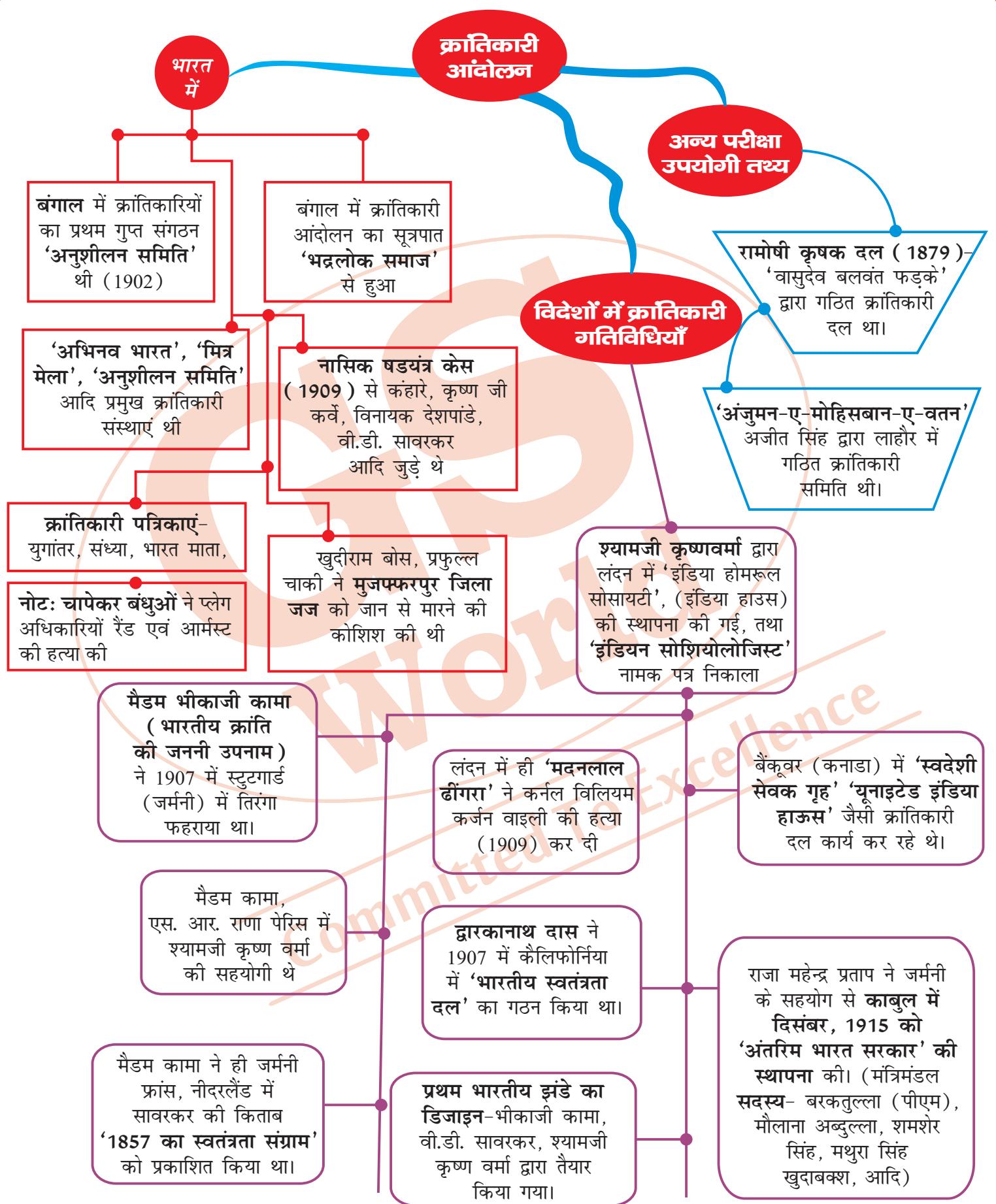
उग्रवादी

उदारवादी

- ब्रिटिश पर कोई विश्वास नहीं
- ब्रिटिश से संबंध भारत का शोषण बढ़ाएंगे। (अतः समाप्त किया जाए)
- इन्हें आम जनता की शक्ति पर पूरा भरोसा
- सामाजिक आधार शिक्षित एवं निम्न मध्यवर्गीय लोगों तक
- स्वराज की माँग
- असंवैधानिक तरीकों का प्रयोग

- अंग्रेजी राज पर भरोसा था।
- ब्रिटेन से संबंध भारत के समुचित विकास हेतु जरूरी
- इनका मानना था कि आंदोलन मध्यवर्ग तक सीमित रहे
- जर्मांदारों एवं उच्च मध्य वर्गीय लोगों तक सामाजिक आधार
- संवैधानिक सुधारों की माँग
- केवल संवैधानिक दायरे में रहकर लक्ष्य पाना चाहते थे।





1937-1743 तक हिन्दू
महासभा के अध्यक्ष रहे

'अभिनव भारत
सोसायटी' का गठन

'मैजिनी की आत्मकथा'
का मराठी में
अनुवाद किया

सावरकर बंधुओं
(विनायक, गणेश) ने
'मित्रमेला' नामक गुप्त
संगठन नासिक में
(1899) बनाया

लंदन में इंडिया हाउस
का कार्यभार ग्रहण किया

विनायक दामोदर सावरकर

'स्वदेशी आंदोलन' एवं
तिलक की 'स्वराज
पार्टी' से जुड़े

'फ्री इंडिया सोसायटी'
का गठन

उद्देश्य- विदेशों में रहे
भारतीयों को ब्रिटिश
शासन के विरुद्ध
संगठित करना

इसके तहत 'बर्लिन
कमेटी फॉर इंडियन
इंडिपेंडेंस' की
स्थापना हुई

जिम्मेदारी योजना

1915 में जर्मन विदेश
मंत्रालय के सहयोग
से लायी गयी।

1 नवंबर, 1913 को
लाला हरदयाल द्वारा
सैन फ्रांसिस्को में गदर
पार्टी की स्थापना

सैन फ्रांसिस्को में
'युगांतर आश्रम'
की स्थापना

वीरेंद्र चट्टोपाध्याय,
भूपेन्द्र दत्त, लाला
हरलाल संबंधित थे

प्रमुख लोग- रामचंद्र,
करतार सिंह सराका,
बरकतुल्ला, भाई परमानंद

नवंबर, 1913 में
सोहन सिंह भाखना
ने 'हिन्दू एसोसिएशन
ऑफ अमेरिका' की
स्थापना की

1916 का लखनऊ
अधिवेशन (अध्यक्ष-
अंबिकाचरण मजमूदार)

1857 की स्मृति में
'गदर' या 'हिन्दुस्तान
गदर' पत्रिका (साप्ताहिक)

गरमदल का कांग्रेस
में पुनः प्रवेश हुआ

मुख्य बातें

'कामागाटामारू'
एक 'जहाज' था

कनाडा में भारतीयों के
प्रवेश से जुड़ा विवाद
(वैकूवर तट)

कांग्रेस एवं लीग
द्वारा सरकार से मांग

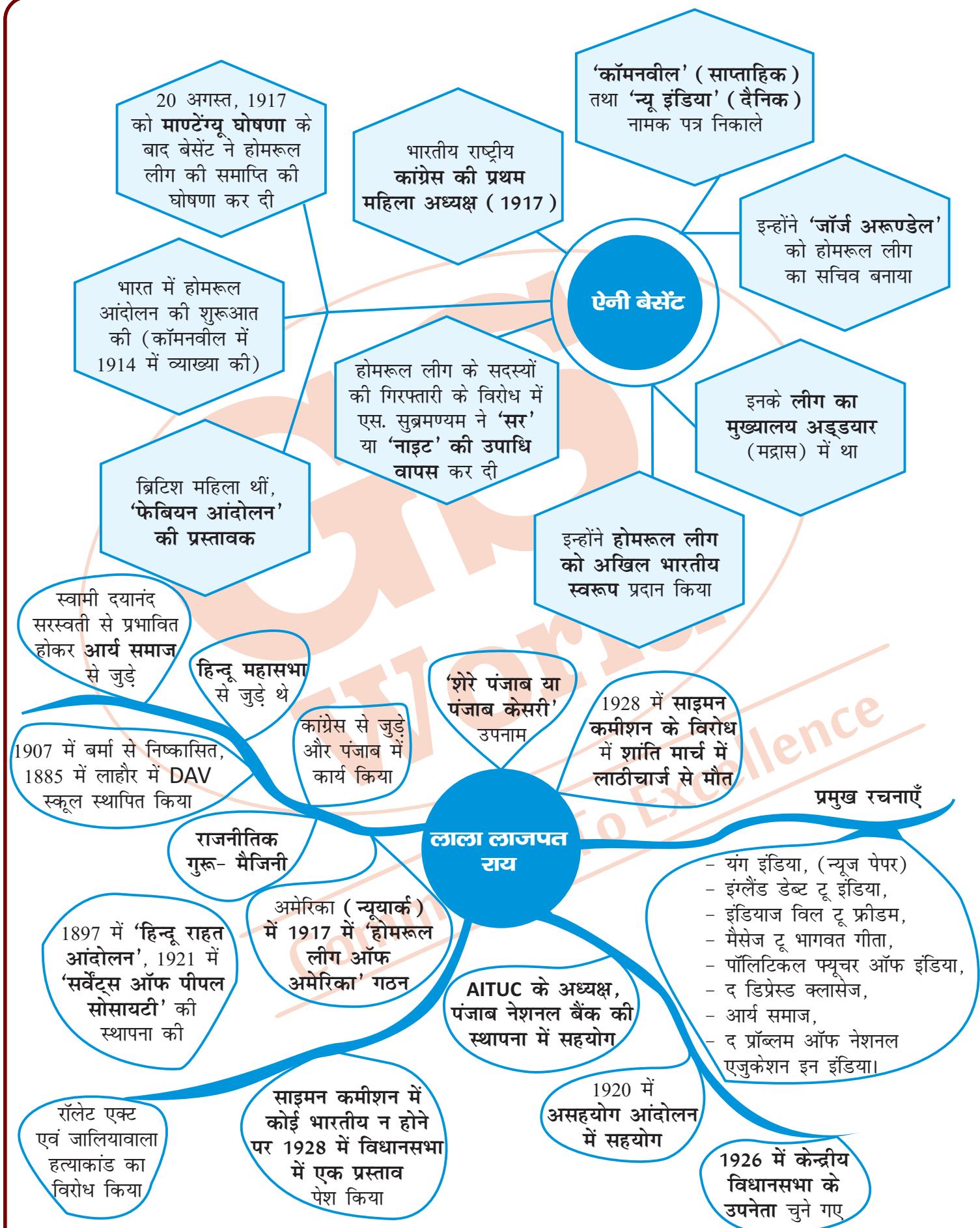
कांग्रेस द्वारा उत्तरदायी
शासन की मांग
को लीग ने
स्वीकार लिया

इसके लिए सोहनलाल
पाठक की अगुवाई में
'शोर कमिटी' बनी थी

जहाज कलकत्ता
के बजबज
लाया गया

- (क) भारत को उत्तरदायित्वपूर्ण शासन देने की शीघ्र घोषणा
- (ख) प्रांतीय व्यवस्थापिका में भारतीयों की संख्या एवं अधिकार बढ़े
- (ग) वायसराय की कार्यकारिणी परिषद्
में आधे से ज्यादा पद भारतीयों हेतु
रखे जाएं।

कांग्रेस ने लीग की मुस्लिमों
हेतु 'पृथक निर्वाचन व्यवस्था'
की मांग को मान लिया
(केन्द्रीय व्यवस्थापिका में
1/9 तथा प्रांतीय
में यह अलग-अलग था)



भारतीय राजनीतिक
में महात्मा गांधी का
आगमन सर्वप्रमुख घटना

1919–1939 का राष्ट्रवादी दौर

प्रथम विश्व युद्ध
की समाप्ति का भारत
पर असर हुआ जिसने
भारतीय जनता में
राष्ट्रवाद को पुनः
जीवित किया

महात्मा गांधी

गांधी का
परिचय

गांधी की प्रमुख
रचनाएं-

सत्य के साथ
मेरे प्रयोगों
की कहानी

हिन्दू
स्वराज

मेरे सपनों
का भारत

रचनात्मक
कार्यक्रम—
इसका अर्थ
और स्थान

माता- कस्तूरबा गांधी
पिता- करमचंद गांधी

मृत्यु 30 जनवरी,
1948 (बिड़ला हाऊस
में नाथुराम गोडसे
द्वारा हत्या)
गांधी को 'राष्ट्रपिता
सुभाष चन्द्र बोस
ने कहा था

डरबन में 1904
में 'फीनिक्स आश्रम'
स्थापित किया

1894 में
'नटाल इंडियन
कांग्रेस' की
स्थापना

द. अफ्रीका
गांधी के कार्य

'टॉलस्टॉय फार्म'
की स्थापना

'इंडियन ओपिनियन'
नामक अखबार
निकाला

1919 का माणेंगू
चेम्सफोर्ड सुधार

जन्म 2 अक्टूबर, 1969
पोरबंदर (2 अक्टूबर को
संयुक्त राष्ट्र ने 2007 में
'विश्व अहिंसा दिवस'
मनाने की घोषणा
की थी)

गोपाल कृष्ण गोखले
महात्मा गांधी के
राजनीतिक गुरु थे।
चम्पारण सत्याग्रह
के दौरान रवींद्रनाथ
टैगोर ने गांधी को
'महात्मा' की
उपाधि दी थी।

1917 की रूसी क्रांति
(लेनिन द्वारा सोवियत
संघ की स्थापना) ने
भी भारतीयों को
प्रभावित किया

1915 में गांधी ने
अहमदाबाद में 'सत्याग्रह
आश्रम' की स्थापना
की जिसे बाद में 1917
में साबरमती नदी के
किनारे स्थानांतरित
कर दिया गया

गांधी ने 1924
में हुए 'बेलगाम
कांग्रेस अधिवेशन'
की अध्यक्षता
की थी

गुजरात के
व्यापारी दादा अब्दुल्ला
का मुकदमा लड़ने
द. अफ्रीका
गए (मई, 1893)

7 जून, 1893
को पीटरमैरिट जर्बर्ग
स्टेशन (द. अफ्रीका)
पर उन्हें ट्रेन से बाहर
गोरे अंग्रेजों द्वारा
फेंक दिया
गया था।

तीनकठिया पद्धति
पर आधारित नील
की खेती का
मुद्दा

चंपारण
सत्याग्रह, 1917

गांधी ने अंग्रेजों को
'तीनकठिया पद्धति'
की समाप्ति
हेतु मनाया

भारत में
'सत्याग्रह' का
पहला प्रयोग

राजकुमार शुक्ल
के बुलावे पर
गांधी चंपारण गए

नोट: गांधी ने 'ग्रीन पम्पलेट' किताब में दक्षिण अफ्रीका में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की स्थिति का वर्णन किया था।

खेड़ा सत्याग्रह (जून, 1918)

भू-राजस्व
माफ नहीं
करने के मुद्दे
पर

गांधी ने 'कर
नहीं' आंदोलन
चलाया

गांधी ने सरदार
पटेल के साथ
किसानों का
समर्थन किया

रॉलेट एक्ट (फरवरी, 1919)

- 1917 में सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता में समिति की सिफारिश पर पारित
- वायसराय- लॉर्ड चेम्सफोर्ड
- काला कानून कहलाया
- 19 मार्च, 1919 को लागू (39 वर्ष के लिए)
- इस कानून को 'बिना वकील, बिना अपील तथा 'बिना दलील का कानून' कहा जाता है।
- रॉलेट कमिटी को 'सैडिसन कमिटी' भी कहते हैं
- भारत का प्रथम जन आंदोलन 'रॉलेट एक्ट' आंदोलन था

अहमदाबाद आंदोलन (फरवरी, 1918)

मिल मालिकों द्वारा
'प्लेग बोनस' समाप्त
करने के मुद्दे पर

गांधी ने यहीं
'दृस्टीशिप का
सिद्धांत' दिया

नोट:
गांधी ने पहली
बार भूख हड्डताल
यहीं पर
किया था

गांधी ने अनुसुईया बन,
शंकर लाल बेंकर के साथ
मिलकर 'अहमदाबाद टेक्सटाइल
लेबर एसोसिएशन (1920)
की स्थापना की जो कि भारत
का सबसे पुराना टेक्सटाइल
मजदूर संघ है

विरोध स्वरूप इस्तीफा/उपाधि

महात्मा गांधी ने
'कैसर-ए-हिन्द' की
उपाधि वापस कर दी

शंकर नायर
ने वायसराय की
कार्यकारिणी
परिषद् के सदस्य
इस्तीफा

जमनालाल बजाज
ने 'राय बहादुर'
की उपाधि लौटा दी।

इस हत्याकांड
के समय पंजाब में
चमनदीप के नेतृत्व
में 'डंडा फौज'
बनाया

कांग्रेस ने इस
घटना की जांच हेतु
मदन मोहन मालवीय
की अध्यक्षता में समिति
बनाई (सदस्य- मोतीलाल
नेहरू, महात्मा गांधी,
सी.आर.दास, तैयबजी,
जयकर इत्यादि)

जलियाँवाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल, 1919)

जनरल ओ डायर
द्वारा गोली
चलवाया गया

पंजाब का ले. गवर्नर
माइकल डॉयर था [इसकी
हत्या ऊधम सिंह (अन्य नाम- राजा
मो. सिंह आजाद) द्वारा 13 मार्च,
1940 को लंदन में की गई]

पंजाब के नेता सैफूद्दीन
किचलू और सत्यपाल की
गिरफ्तारी के विरोध में
जलियाँवाला बाग में सभा

'इंडेमनिटी एक्ट या वाइट
बॉशिंग बिल' को अंग्रेज
अधिकारियों को बचाने
हेतु सरकार द्वारा पारित
किया गया था

जांच हेतु
'हंटर कमिटी' का
गठन (डिस्ट्रॉडर इंक्वायरी
कमिटी) सदस्य- चिमनलाल सीतलवाड़,
जस्टिस रस्किन, राइस, सर
जॉर्जबरो, सर टॉमस स्मिथ)

अखिलयोग आंदोलन

रैलेट एक्ट, जालियांवाला
बाग हत्याकांड और
खिलाफत के मुद्दे पर
गांधी द्वारा 1 अगस्त,
1920 में प्रारंभ

वायसराय
लॉर्ड रीडिंग था

आंदोलन का प्रस्ताव गांधी जी
ने तैयार किया तथा
प्रस्ताव को 'सी.आर.दास'
द्वारा पेश किया गया था

'तिलक स्वराज्य
फंड' के तहत 1 करोड़
से अधिक की
राशि इकट्ठी
हुई।

आंदोलन के दौरान
प्रथम व्यक्ति-
मुहम्मद अली

आंदोलन के दौरान
वकालत छोड़ने वाले
प्रमुख लोग - मोतीलाल
नेहरू, जवाहरलाल नेहरू,
सी.आर. दास,
राजगोपालाचारी,
सैफुद्दीन

अली बंधुओं ने
इस आंदोलन के दौरान
कराची में कहा था
कि "मुसलमान का
सेना में रहना धर्म
के खिलाफ है"

आंदोलन में
महिला, छात्र,
किसान, मुसलमान,
व्यापारी सभी ने
सहयोग किया

17 नवंबर, 1921 को 'प्रिंस
ऑफ वेल्स' आगमन
का विरोध हुआ।

5 फरवरी, 1922 को
चौरी-चौरा कांड
(अब चौरी-चौरा जनाक्रोश)
के बाद गांधी जी ने
11 फरवरी, 1922
को आंदोलन को
स्थगित कर दिया

पाश्चात्य बंगाल
में आंदोलन के
नेता- जे.एम.
सेन गुप्ता थे

स्थानीय आंदोलन-
अवधि किसान आंदोलन,
एका आंदोलन
(यू.पी.) मोवला
(केरल) आदि

खिलाफत का मुद्दा

1919 के शुरू में
मो. अली, शौकत अली,
मौलाना आजाद,
अजमल खां, हसरत मोहानी
के नेतृत्व में
'खिलाफत कमिटी'
का गठन

खिलाफत कमेटी
का उद्देश्य तुर्की के प्रति
ब्रिटेन के खिलाफ को बदलने
हेतु ब्रिटेन पर दबाव
डालना था

नवंबर, 1919 में
'खिलाफत का अखिल
भारतीय सम्मेलन' दिल्ली में
(अध्यक्षता महात्मा
गांधी)

तिलक ने शुरू
में गांधी द्वारा खिलाफत
के सहयोग का
विरोध किया था

गांधी जी अखिल
भारतीय खिलाफत
कमेटी के अध्यक्ष थे।
उन्होंने इसे हिन्दू- मुस्लिम
एकता मंच के रूप
में देखा

खिलाफत असहयोग आंदोलन की तीन मांगें-

1. तुर्की के साथ सम्मानजनक व्यवहार
2. पंजाब में हुई ज्यादतियों का निराकरण
3. स्वराज की स्थापना

नोट:- क्रांतिकारी विचारधारा के
सभी प्रमुख नेताओं ने
असहयोग आंदोलन में
सक्रिय भूमिका निभाई थी



स्वराज पार्टी का गठन, 1923



हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (1924)

19वीं सदी के दूसरे एवं तीसरे दशक में क्रांतिकारी गतिविधियाँ

काकोरी कांड

अगस्त 1925 को सहारनपुर- लखनऊ 8 डाउन रेलगाड़ी

यह घटना हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) का सबसे प्रमुख कार्य था

रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खां, राजेन्द्र लाहिड़ी और रोशन सिंह आदि पर काकोरी घट्यन्त्र का मुकदमा चला वहाँ चंद्रशेखर आजाद फरार हो गए

सचीन्द्र सांन्याल की पुस्तक 'बंदी जीवन'

स्थापना- अक्टूबर, 1924 कानपुर
उद्देश्य- सशस्त्र क्रांति के माध्यम से औपचारिक सत्ता को उखाड़ फेंकना तथा यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ इंडिया की स्थापना करना



हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA)

केन्द्रीय विधानसभा बम घटना 8, अप्रैल, 1929

‘ट्रेड डिस्प्यूट बिल’, ‘पब्लिक सेफ्टी बिल’ के विरोध में भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने बम फेंका था

उद्देश्य- “किसी की हत्या नहीं अपितु सरकार को विरोध से अवगत कराना तथा बहरे को सुनाना था”

चटगाँव शत्रागार लूट (अप्रैल, 1930)

- सूर्यसेन नेतृत्वकर्ता (अन्य सहयोगी- अनंत सिंह, गणेश घोष, लोकीनाथ बाउल)
- सूर्यसेन हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी, (चटगाँव शाखा) के प्रमुख थे।
- सूर्यसेन शिक्षक थे, (‘मास्टर दा’ उपनाम)
- सूर्यसेन का कथन- ‘सहृदयता क्रांतिकारी का विरोध गुण है’

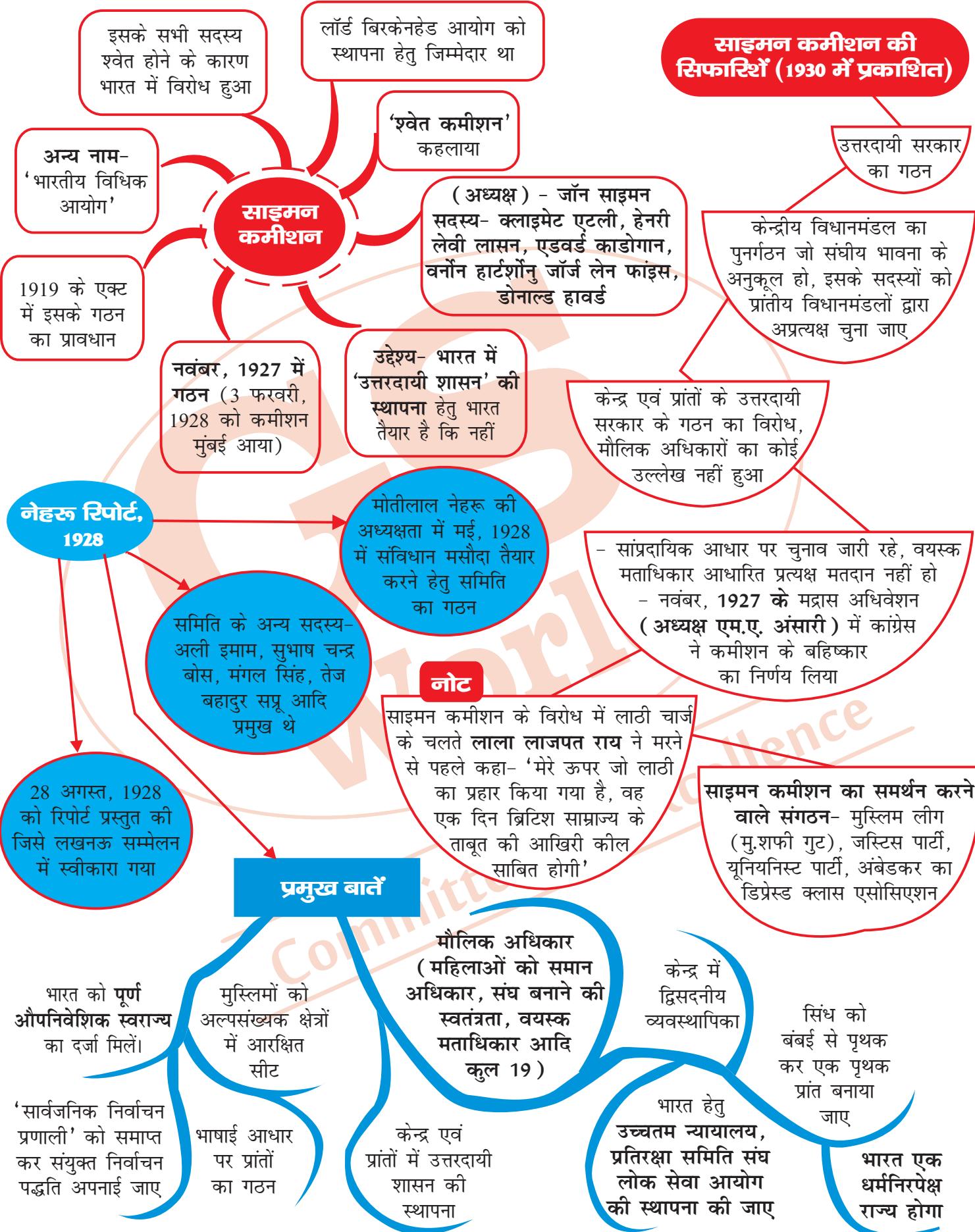
अन्य प्रमुख तथ्य

- भगत सिंह का कथन- ‘क्रांति के लिए रक्तरंजित संघर्ष आवश्यक नहीं’
- जेल में रहते हुए रामप्रसाद बिस्मिल ने युवाओं से अपील की थी कि वे पिस्तौल और रिवाल्वर का साथ छोड़ दें, क्रांतिकारी घड़ियांत्रों में हिस्सा न लें।
- अपने अंतिम दिनों में भगत सिंह का झुकाव मार्क्सवाद की ओर हो गया था।

(100)



साइमन कमीशन की सिफारिशें (1930 में प्रकाशित)



प्रमुख बातें

कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन 1929

नेहरू रिपोर्ट के औपनिवेशिक स्वराज के लक्ष्य के बजाय 'पूर्ण स्वराज' की मांग

कांग्रेस कार्यसमिति को 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' प्रारंभ करने का उत्तरदायित्व दिया गया

नोट:- 31 दिसंबर, 1929 को आधी रात को रावी नदी के तट पर तिरंगा झँडा फहराया गया

नेहरू ने युद्ध को समाजवादी घोषित किया

गोलमेज सम्मेलन के बहिष्कार का निर्णय लिया गया

26 जनवरी, 1930 को देशभर में प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाने का निर्णय

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन

7 सिंतंबर 1931 से 1 दिसंबर 1931 तक

अल्पसंख्यक एवं सांप्रदायिकता के मसले के कारण सम्मेलन असफल रहा

कांग्रेस की तरफ से एकमात्र प्रतिनिधि महात्मा गांधी शामिल हुए (राजपूताना जहाज से लंदन गए)

अन्य शामिल लोगों में, सरोजनी नायडू, एनी बेसेंट, डॉ. अंबेडकर आदि थे।

गांधी के साथ जाने वालों में महादेव देसाई, मदनमोहन मालवीय, देवदास गांधी, घनश्यामदास बिड़ला, मीराबेन थे।

नवंबर 1929 में 'दिल्ली घोषणा पत्र' को वायसराय इरविन द्वारा अस्वीकार किए जाने के बाद यह अधिवेशन हुआ।

दिसंबर 1929 [अध्यक्ष- जवाहर लाल नेहरू, (गांधी की मदद से)]

प्रथम गोलमेज सम्मेलन

साइमन कमीशन की सिफारिश पर विचार करने हेतु 12 नवंबर, 1930 से 10 जनवरी 1931 तक आयोजित

अध्यक्षता रैम्जे मैकडोनाल्ड

लंदन के सेंट जेम्स पैलेस

सरकार एवं भारतीयों के मध्य समान स्तर पर आयोजित प्रथम वार्ता

कांग्रेस ने बहिष्कार किया

तीसरा गोलमेज सम्मेलन

- 17 नवंबर, 1932 से 24 दिसंबर 1932 तक

- कांग्रेस एवं गांधी शामिल नहीं हुए
- इसमें भारत शासन अधिनियम, 1935 के लिए ठोस योजना के अंतरिम स्वरूप को पेश किया गया

नोट:

- अंबेडकर तीनों सम्मेलनों में शामिल हुए

डांडी मार्च

सविनय अवज्ञा आंदोलन, 1930

आंदोलन विस्तार

24 दिनों की यात्रा

12 मार्च- 6 अप्रैल, 1930

6 अप्रैल, को नमक तोड़कर नमक सत्याग्रह शुरू।

इस मार्च की तुलना सुभाष चंद्र बोस ने नेपोलियन के पेरिस मार्च तथा मुसोलिनी के रोम मार्च से की

सांप्रदायिक निर्णय (16 अगस्त, 1932)

पृथक निर्वाचन पद्धति को मुसलमानों, ईसाईयों, एंग्लो-इंडियन, सिखों के अतिरिक्त हरिजनों पर भी लागू किया गया

गांधी ने विरोध स्वरूप यरवदा जेल में आमरण अनशन किया।

गांधी की मांग थी कि दलित वर्ग के प्रतिनिधियों का चुनाव वयस्क मताधिकार के आधार पर आम निर्वाचक मंडल के माध्यम से हो

गांधी ने 'यंग इंडिया' में '11 सूत्री' मांग सरकार के समक्ष पेश की

गांधी ने नमक को रणनीतिक मुद्रे के रूप में चुना

के. केलपन ने 'मालाबार' में तट पर यात्रा की

बिहार में (समुद्र न होने के कारण) नमक सत्याग्रह को 'सांकेतिक रूप' में चलाया गया

धरसणा में सरोजनी नायडू, इमाम साहब, मणिलाल ने नमक कानून प्रदर्शन किया था (इसका उल्लेख बेब मिलर ने किया है)

गौडिनेल्य - मणिपुर में नैतृत्व (नेहरू ने इन्हें 'रानी' की उपाधि दी थी)

पश्चिमोत्तर भारत में खान अब्दुल गफ्फार खां ने नैतृत्व किया।

आंदोलन के दौरान वानर सेना, मंजरी सेना गठित की गई

'गांधी- इरविन समझौते' (5 मार्च, 1931) के बाद समाप्त हो गया

'द्वितीय सविनय अवज्ञा आंदोलन' 1932-1934 तक चला

पूना समझौता

अंबेडकर- गांधी के बीच (24 सितंबर, 1932)

मदन मोहन मालवीय ने गांधी और हिन्दुओं की तरफ से, वहीं अंबेडकर पिछड़े वर्ग की तरफ से इस समझौते पर हस्ताक्षर किए

मुख्य बातें

- दलितों हेतु 'पृथक निर्वाचक मंडल' समाप्त कर दिया गया
- प्रांतीय विधानमंडलों में दलितों हेतु 147 सीटें आवंटित (सांप्रदायिक पंचाट में 71 थीं)
- केन्द्रीय विधानमंडल में 18% सीटें दलित वर्ग हेतु आरक्षित
- ब्रिटिश सरकार ने इसे सांप्रदायिक समझौते का संशोधित रूप मानकर स्वीकार कर लिया
- दलित वर्ग हेतु सार्वजनिक सेवाओं, स्थानीय संस्थाओं को उचित प्रतिनिधित्व देने की व्यवस्था की गई

गांधी द्वारा हरिजनों हेतु उठाए गए प्रमुख कदम

सितंबर, 1932 में 'अखिल भारतीय अस्पृश्यता विरोधी लीग' का गठन

जनवरी 1933 में 'हरिजन' साप्ताहिक पत्र आरंभ

अंबेडकर अछूतों को हिन्दू समुदाय के बाहर धार्मिक अल्पसंख्यक मानते थे वहाँ गांधी उन्हें हिन्दू समुदाय का अभिन्न अंग मानते थे।

गांधी ने दलितों को हरिजन कहा

'डिप्रेस्ट क्लासेज लीग' का नाम बदलकर 'हरिजन सेवक संघ' हुआ

नोट:-

- 1934 में गांधी ने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया
- नेहरू, गांधी के संघर्ष-समझौता-संघर्ष रणनीति से असहमत थे

- 7 नवंबर, 1933 को वर्धा से हरिजन यात्रा शुरू (जुलाई, 1934 तक)

- यात्रा के दौरान हरिजन सेवक संघ हेतु कोष एकत्र किया

कांग्रेस ने शुरू में छह प्रांतों (बंबई, मद्रास, मध्य भारत, उडीसा, बिहार एवं संयुक्त प्रांत) तथा बाद में असम और पश्चिमोत्तर सीमांत प्रांत में मंत्रिमंडल का गठन किया (शासन 28 माह तक ही रहा)

1934 के केन्द्रीय विधानसभा चुनाव

इसमें कांग्रेस ने भारतीयों हेतु आरक्षित 75 सीटों में से 45 सीटें जीती और सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी

प्रांतीय चुनाव, 1937

कांग्रेस ने 8 राज्यों में सरकार चलाने हेतु संसदीय उपसमिति बनाई थी जिसमें वल्लभभाई पटेल, अबुल कलाम आजाद, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे।

बंगाल में कृषक प्रजा पार्टी, मुस्लिम लीग की संयुक्त सरकार बन गई।

सिंध में 'सिंध यूनाइटेड पार्टी' की सरकार बनी

पंजाब में मुस्लिम लीग तथा 'युनियनिस्ट पार्टी' की संयुक्त सरकार बनाई गई

विभिन्न प्रांतों की सरकार

1938 में कांग्रेस अध्यक्ष बोस ने 'राष्ट्रीय योजना समिति (अध्यक्ष नेहरू) का गठन किया

नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस तथा साम्यवादी दलों ने चुनावों में भागीदारी का विरोध किया था

त्रिपुरा संकट

द्वितीय विश्व युद्ध से उत्पन्न राजनीतिक संकटों के चलते अक्टूबर, 1939 में कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने त्यागपत्र दे दिया

चुनाव में बोस जीते, बोस बनाम सीतारमैया (अध्यक्ष पद हेतु विवाद)

बोस ने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देकर 'फारवर्ड ब्लॉक' का गठन किया

कांग्रेस का हरिपुरा एवं त्रिपुरा अधिकेशन

बोस के बदले राजेन्द्र प्रसाद नए अध्यक्ष मनोनीत हुए

मौलाना आजाद द्वारा नाम वापस लेने पर गांधी ने सीतारमैया को अपना प्रत्याशी चुना था

अध्यक्ष- सुभाष चन्द्र बोस

फरवरी 1938 (विट्ठल नगर)

बोस के राष्ट्रीय नियोजन समिति का उद्देश्य 'औद्योगिकीकरण पर आधारित भारत के आर्थिक विकास हेतु योजना निर्माण करना' था (गांधी ने इसका विरोध किया था)

कांग्रेस समाजवादी पार्टी, 1934

जयप्रकाश नारायण,
नरेन्द्र देव, अच्युत पटवर्धन,
मीनू मसानी द्वारा गठन

पहला सम्मेलन
21 अक्टूबर, 1934 को
बंबई में (अध्यक्ष- नरेन्द्रदेव
सचिव- जयप्रकाश
नारायण)

बॉम्बे मेनिफेस्टो (1936)

बंबई के 21
व्यापारियों द्वारा
प्रस्तावित

इसमें प्रत्यक्षतः
समाजवादी आदर्शों का
विरोध किया गया

कैप्टन मोहन सिंह
द्वारा गठित

21 अक्टूबर,
1943 को 'सुभाष
चन्द्र बोस' इसके
'सेनापति' बने

बोस ने 21 अक्टूबर
1943 को सिंगापुर में
'स्वतंत्र भारत की अस्थायी
सरकार' का गठन किया
(मुख्यालय- रंगून
एवं सिंगापुर)

फौज में रानी
झांसी रेजिमेंट, सुभाष
ब्रिगेड, नेहरू ब्रिगेड,
गांधी ब्रिगेड स्थापित
किए थे

11 सितंबर, 1942
को इसकी पहली
डिविजन बनी

जर्मनी, जापान
आदि ने इस सरकार
को समर्थन किया।

आजाद हिन्द फौज (इंडियन नेशनल आर्मी)

द वे आउट पंपलेट
सी. राजागोपालाचारी द्वारा
संवैधानिक गतिरोध दूर करने हुए
जारी किया गया। इसे सी. आर.
फार्मूला (जुलाई, 1944)
भी कहते हैं।

फौज के सिफारिशों
पर 'लाल किले में मुकदमा'
चला, जिन्हें बचाने हेतु कांग्रेस ने
'आजाद हिन्द समिति' (वकील-
भूलाभाई देसाई, तेज बहादुर एवं
नेहरू ने) का
गठन किया।

मई 1945 ब्रिटिश
सेना द्वारा रंगून पर
अधिकार के बाद हिन्दू
फौज ने जापान के साथ
समर्पण कर दिया

6 नवंबर, 1943
को जापानी सेना ने आजाद
हिन्द फौज को अंडमान एवं
निकोबार सौंपे। बोस ने
अंडमान को 'शहीद द्वीप'
तथा 'निकोबार स्वराज
द्वीप' कहा था

मार्च 1944 में
फौज की सेनाएं
पूर्वी भारत के कोहिमा
और नागालैंड तक
आ गई थी

द्वितीय विश्वयुद्ध एवं कांग्रेस

कांग्रेस की
लिनलिथगो से मांग

31 सितंबर,
1939 को शुरू

वायसराय
लिनलिथगो

कांग्रेस ने भारत को
युद्ध में शामिल करने
पर मंत्रिमंडल से
त्यागपत्र दे दिया

1. युद्ध पश्चात
संविधान सभा की
स्थापना

2. स्वतंत्र भारत की
राजनैतिक, संरचना
पर विचार

3. केन्द्र में
उत्तरदायी सरकार
की स्थापना

वायसराय ने
बिना भारतीय जनता
से विचार विमर्श किए
भारत को जर्मनी के
विरुद्ध युद्धरत राष्ट्र
घोषित कर दिया

नोट: वायसराय लिनलिथगो ने कांग्रेस की उपर्युक्त मांगों को नहीं माना।



पाकिस्तान प्रस्ताव मार्च, 1940

अध्यक्ष जिना ने 'पाकिस्तान राष्ट्र' की मांग की

मुस्लिम लीग का लाहौर अधिवेशन

मुस्लिम क्षेत्रों के गठन के मुद्दे पर

अगस्त प्रस्ताव, 1940

कांग्रेस ने इसे अस्वीकार कर दिया

पाकिस्तान का मुद्दा शामिल न होने के कारण मुस्लिम लीग ने भी अस्वीकार कर दिया

8 अगस्त को 'लिनलिथगो' द्वारा घोषित

मुख्य बातें

भारत हेतु 'डोमिनियन स्टेट्स' मुख्य लक्ष्य

अल्पसंख्यकों को बिना विश्वास में लिए किसी भी संवैधानिक परिवर्तन को लागू नहीं किया जाएगा

भारतीयों को सम्मिलित कर 'युद्ध सलाहकार परिषद्' की स्थापना

वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् का विस्तार

व्यवितरण सत्याग्रह, 1940-41

अगस्त प्रस्ताव को कांग्रेस द्वारा अस्वीकार करने के बाद गांधी द्वारा शुरू

प्रथम - सत्याग्रही विनोबा भावे

दूसरे- जवाहरलाल नेहरू

तीसरे- ब्रह्म दत्त

क्रिप्स मिशन (मार्च, 1942)

हिन्दू महासभा, दलित, सिक्ख उदारवादी ने भी इसकी आलोचना की

कांग्रेस के तरफ से नेहरू एवं मौलाना आजाद वार्ताकार थे

क्रिप्स ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का समर्थन किया

मुख्य बातें

डोमिनियन राज्य दर्जे के साथ 'भारतीय संघ' की स्थापना

भारतीय संघ राष्ट्रमंडल, संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में अपनी भूमिका हेतु स्वतंत्र होगा

परिषद् द्वारा निर्मित संविधान जिन प्रांतों को स्वीकार नहीं होगा, वे भारतीय संघ से पृथक रह सकेंगे (पृथक प्रांतों एवं देशी रियासतों को अलग संविधान बनाने का अधिकार)

युद्ध समाप्ति के बाद नये संविधान निर्माण हेतु 'संविधान निर्माणी परिषद्' का गठन

उक्त व्यवस्था होने तक ब्रिटेन, भारत के सुरक्षा दायित्वों का निर्वहन करेगा

गवर्नर-जनरल की समस्त शक्तियां पूर्ववत् रहेंगी।

नोट:- "क्रिप्स मिशन आगे की तारीख का चेक था, जिसका बैंक नष्ट होने वाला था" - महात्मा गांधी

भारत छोड़ो आन्दोलन (9 अगस्त, 1942)

गांधी ने 'करो या मरो' का नारा दिया

गांधी को 'संघर्ष का नेता' चुना गया

नेहरू ने 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' पेश किया, जिसे 8 अगस्त, 1942 को स्वीकारा गया

देसाई लियाकत फार्मूला जनवरी, 1945

भूलाभाई देसाई (कांग्रेस) ने लियाकत अली (मुस्लिम लीग) से मिलकर केन्द्र में अंतरिम सरकार के गठन हेतु प्रस्ताव तैयार किया

लीग एवं कांग्रेस के बीच इस पर समझौता नहीं बना बल्कि मतभेद और बढ़ गए

मुख्य बातें

20% स्थान अल्पसंख्यकों हेतु सुरक्षित रहेंगे

कांग्रेस, लीग, अंतरिम सरकार में समान सदस्यों को मनोनीत करेंगे

गवर्नर जनरल और कमांडर इन चीफ को छोड़कर, गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी के सभी सदस्य भारतीय होंगे।

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति पर नये संविधान निर्माण की प्रक्रिया शुरू होगी

क्रिप्स मिशन की असफलता के बाद शुरू

1 अगस्त, 1942 को इलाहाबाद में 'तिलक दिवस' मनाया गया।

7 अगस्त 1942 को ग्वालिया टैंक (मुंबई, मौलाना आजाद अध्यक्ष) में वर्धा प्रस्ताव की पुष्टि

प्रमुख केन्द्र- पूर्वी यूपी, बिहार, मिदनापुर, महाराष्ट्र एवं कर्नाटक।

भूमिगत कार्य के नेता पटनायक, अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी आदि

आम जनता, उद्योगपतियों, छात्रों, आदि ने पूर्ण सहयोग किया

'ऑपरेशन जीरोऑवर' के तहत नेताओं की गिरफ्तारी

यह नेतृत्व विहीन आंदोलन था
कांग्रेस प्रसारण स्टेशन- बंबई नासिक

जेपी नारायण ने 'आजाद दस्ता' का गठन किया

वेवेल योजना (4 जून, 1945)

वेवेल ने 25 जून को शिमला सम्मेलन बुलाया

शिमला सम्मेलन में कांग्रेस प्रतिनिधि मौलाना आजाद थे।

वेवेल ने खुद शिमला सम्मेलन को असफल मानकर समाप्त कर दिया

चर्चिल द्वारा लिनलिथगो के बजाय भारत का वायसराय लॉर्ड वेवेल को बनाया गया

कांग्रेस ने भी योजना का विरोध किया

मुख्य बातें

परिषद् में हिन्दू, मुस्लिमों की संख्या बराबर रहेगी गवर्नर जनरल का 'वीटो पावर' बना रहेगा

मुस्लिम लीग ने मौलाना आजाद को परिषद् का कांग्रेस सदस्य बनाने का विरोध किया

आंदोलन की प्रगति एवं प्रसार

वर्धा बैठक 14 जुलाई, 1942 में संघर्ष गांधीवादी प्रस्ताव को स्वीकृति

प्रमुख केन्द्र- पूर्वी यूपी, बिहार, मिदनापुर, महाराष्ट्र एवं कर्नाटक।

कांग्रेस रेडियो (उषा मेहता, लोहिया)

यह नेतृत्व विहीन आंदोलन था
कांग्रेस प्रसारण स्टेशन- बंबई नासिक

ब्रिटिश सरकार द्वारा आंदोलन के दमन पर गांधी ने 'आगा खां पैलेस' में 10 फरवरी, 1943 को उपवास रखा

1945-46 में विद्रोह की प्रमुख घटनाएं

आम चुनाव, 1945

कांग्रेस ने बंगाल, सिंध, पंजाब छोड़कर लगभग सभी अन्य प्रांतों में बहुमत प्राप्त किया। लेबर पार्टी (क्लीमेंट एटली) के सरकार बनाने के बाद दिसंबर, 1945 में ये चुनाव भारत में हुए।

'पृथक निर्वाचन पद्धति' को अपनाया गया।

पंजाब में यूनियनवादी कांग्रेस एवं अकाली गठबंधन ने 'खिज्र हयात खां' के नेतृत्व में सरकार बनायी।

मुस्लिम लीग ने 30 सीटें जीती (प्रांतीय चुनावों में बंगाल, सिंध में बहुमत)

कांग्रेस को केन्द्रीय एसेंबली की 102 में से 57 सीटें मिली।

प्रांतीय चुनावों में जहाँ कुल आबादी के 10% वहाँ केन्द्रीय एसेंबली में मात्र 1% ने मतदान किया।

कैबिनेट मिशन

24 मार्च, 1946 को दिल्ली आगमन

एटली ने फरवरी, 1946 में इसकी घोषणा की।

6 जून, 1946 को मुस्लिम लीग तथा 24 जून, 1946 को कांग्रेस ने मिशन के दीर्घावधि प्रस्तावों को स्वीकार लिया।

जुलाई, 1946 में संविधान सभा के गठन हेतु प्रांतीय व्यवस्थापिकाओं में चुनाव संपन्न हुए।

भारत को शांतिपूर्ण सत्ता हस्तांतरण हेतु उपायों, संभावनाओं की तलाश करने के उद्देश्य से गठित

1. लॉर्ड पैथिक लारेंस (भारत सचिव)
2. स्टैफर्ड क्रिप्स (व्यापार बोर्ड अध्यक्ष)
3. ए.वी. अलेक्जेंडर (नौसेना मंत्री)

लीग ने 16 अगस्त, 1946 को 'प्रत्यक्ष कार्रवाइ दिवस' मनाया (प्रभावित क्षेत्र-कलकत्ता, सिलहट, नोआखाली, बिहार, त्रिपुरा, गढ़मुक्तेश्वर आदि)

मुस्लिम लीग ने 29 जुलाई, 1946 को अपनी स्वीकृति वापस ले ली और पाकिस्तान हेतु 'सीधी कार्यवाही' का आह्वान किया।

मुख्य बातें

'पूर्वी पाकिस्तान' गठन की मांग अस्वीकार

ब्रिटिश भारत और देशी रियासतों को मिलाकर 'भारतीय संघ' का निर्माण, जो रक्षा, संचार, विदेशी मामलों को देखेगा (शेष विषय एवं (अवशिष्ट शक्तियां राज्यों) को)

प्रांतों को तीन समूहों (क, ख, ग,) में बांटा गया।

संविधान निर्मात्री सभा का गठन [प्रांतीय विधानसभाओं, देशी रियासतों के प्रतिनिधियों द्वारा]



अंतरिम सरकार सितंबर, 1946

वेवेल ने नेहरू
को अंतरिम सरकार
बनाने का
नियंत्रण दिया

9 दिसंबर, 1946
को संविधान सभा की
प्रथम बैठक हुई (अस्थायी
अध्यक्ष- डॉ. सच्चिदानन्द
सिन्हा (कृपलानी की
सलाह पर)

लीग ने संविधान
सभा का विरोध
किया

21 सितंबर को
नेहरू ने अपने सहयोगियों
के साथ वायसराय की
काउंसिल सदस्यता
की शपथ ली।

मुस्लिम लीग
सभा की प्रथम बैठक
में शामिल नहीं
हुई थी।

माउंटबेटन योजना फरवरी, 1947

- 20 फरवरी, 1947 एटली ने 'हाउस ऑफ कॉमस' में घोषणा की कि '30 जून, 1948' तक भारतीयों को सत्ता सौंप दी जाएंगी।
- लार्ड माउंटबेटन 24 मार्च, 1947 को गवर्नर जनरल बने

मुख्य बातें

- 3 जून, को माउंटबेटन ने सत्ता हस्तांतरण की योजना प्रस्तुत की (3 जून योजना)
- योजना को कांग्रेस तथा लीग ने स्वीकार लिया
- 14 जून 1947 को 'गोविंदवल्लभ पंत' ने कांग्रेस महासमिति बैठक में इस योजना की स्वीकृति का प्रस्ताव पेश किया
- 15 अगस्त 1947 को भारत, पाकिस्तान डोमिनियन स्टेट्स (अधिराज्य) के रूप में स्थापित होंगे।
- भारतीय रजवाड़ों को भारत या पाक में शामिल होने की इजाजत होगी, उन्हें स्वतंत्र रहने का विकल्प नहीं था।
- उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत तथा असम के सिलहट जिले में जनमत संग्रह
- सिंध अपना निर्णय स्वयं लेगा
- दो संविधान सभाओं का निर्माण
- बंगाल को स्वतंत्रता देने से मना, हैदराबाद की पाकिस्तान में सम्मिलित होने की मांग अस्वीकृत।
- विभाजन गतिरोध पर एक 'सीमा आयोग' का गठन।

अंतरिम सरकार के मंत्री कांग्रेस के नेता

जवाहरलाल नेहरू- परिषद् के उपाध्यक्ष,
विदेश मामले एवं कॉमनवेल्थ
बल्लभभाई पटेल- गृह, सूचना एवं प्रसारण
बलदेव सिंह- रक्षा
डा. जॉन मथाई- उद्योग एवं आपूर्ति
सी. राजगोपालाचारी- शिक्षा
सी. एच. भाभा- निर्माण, खनन एवं ऊर्जा
जगजीवन राम- त्रिम
राजेन्द्र प्रसाद- कृषि एवं खाद्य
आसफ अली- रेलवे

लीग के नेता

लियाकत अली- वित्त
इस्माइल चुंद्रगर- वाणिज्य
अब्दुल निश्तर- संचार
गजनफर अली खां- स्वास्थ्य
जोगेन्द्र नाथ मंडल- कानून

परीक्षोपयोगी जानकारी

- 1914 - हिन्दू महासभा गठन (मदन मोहन मालवीय)
- 1925 - राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का गठन। (के.बी. हेडगेवार)
- 1925 - भारतीय कम्युनिस्ट का गठन।

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947

मुख्य बातें

‘माउंटबेटन योजना’ के आधार पर 4 जुलाई, 1947 को ब्रिटिश संसद में यह अधिनियम पेश हुआ।

15 जुलाई को ‘हाउस ऑफ कॉमंस’ द्वारा स्वीकृत

18 जुलाई को सम्राट द्वारा पारित

16 जुलाई को ‘लार्डस सभा’ में स्वीकृत

भारत, पाक के विधानमंडलों को कुछ विषयों पर कानून निर्माण का पूर्ण अधिकार दिया गया।

15 अगस्त, 1947 को भारत, पाक दो डोमिनियन के रूप में होंगे।

पाकिस्तान के प्रथम गवर्नर ‘जिन्ना’ तथा भारत के ‘माउंटबैटन’ बने।

नोट

15 अगस्त, 1947 तक 136 देशी रियासतें भारत में शामिल हो चुकीं थीं। वहीं कश्मीर ने 26 अक्टूबर, 1947 को, हैदराबाद एवं जूनागढ़ ने 1948 ने विलय- पत्रों पर हस्ताक्षर किये।

स्वतंत्रता-आंदोलन से संबंधित प्रकाशित पत्र, पत्रिकाएँ एवं पुस्तकें

पत्र-पत्रिकाएँ एवं पुस्तकें	लेखक/संपादक
अभ्युदय, लीडर, हिन्दुस्तान	मदनमोहन मालवीय
इंडियनमिर, वामबोधिनी	केशवचन्द्र सेन
इंडिपेंडेंट	मोतीलाल नेहरू
काल	परांजपे
कामरेड, हमदर्द	मुहम्मद अली
केसरी (मराठी), मराठा या महरटा (अंग्रेजी), गीता रहस्य	बाल गंगाधर तिलक
कर्मयोगी, युगान्तर, बन्देमातरम, लाइफडिवाइन, सावित्री	अरविंद घोष
नेशन, द हितवाद (अंग्रेजी साप्ताहिक)	गोपाल कृष्ण गोखले
बंगाली, ए नेशन इन मेकिंग	सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
भवानी मंदिर	बरिन्द्र कुमार घोष
यंग इंडिया, हरिजन, नवजीवन, हिन्दस्वराज, माई एक्सप्रेसीमेंट विथटुथ	महात्मा गांधी
संवाद कौमुदी	राजा राममोहन राय
सोमप्रकाश	ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
अमृत बाजार पत्रिका	शिशिर कुमार घोष
कॉमन विल, न्यूइंडिया	एनीबेसेंट
फ्री हिन्दुस्तान	तारकनाथ दास
द रिवोल्यूशनरी	शचीन्द्रनाथ सान्याल
पावर्टी एंड अन ब्रिटिश रूल इन इंडिया, रस्ट गुफ्तूर	दादाभाई नौरोजी
इंडिया डिवाइडेड	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
अनहैपी इंडिया	लाला लाजपत राय
इंडिया विन्स फ्रीडम, गुबारे खातिर, अल हिलाल	अबुल कलाम आजाद
डिस्कवरी ऑफ इंडिया, गिलम्प्सेज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री, एन ऑटोबायोग्राफी	जवाहरलाल नेहरू
हिन्दूस फॉर सेल्फ कल्चर	लाला हरदयाल
इंडियन अनरेस्ट	सर वैलेंटाइन शिरॉल
इंडिया फॉर इंडियन्स, द वे टू स्वराज	चित्तरंजन दास
वॉर ऑफ इंडियन इंडिपेंडेंस	वीर सावरकर
होम एंड द वर्ल्ड, गीतांजलि	रवीन्द्र नाथ ठाकुर
नील दर्पण	दीनबंधु मित्र
सीजे वतन, कर्मभूमि, शतरंज के खिलाड़ी	प्रेमचन्द्र
वाँगे दरा, तराने हिन्द	मुहम्मद इकबाल
भारत भारती	मैथिलीशारण गुप्त
भारत दुर्दशा	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
काँग्रेस का इतिहास	पट्टाभि सीतारमया
सत्यार्थ प्रकाश	दयानंद सरस्वती
इंडियन स्ट्रगल	सुभाष चन्द्र बोस
आनंदमठ, देवी चौधुरानी	बंकिमचन्द्र चटोपाध्याय
बंदी जीवन	शचीन्द्र नाथ सान्याल
मेरा जीवन संघर्ष, खेत मजदूर, हुंकार	स्वामी सहजानंद सरस्वती

(111)



काँग्रेस अधिवेशन

अधिवेशन	वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	विशेष
पहला	1885	बंबई	व्योमेशचन्द्र बनर्जी	72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया
दूसरा	1886	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	-
तीसरा	1887	मद्रास	बदरुद्दीन तैय्यबजी	प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष
चौथा	1888	इलाहाबाद	जॉर्ज यूल	प्रथम अंग्रेज
पांचवाँ	1889	बंबई	सर विलियम बेडरबर्न	-
छठा	1890	कलकत्ता	सर फिरोजशाह मेहता	-
सातवाँ	1891	नागपुर	प्रो० आनंद चार्लू	-
आठवाँ	1892	इलाहाबाद	व्योमेशचन्द्र बनर्जी	-
नौवाँ	1893	लाहौर	दादाभाई नौरोजी	-
दसवाँ	1894	मद्रास	अल्फ्रेड वेब	आयरिश व्यक्ति थे
ग्यारहवाँ	1895	पूना	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	-
बारहवाँ	1896	कलकत्ता	रहीमतुल्ला सयानी	पहली बार 'वंदे मातरम' गया गया
तेरहवाँ	1897	अमरावती	सी० शंकरन नायर	-
चौदहवाँ	1898	मद्रास	आनंदमोहन दास	-
पन्द्रहवाँ	1899	लखनऊ	रमेशचन्द्र दत्त	-
सोलहवाँ	1900	लाहौर	एन०जी० चन्द्रावरकर	-
सत्रहवाँ	1901	कलकत्ता	दिनशा इदुलजी वाचा	-
अठारहवाँ	1902	अहमदाबाद	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	-
उन्नीसवाँ	1903	मद्रास	लालमोहन घोष	-
बीसवाँ	1904	बंबई	सर हेनरी काटन	-
इक्कीसवाँ	1905	बनारस	गोपालकृष्ण गोखले	-
बाइसवाँ	1906	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	पहली बार 'स्वराज' शब्द का प्रयोग
तेइसवाँ	1907	सूरत	डॉ० रासबिहारी घोष	काँग्रेस का प्रथम विभाजन
चौबीसवाँ	1908	मद्रास	डॉ० रासबिहारी घोष	काँग्रेस संविधान का निर्माण
पच्चीसवाँ	1909	लाहौर	पं० मदनमोहन मालवीय	-
छब्बीसवाँ	1910	इलाहाबाद	सर बिलियम बेडरबर्न	-
सताइसवाँ	1911	कलकत्ता	पं० बिशननारायण धर	पहली बार जन गण मन गया गया
अटठाइसवाँ	1912	बांकीपुर (पटना)	आर०एन० मोधोलकर	-
उनतीसवाँ	1913	कराची	नवाब सैयद मो० बहादुर	-
तीसवाँ	1914	मद्रास	भूपेन्द्रनाथ बसु	-
इकतीसवाँ	1915	बंबई	सर सत्येन्द्र प्रसन्न सिन्हा	लॉर्ड बेलिंगटन ने भाग लिया

काँग्रेस अधिवेशन

बत्तीसवाँ	1916	लखनऊ	अंबिकाचरण मजूमदार	मुस्लिम लीग से समझौता
तैतीसवाँ	1917	कलकत्ता	श्रीमती एनी बेसेंट	प्रथम महिला अध्यक्ष
विशेष अधिवेशन	1918	बंबई	हसन इमाम	काँग्रेस का दूसरा विभाजन
चौतीसवाँ	1918	दिल्ली	पं० मदनमोहन मालवीय	-
पाँतीसवाँ	1919	अमृतसर	पं० मोतीलाल नेहरू	-
छत्तीसवाँ	1920	नागपुर	सी०वि० राधवाचारियर	काँग्रेस संविधान में परिवर्तन
विशेष अधिवेशन	1920	कलकत्ता	लाला लाजपत राय	-
सैंतीसवाँ	1921	अहमदाबाद	हकीम अजमल खाँ	-
अड़तीसवाँ	1922	गया	देशबंधु चितरंजन दास	-
उनचालीसवाँ	1923	काकीनाड़ा	मौलाना मोहम्मद अली	-
विशेष अधिवेशन	1923	दिल्ली	अबुल कलाम आजाद	सबसे युवा अध्यक्ष
चालीसवाँ	1924	बेलगाम	महात्मा गांधी	-
इकतालीसवाँ	1925	कानपुर	श्रीमती सरोजिनी नायडू	प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष
बयालीसवाँ	1926	गुवाहाटी	एस० श्रीनिवास आयगार	दस्यों हेतु खादी वस्त्र अनिवार्य
तेतालीसवाँ	1927	मद्रास	डॉ० एम०ए० अंसारी	पूर्ण स्वाधीनता की माँग
चौबालीसवाँ	1928	कलकत्ता	पं० मोतीलाल नेहरू	-
पैंतालीसवाँ	1929	लाहौर	पं० जवाहरलाल नेहरू	पूर्ण स्वराज की माँग
छियालीसवाँ	1931	कराची	सरदार बल्लभई भाई पटेल	मौलिक अधिकार की माँग
सैंतालीसवाँ	1932	दिल्ली	अमृत रणछोड़ दास सेठ	-
अड़तालीसवाँ	1933	कलकत्ता	श्रीमती नेल्ली सेनगुप्ता	-
उनचासवाँ	1934	बंबई	डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	-
पचासवाँ	1936	लखनऊ	पं० जवाहरलाल नेहरू	-
इक्यावनवाँ	1937	फेजपुर	पं० जवाहरलाल नेहरू	गाँव में आयोजित प्रथम अधिवेशन
बावनवाँ	1938	हरिपुरा	सुभाष चन्द्र बोस	-
तिरपनवाँ	1939	त्रिपुरी	सुभाष चन्द्र बोस	-
चौबनवाँ	1940	रामगढ़	अबुल कलाम आजाद	-
पचपनवाँ	1946-47	मेरठ	आचार्य जे०बी० कृपलानी	आजादी के समय अध्यक्ष
छप्पनवाँ	1948	जयपुर	श्री पट्टाभि सीतारमैया	-
सनतावनवाँ	1950	नासिक	पुरुषोत्तम दास टंडन	-

नोट: डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 1947 ई० में दिल्ली में हुई विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष थे।

ब्रिटिश प्रशासन के विरुद्ध प्रमुख जनजातीय एवं अन्य विद्रोह

विद्रोह	अवधि (ई० सन्)	प्रभावित क्षेत्र	नेतृत्वकर्ता
संन्यासी विद्रोह	1770-1800	बिहार, बंगाल	केना सरकार, दिर्जिनारायण
फकीर विद्रोह	1776-77	बंगाल	मजनुशाह एवं चिराग अली
चुआर विद्रोह	1768	बाकुड़ा (बंगाल)	दुर्जन सिंह
पॉलीगारों का विद्रोह	1801-1856	तमिलनाडु	वीर पी काट्टावाम्मान
वेलाटम्पी विद्रोह	1808-09	ट्रावनकोर	मेलुथाम्पी
भील विद्रोह	1818-1846	पश्चिमी घाट	सेवाराम
समीसी विद्रोह	1822-41	पश्चिमी घाट	चित्तर सिंह
पागलपन्थी विद्रोह	1825-50	असम	ठौपू (करमशाह का पूत्र)
अहोम विद्रोह	1828	असम	गोमधर कुँवर
वहाबी आंदोलन	1831	बिहार, उत्तर प्रदेश	सत्यद अहमद तुतीमीर
कोल आंदोलन	1831-32	छोटानागपुर (झारखण्ड)	गोमधर कुँवर
खासी विद्रोह	1833	असम	तीरत सिंह
फरायजी आंदोलन	1838-48	बंगाल	हाजी शरीयतुल्ला, दादू मियाँ
नील विद्रोह	1859-60	बंगाल, बिहार	दिगम्बर विश्वास और विष्णु विश्वास
सन्थाल विद्रोह	1855-56	बंगाल, बिहार	सिद्धू-कान्हू
मुण्डा विद्रोह	1874-1900	बिहार, (झारखण्ड)	बिरसा मुण्डा
पाइक विद्रोह	1817-1825	उड़ीसा	बख्शी जगबन्धु
पाबना विद्रोह	1873-85	पाबना (बंगाल)	ईशानचन्द्र राय एवं शम्भूपाल
मोपला विद्रोह	1836-1922	मालाबार (केरल)	सैयद अलावी, कुन अहमद, अली मुसलियार
कूका आंदोलन	1840	पंजाब	भगत मुसलियार
रम्पाओं का विद्रोह	1922-1924	आन्ध्र प्रदेश	अलरुरी सीताराम राजू
तानाभगत आंदोलन	1914-1919	बिहार	जतरा भगत
तेभागा आंदोलन	1946	बंगाल	कम्पाराम सिंह एवं भवन सिंह



काँग्रेस-पूर्व राजनीतिक संस्थाएँ

संगठन	स्थापना	संस्थापक	स्थान
लैण्ड होल्डर्स सोसायटी	1838 ई०	द्वारकानाथ टैगोर	कलकत्ता
ब्रिटिश इंडिया सोसायटी	1839 ई०	विलियम एडम्स	लंदन
बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसायटी	1843 ई०	जॉर्ज थॉमसन	कलकत्ता
ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन	1851 ई०	राधाकान्त देव	कलकत्ता
मद्रास नेटिव एसोसिएशन	1852 ई०	गजुलू लक्ष्मी नरसुचेट्टी	मद्रास
बॉम्बे एसोसिएशन	1852 ई०	जगन्नाथ शंकर सेठ	बम्बई
ईस्ट इंडिया एसोसिएशन	1866 ई०	दादाभाई नौरोजी	लंदन
नेशनल इंडियन एसोसिएशन	1867 ई०	मेरी कारपेण्टर	लंदन
पूना सार्वजनिक सभा	1870 ई०	एस०एच० चिपलंकर, पूनाजी जोशी, एम०जी० रानाडे	पूना
इंडियन एसोसिएशन	1876 ई०	आनन्द मोहन बोस, एस०एन० बनर्जी	कलकत्ता
मद्रास महाजन सभा	1884 ई०	एम० वीरराधवाचारी, आनन्दचारलू	मद्रास
बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन	1885 ई०	फिरोजशाह मेहता, के०टी० तैलंग, बद्रुद्दीन तैयब	बम्बई

क्रांतिकारी संस्थाएँ

संस्था	संस्थापक	स्थान	वर्ष
मित्र मेला	वी०डी० सावरकर	नासिक	1899
अभिनव भारत	वी०डी० सावरकर	नासिक	1904
अनुशीलन समिति	प्रमतनाथ मित्र, सतीश चन्द्र, नरेन्द्र भट्टाचार्य	कलकत्ता	1905
भारत स्वशासन समिति	श्याम जी कृष्ण वर्मा	लंदन	1905
इंडिया हाउस	श्याम जी कृष्ण वर्मा	लंदन	1905
युगान्तर	बारीन्द्र घोष	कलकत्ता	1906



ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन प्रमुख गवर्नर जनरल/वायसराय

**राबर्ट क्लाइव (1757-1760
एवं 1765-1767 ई.)**

वर्ष 1742 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी में 'क्लर्क' के रूप में नौकरी की शुरुआत।

23 जून, 1757 को प्लासी के युद्ध में विजय के बाद इसे बंगाल का गवर्नर बनाया गया था।

वर्ष 1765 ई. में क्लाइव ने बंगाल में 'द्वैथ शासन' लागू किया था। वर्ष 1772 में द्वैथ शासन को वारेन हैस्टिंग्स ने समाप्त कर दिया था।

अंग्रेज इतिहासकार 'पर्सीबिल स्पीयर' ने क्लाइव को 'भविष्य का अग्रदूत' कहा था।

यह बंगाल का प्रथम गवर्नर था।

लॉर्ड पिट ने इसे 'स्वर्ग से उत्तरा हुआ जनरल' कहा था।

बक्सर के युद्ध में विजय के बाद मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय ने इसे वर्ष 1765 में बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा की 'दीवानी' प्रदान की थी।

इसी के समय में 1759 में 'वेदरा का युद्ध' हुआ, इसमें अंग्रेजों ने डचों को हरा दिया।

भारत में अपने कार्यों के कारण इसे 'ब्रिटिश साम्राज्य का संस्थापक' कहा गया है।

वर्ष 1765 में इसने एक व्यापार समिति (**Society of Trade**) का निर्माण करके इसको 'नमक, सुपारी एवं तम्बाकू' के व्यापार का एकाधिकार दिया गया।

वर्ष 1766 ई. में इसी के समय में 'श्वेत विद्रोह' हुआ था। मुख्यतः इस विद्रोह का केंद्र मुंगेर और इलाहाबाद था।

ब्रिटिश नेता वर्क ने क्लाइव का उपहास करते हुए कहा था कि 'यह तो बड़ी-बड़ी नीवें रखने वाला आदमी था।'

क्लाइव ने 12 अगस्त, 1765 और 16 अगस्त, 1765 को इलाहाबाद की दो संधियां की थी। पहली संधि मुगल सम्राट से जबकि दूसरी संधि बंगाल के नवाब के साथ हुई थी।

क्लाइव ने इंग्लैंड में आत्महत्या कर ली थी।

क्लाइव ने उप-दीवान के पद पर बंगाल के लिए मुहम्मद रजा खाँ और बिहार के लिए राजा शिताब राय को नियुक्त किया।

वारेन हेस्टिंग्स (1774-1785 ई.)

1773 के रेग्यूलेटिंग

एकट के अधीन यह बंगाल का अंतिम गवर्नर एवं बंगाल का प्रथम गवर्नर-जनरल दोनों था। इसी के समय राजकीय कोष को मुर्शिदाबाद से कलकत्ता लाया गया।

भूमि सुधार के लिए वर्ष 1772 में 'पंचवर्षीय बंदोबस्त' जबकि वर्ष 1777 में 'एकवर्षीय बंदोबस्त' की व्यवस्था की थी। वर्ष 1793 में इसी बंदोबस्त को कार्नेवालिस ने स्थायी रूप प्रदान किया था।

भारत में 'न्यायिक सेवा' का जन्मदाता हेस्टिंग्स को माना जाता है। इसी के समय में वर्ष 1774 में कलकत्ता में एक 'सर्वोच्च न्यायालय' की स्थापना की गयी थी। इसका मुख्य न्यायाधीश इलिजा इम्पे जबकि अन्य सहायक न्यायाधीश चैम्बर, लिमेस्टर एवं हाइड थे।

वर्ष 1775 में 'फैजाबाद की संधि' द्वारा हेस्टिंग्स ने अवध की बेगमों को उनकी सम्पत्ति की सुरक्षा की गारंटी दी थी। इस समय अवध का नवाब 'आसफुद्दौला था।

वर्ष 1784 में इसी समय विलयन जोंस ने कलकत्ता में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना की थी। इस सोसाइटी के तहत अनुवादित पहली पुस्तक भगवतगीता थी। इसका अनुवाद विलियम बिलकिंस ने किया था।

प्रत्येक जिले में फौजीदारी (अध्यक्षता-दरोगा) और दीवानी अदालत (अध्यक्षता-कलेक्टर) की स्थापना की।

इसने 1781 में कलकत्ता में प्रथम मदरसा स्थापित किया।

वर्क ने हेस्टिंग्स को 'चूहा, नेवला तथा अन्याय का मुखिया' कहा था।

इसी के समय में कलकत्ता में 'टकसाल की स्थापना', प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775-82), द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1780-84), हैदर अली की मृत्यु (1782) और वर्ष 1784 पिट्स इंडिया एक्ट पारित किया गया, 'बोर्ड ऑफ रेवेन्यू' की स्थापना हुई।

वर्ष 1785 में वारेन हेस्टिंग्स के लौटने (इंग्लैंड) के बाद ब्रिटिश नेता एडमंड वर्क ने ब्रिटिश संसद के हाउस ऑफ लॉर्ड्स में महाभियोग की कार्यवाही हेस्टिंग्स पर शुरू की थी।

हेस्टिंग्स ने लगान के हिसाब की देखभाल हेतु भारतीय अधिकारी 'राय रायन' को नियुक्त किया



**लॉर्ड कार्नवालिस
(1786-1793 ई.)**

इसने वर्ष 1793 की
‘कार्नवलिस संहिता’ के
तहत राजस्व तथा न्याय की
शक्तियों का पृथक्करण कर
दिया गया था।

भारत में 'पुलिस सेवा,
सिविल सेवा का जन्मदाता'
भी इसे माना जाता है।

अपने 'राजस्व संबंधी सुधार' के तहत भूमि का मालिक इसने जमींदारों को मानकर भूमि बंदोबस्त को 1793 में स्थायित्व प्रदान किया था। इस बंदोबस्त के तहत जमींदारों को अब 90% या $10/11$ भाग कम्पनी को तथा 10% या $1/11$ भाग अपने पास रखना था। इसी व्यवस्था को 'इस्तमरारी बंदोबस्त या स्थायी बंदोबस्त' कहा जाता है।

इसी के समय भारत में सर्वप्रथम 'जिला मजिस्ट्रेट' और 'मुंसिफ मजिस्ट्रेट' के पद का सृजन किया गया।

इसने 1789 ई. में 'दास व्यापार पर रोक' लगा दी थी।

तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध में
अंग्रेजों के विजय के बाद
इसने कहा था कि 'हमने
अपने मित्रों को अधिक
शक्तिशाली न बनाते हुए
अपने शत्रु को फलदायी रूप
से लंगड़ा कर दिया है।'

यह एकमात्र गवर्नर
जनरल है जिसकी 'समाधि
उत्तर प्रांत के गाजीपुर
में स्थित है।'

कार्नवलिस ने 'भ्रमणशील
अदालतों' या 'चलती-फिरती
अदालतों' का निर्माण
कराया था।

1853 से सिविल सेवा में
चयन का आधार प्रतियोगी
परीक्षा बनी थी। प्रारंभ में
यह परीक्षा इंग्लैण्ड में होती थी,
लेकिन 1923 से यह परीक्षा
भारत में भी होने लगी।

कार्नवालिस को वर्ष 1786 के चार्टर एक्ट द्वारा 'भारत का मुख्य सेनापति' का दर्जा भी मिला था अर्थात् यह पहला अंग्रेज है जिसको एक साथ गवर्नर जनरल और कमाण्डर-इन-चीफ नामक दोनों पद एक साथ प्राप्त थे।

इसने प्रत्येक जिले में ‘पुलिस थाना की स्थापना’ कर एक दरोगा को इसका इंचार्ज बनाया।

क्या आप जानते हैं ?

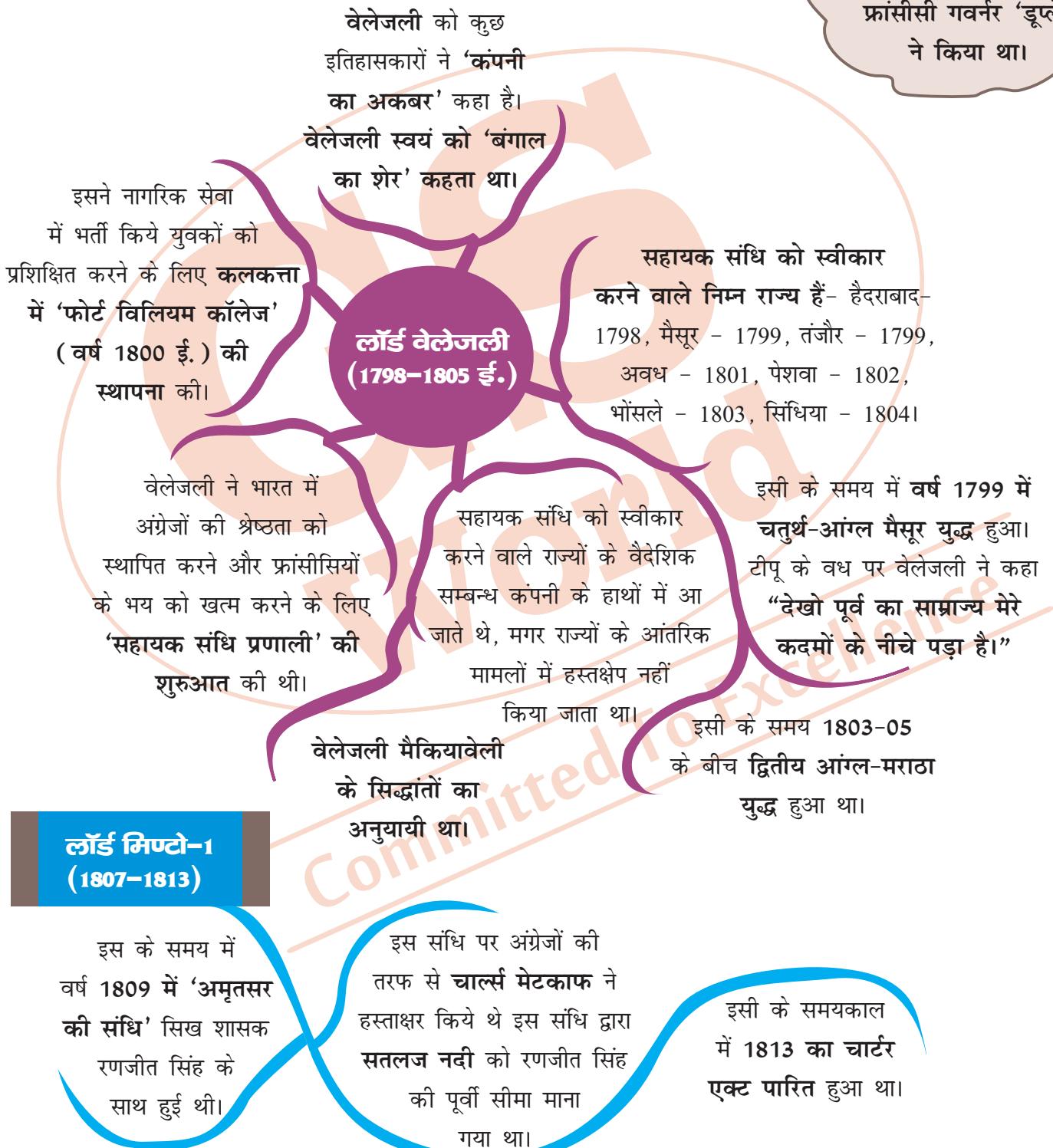
1. वर्ष 1863 में प्रथम भारतीय ICS सत्येन्द्र नाथ टैगोर बने थे।
 2. अरविंद घोष ICS की घुड़सवारी की परीक्षा पास नहीं कर पाये थे।
 3. सुभाषचंद्र बोस ने सिविल सेवा में चयन के बाद त्यागपत्र दे दिया था।
 4. गवर्नर जनरल लिटन ने सिविल सेवा की आयु को 23 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दिया था।
 5. ‘सुरेन्द्रनाथ बनर्जी’ को अंग्रेजों ने नस्लीय भेदभाव के कारण असम के ‘कलेक्टर के पद से निलम्बित’ कर दिया था।
 6. ‘आर.सी.दत्त’ ने स्थायी बंदोबस्त का समर्थन किया था।
 7. स्थायी बंदोबस्त की योजना ‘जॉन शोर’ ने बनाई थी।

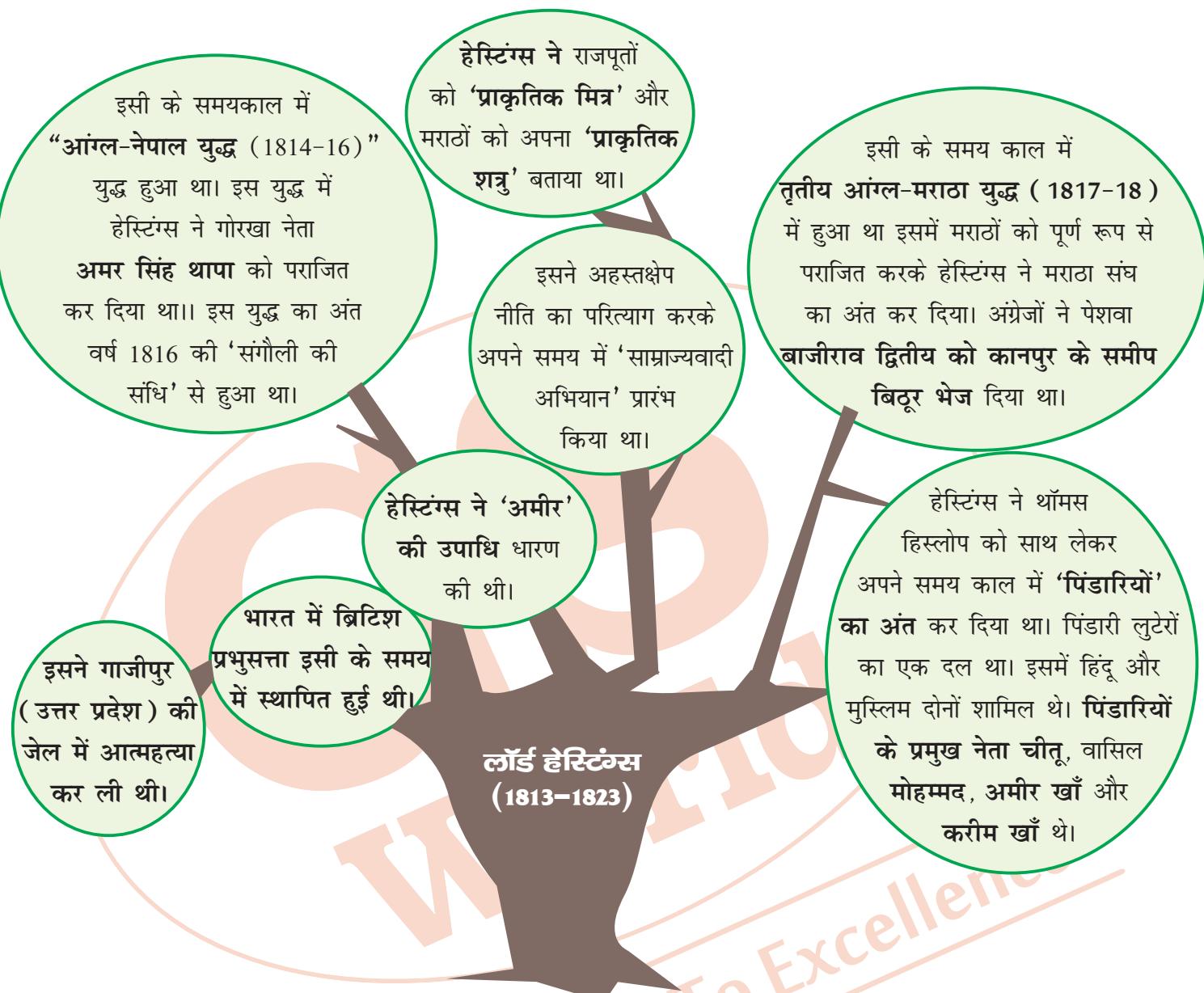
नोट :

- इंदौर के होल्करों ने सहायक संधि स्वीकार नहीं की थी।
- 1806 में इंग्लैंड के हेलेबरी में एक ईस्ट इंडिया कॉलेज (भारत भेजे जाने वाले प्रशासकीय अधिकारियों के प्रशिक्षण हेतु) खोला गया था।

क्या आप जानते हैं ?

सहायक संधि का प्रयोग भारत में वेलेजली से पहले फ्रांसीसी गवर्नर 'डूप्ले' ने किया था।





क्या आप जानते हैं ?

भारत में हिल स्टेशन की स्थापना का उद्देश्य ब्रिटिश सेना की जरूरतों से था। जैसे- शिमला की स्थापना गोरखा युद्ध (1815-18) के दौरान तथा अंग्रेज मराठा युद्ध (1818) के समय माउंट आबू और दार्जिलिंग को 1835 में सिक्किम के राजाओं से छीना गया था।

लॉर्ड एम्हस्टर्ट (1823–28 ई.)

इसके समयकाल में
1824–26 के बीच में ‘प्रथम
आंग्ल-बर्मा युद्ध’ हुआ था। इस
युद्ध का समापन ‘1826 की
माण्डबू की संधि’
से हुआ था।

वर्ष 1826 ई. में
‘गवर्नरमेंट संस्कृत कॉलेज’
की स्थापना कोलकाता
में हुई थी।

इसी के समयकाल
में ‘मणिपुर’ नामक
स्वतंत्र राज्य की
घोषणा हुई थी।

वर्ष 1824 में बैरकपुर
का ‘सैनिक विद्रोह’ हुआ था।
इन सैनिकों ने समुद्र पार करके
अर्थात् बर्मा जाकर युद्ध करने
से इनकार कर दिया था।

भारत के गवर्नर-जनरल

यह बंगाल का
अंतिम और भारत का पहला
गवर्नर जनरल था।

वर्ष 1833 के चार्टर
एक्ट द्वारा इसको बंगाल के गवर्नर
जनरल से पूरे ‘भारत का गवर्नर
जनरल’ बनाया गया।

गवर्नर जनरल बनने के
पूर्व यह 1803 ई. में मद्रास का
गवर्नर बना था। लेकिन वर्ष 1806 ई. में
यहाँ अर्थात् वेल्लूर के सैनिकों ने जन विद्रोह
किया तो इसे वापस इंग्लैंड बुला
लिया गया था।

रियासतों के प्रति
साम्राज्यवादी नीति अपनाते हुए बैंटिक
ने मैसूर 1831, कुर्ग 1834, कछार एवं
जयंतिया 1832, को अंग्रेजी साम्राज्य में
मिला लिया था।

बैंटिक उदारवादी था
इसके समयकाल को हम
‘शांति और सुधार के युग’
के नाम से जानते हैं।

अपने राजनीतिक सुधारों
के अंतर्गत बैंटिक ने 1833 के चार्टर
एक्ट की धारा (87) के द्वारा ‘योग्यता’ को ही
सेवा का आधार मान लिया। अब किसी भी भारतीय
नागरिक को धर्म, जन्मस्थान, जाति और रंग के
आधार पर किसी पद के लिए वंचित नहीं
किया जा सकता।

सामाजिक

सुधारों के तहत बैटिक ने राजा राम मोहन राय के सहयोग से 1. वर्ष 1829 के नियम (xvii) द्वारा सतीप्रथा पर प्रतिबंध (सर्वप्रथम बंगाल प्रेसीडेंसी में) लगा दिया था। वर्ष 1833 ई. में सम्पूर्ण भारत में सती प्रथा को प्रतिबंधित कर दिया गया था।

2. इसने वर्ष 1830 ई. में कर्नल स्लीमैन की सहायता से ठगी प्रथा का अंत कर दिया था।

3. इसने 'मानव बलि प्रथा और शिशु हत्या' पर भी प्रतिबंध लगाया था।

4. इसने 1832 ई. में दास प्रथा को बंद कर दिया था।

चार्ल्स मैटकॉफ (1835-36 ई.)

इसने समाचार पत्रों से सभी प्रतिबंध हटा लिये थे इसी कारण से इसे आधुनिक भारत के समाचार पत्रों के 'मुक्तिदाता' के नाम से जाना जाता है।

लॉर्ड विलियम बैटिक (1828-1835)

शिक्षा संबंधी सुधारों के तहत बैटिक ने- 1. वर्ष 1835 ई. में भारत में अंग्रेजी को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाया गया था।

2. वर्ष 1835 ई. कलकत्ता में 'मेडिकल कॉलेज' की नींव रखी थी।

3. रुडकी में 'भारत के प्रथम इंजीनियरिंग कॉलेज' की नींव रखवायी थी।

इसने सर्वप्रथम 'संभागीय आयुक्तों' की नियुक्ति की थी।

प्रेस के प्रति बैटिक का दृष्टिकोण काफी उदार था।

लॉर्ड आकलेंड (1836-42 ई.)

- इसके समय वर्ष 1838-42 के बीच में प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध हुआ।
- इसने 1839 ई. में शेरशाह सूरी रोड का नाम बदलकर 'ग्रांड ट्रंक रोड' कर दिया था।

लॉर्ड एलनबरो (1842-44 ई.)

- इसके काल में वर्ष 1843 में चार्ल्स नेपियर के नेतृत्व में सिंध का विलय अंग्रेजी राज्य में कर लिया गया था।
- इसने वर्ष 1843 के अधिनियम-5 द्वारा 'दास प्रथा' का अंत कर दिया गया था।



लॉर्ड हार्डिंग (1844-48 ई)

इसके समय में प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध वर्ष 1845-46 में हुआ था। (समाप्ति- लाहौर की संधि, 1846 से)।

इसने खोंड जनजाति में प्रचालित 'नरबलि प्रथा' का अंत कैपवेल के सहयोग से किया था।

इसके समयकाल में सूरत में 'नमक विद्रोह' हुआ था।

लॉर्ड डलहौजी (1848-1856)

अपने साम्राज्य विस्तार के लिए उसने 'राज्य का हड़पने की नीति या विलय नीति' का विकास किया था। इससे निम्न भारतीय राज्य या रियासतें प्रभावित हुई थीं—

- सतारा (महाराष्ट्र) अप्पा सहित - 1848
- जैतपुर (बुंदेलखण्ड) - 1849
- सम्भलपुर (उड़ीसा) - 1849
- बघाट (हिमाचल प्रदेश) - 1850
- उदेपुर (मध्य प्रदेश) - 1852
- झाँसी (उत्तर प्रदेश) - 1853
- नागपुर (महाराष्ट्र) - 1854
- अवध (उत्तर प्रदेश) - 1856

नोट: डलहौजी के समय में ब्रिटिश साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार हुआ था।

अपने सैनिक सुधार के तहत डलहौजी ने -

1. तोपखाना कार्यालय को कलकत्ता से हटाकर मेरठ में बनाया।
2. सेना के मुख्यालय को शिमला में स्थापित किया।
3. एक अलग 'गोरखा रेजीमेंट' बनाया।

- 'द्वितीय आंग्ल-सिख 1848-49' द्वारा सिखों को हराकर डलहौजी ने 1852 ई. में पंजाब पर अधिकार कर लिया था।
- इसी समय डलहौजी ने सिख राज्य से संसार प्रसिद्ध 'कोहिनूर हीरा' लेकर महारानी विक्टोरिया को भेज दिया गया था।
- वर्ष 1852 में द्वितीय आंग्ल-बर्मा युद्ध हुआ था। इसमें लोअर बर्मा और पीगू का विलय कर लिया गया था।
- वर्ष 1850 में सिक्किम का विलय भी कर लिया गया था।

- अपने रेलवे संबंधी विकास कार्यों के तहत इसने-
1. डलहौजी को 'रेलवे का जनक' कहा जाता है।
 2. वर्ष 1853 में प्रथम रेलवे लाइन बम्बई से थाणे के मध्य बिछाई गई।
 3. 1854 में दूसरी रेलवे लाइन कलकत्ता से रानीगंज (बंगाल) के बीच बिछाई गई।

अपने डाक और टेलीग्राफ संबंधी कार्यों के तहत इसने-

- वर्ष 1853 में प्रथम तार लाइन का विकास कलकत्ता-आगरा के बीच किया।
- वर्ष 1854 में नया 'पोस्ट अफिस एक्ट' पारित किया गया था।
- वर्ष 1854 में पहली बार डाक टिकट का प्रचलन हुआ था।
- कलकत्ता, मुम्बई और मद्रास प्रेसीडेंसी में डाक विभाग के कार्यों के संचालन के लिए महानिदेशकों की नियुक्ति की गयी थी।

अपने सार्वजनिक निर्माण संबंधी कार्यों के तहत इसने-

- 'सार्वजनिक निर्माण विभाग' की स्थापना।
- जी.टी. रोड़ की मरम्मत कराई।
- गंगा-नहर का निर्माण कार्य पूरा हुआ।
- कराची, मुम्बई एवं कलकत्ता के बंदरगाहों का विकास किया।

लॉर्ड डलहौजी
(1848–1856)

डलहौजी के अन्य कार्य 1. इसी समय 1853 में

- 'चार्टर एक्ट' पारित हुआ था।
- वर्ष 1856 में 'संथाल विद्रोह' हुआ था।
- सिविल सेवा में प्रतियोगी परीक्षा का विकास हुआ।
- वर्ष 1856 में कुशासन के आधार पर अवध का विलय किया गया। (अवध का शासक- वाजिद अली शाह)
- डलहौजी ने बरार राज्य के ऋण ना देने पर बरार को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया था।

अपने शिक्षा संबंधी कार्यों के तहत इसने-

- वर्ष 1854 में 'लोक शिक्षा विभाग' की स्थापना की।
- वर्ष 1854 में विश्वविद्यालयी शिक्षा में सुधार के लिए 'बुड आयोग' (समिति) का गठन किया।
- बुड डिस्पैच ने ही लंदन विश्वविद्यालय की तर्ज पर कलकत्ता, मद्रास और बम्बई में विश्वविद्यालय की स्थापना की बात की थी।
- शिक्षा विभाग का प्रधान 'निदेशक' को बनाया गया।

लॉर्ड कैनिंग (1856–1862)

वर्ष 1858 के अधिनियम के द्वारा भारत के गवर्नर जनरल के पद को समाप्त करके इसके स्थान पर 'वायसराय' नामक नवीन पद का गठन किया गया था। (लॉर्ड कैनिंग अन्तिम गवर्नर जनरल और प्रथम वायसराय था।)

1858 के अधिनियम द्वारा ब्रिटिश राज्य ने भारत में कम्पनी के शासन को खत्म करके अपने हाथों में भारत का शासन ले लिया था।

1857 ई. में कैनिंग के समय ही 'महालेखा परीक्षक' पद का सृजन किया गया।

इसने व्यपगत सिद्धांत की नीति को समाप्त कर दिया।

इसने 'पोर्टफोलियो प्रणाली' लागू की।

भारत के वायसराय (वर्ष 1858 के अधिनियम के अधीन – 1858–1947)

इसके समय में रूपये (नोट) का प्रचलन किया गया था।

इसने असम से चाय की खेती और नीलगिरि की पहाड़ियों पर कहवा की खेती को प्रोत्साहित किया था।

विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 को कैनिंग के समय पूर्णतः लागू किया गया। (ईश्वर चंद्र विद्यासागर के सहयोग से)

अपने कानून सुधारों के तहत इसने-

1. इसने मैकाले द्वारा प्रस्तुत भारतीय दण्ड संहिता को 1 जनवरी, 1861 को लागू किया था।
2. वर्ष 1861 में ही 'कोड ऑफ क्रिमिनल प्रोसीजर' (Cr.PC) को भी पारित किया गया।
3. कैनिंग के समय में 1861 में भारतीय उच्च न्यायालय अधिनियम पारित किया गया था। इस अधिनियम के तहत, कलकत्ता, मद्रास एवं बम्बई उच्च न्यायालय की स्थापना 1861 में ही की गयी थी।

लारेन्स को 'भारत का रक्षक' की उपाधि दी गयी थी।

सर जॉन लारेन्स (1864-69)

लारेन्स की हत्या पोर्टब्लेयर में कर दी गयी थी।

वर्ष 1865 में भारत और यूरोप के बीच समुद्री टेलीग्राफ सेवा प्रारंभ।

लारेन्स ने अफगानिस्तान के संदर्भ में 'अहस्तक्षेप की नीति' का पालन किया था।

इसके समयकाल में वर्ष 1866-69 में राजपूताना और उड़ीसा के क्षेत्र में भीषण अकाल पड़ा था। इसने हेनरी कैम्पबैल के अधीन 'अकाल आयोग' का गठन किया था।

इसके समय 1872 में पंजाब में 'कूका विद्रोह' हुआ था।

लाई मेयो (1869-72)

शैक्षणिक सुधारों के तहत -

1. 1872 में राजकुमारों की शिक्षा के लिए 'मेयो कॉलेज' की स्थापना अजमेर में की थी।
2. इलाहाबाद में 'मेयो सेंट्रल कॉलेज' की स्थापना की गयी थी।

आर्थिक सुधारों के तहत -

1. 1872 में 'कृषि विभाग और वाणिज्य विभाग' का गठन किया।
2. भारतीय सांख्यिकीय सर्वेक्षण का गठन किया।
3. 1872 में इसी के समय में प्रथम जनगणना संपन्न हुई थी।
4. केंद्रीय और प्रांतीय वित्त व्यवस्था का पृथक्करण किया गया।

लाई नार्थ ब्रुक (1872-76)

इसके समय वर्ष 1875 में प्रिंस ऑफ वेल्स (एडवर्ड सप्तम) का भारत आगमन हुआ।

इसने बड़ौदा के राजा पर कदाचार और भ्रष्टाचार का आरोप लगाकर मल्हार राव गायकवाड़ को पदमुक्त कर दिया था।

इसी के समय वर्ष 1874 में बंगाल और बिहार में भयंकर अकाल पड़ा था।

लॉर्ड लिटन (1876-80)

क्या आप
जानते हैं ?

अपनी रचनाओं को
लिटन 'ओवन मैरिडिश'
नाम से लिखता था

अपने प्रमुख कार्यों के तहत लिटन ने-

1. रिचर्ड एट्रेची की अध्यक्षता में 'स्ट्रैची अकाल आयोग' का गठन किया था।
2. वर्ष 1876 में 'रायल टाइटल अधिनियम' पारित करके जनवरी 1877 ई. में दिल्ली में प्रथम दिल्ली दरबार लगाकर महारानी विक्टोरिया को 'कैसर-ए-हिन्द' की उपाधि प्रदान की गई थी।
3. वर्ष 1878 ई. में इसने 'भारतीय शस्त्र अधिनियम' लाया था जिसके तहत अब कोई भी भारतीय बिना लाइसेंस के न तो शस्त्र रख सकता था न ही उसे बेच सकता था।
4. इसने वर्ष 1878 में 'वर्नाकुलर प्रेस एक्ट' पारित करके भारतीय भाषाओं में प्रकाशित समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगा दिया। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने इस एक्ट को 'आकाश से होने वाला वज्रपात' कहा था।
5. इसके समय में वर्ष 1878-80 के बीच 'द्वितीय आंग्ल-अफगान युद्ध' हुआ। (मण्डमक की संधि से समाप्त)।
6. इसने सिविल सेवा की आयु 23 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दी थी।
7. लिटन ने 'मुस्लिम-एंग्लो प्राच्य विद्यालय' की स्थापना अलीगढ़ में की थी।

लॉर्ड रिपन (1880-1884)

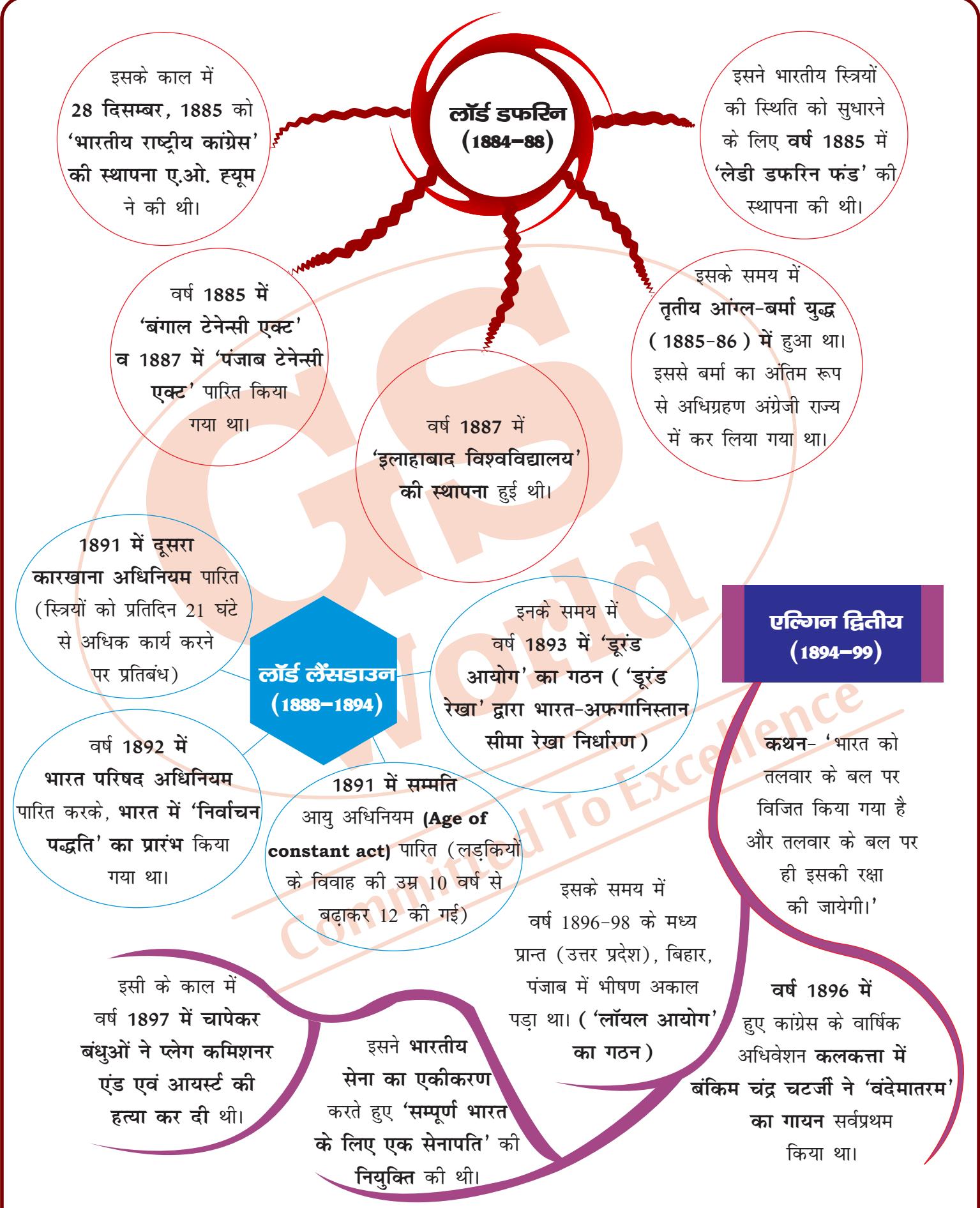
रिपन के शासन
काल को भारत में स्वर्ण
युग के नाम से जाना
जाता है।

भारत में किये गये अपने योग्य कार्यों के
परिपेक्ष्य में फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने रिपन को
'भारत के उद्धारक' की उपाधि
प्रदान की थी।

इसने 'इस युग का
कर्तव्य (The Duty of Age)'
नामक पुस्तक लिखी थी।

इल्बर्ट बिल विवाद
रिपन वर्ष '1883 में
इल्बर्ट बिल विधेयक' लाया था।
इसमें यूरोपीयों के विरुद्ध अब
भारतीय - न्यायाधीश भी सुनवाई
कर सकते थे। इसलिए यूरोपीयों ने
इसका प्रबल विरोध किया। अंग्रेजी
विरोध को श्वेतक्रांति की संज्ञा प्रदान
की गयी थी। इल्बर्ट बिल विवाद
(1884) के कारण रिपन ने
त्यागपत्र दे दिया था।

- रिपन के कार्य -
1. प्रथम वास्तविक जनगणना-1881 में करवायी थी।
 2. वर्नाकुलर प्रेस एक्ट को 1882 में समाप्त कर दिया था।
 3. 1881 में प्रथम कारखाना अधिनियम पारित।
 4. रिपन ने 1882 में स्थानीय स्वशासन की शुरुआत की थी। इसने स्वशासन
की तीन इकाईयों का गठन तालुका, म्युनिसिपल बोर्ड, जिला बोर्ड नाम से की थी।
 5. वर्ष 1882 में इसने विलियम हंटर की अध्यक्षता में 'हंटर आयोग' का गठन किया
था। इसका कार्य बुड़ डिस्पैच (1854) के कार्यों का मूल्यांकन करना था।
 6. इसने सिविल सेवा की आयु 19 से बढ़ाकर 21 वर्ष कर दी थी।
 7. इसने वर्ष 1883 में 'अकाल संहिता' का निर्माण करवाया था।



- वर्ष 1899-1900 के बीच अकाल पड़ने पर 'एंटोनी मैकडोनाल्ड' की अध्यक्षता में एक अकाल आयोग गठन ('अकाल आयुक्त' के पद के गठन की सिफारिश)
- वर्ष 1902 में इसने एक सिंचाई आयोग का गठन ('सर कालिन स्कॉट मानकीय' की अध्यक्षता में)
- एक महानिरिक्षक के अधीन 'कृषि विभाग' की स्थापना।
- 1905 में 'पूसा कृषि अनुसंधान संस्थान' की स्थापना की गयी थी।
- वर्ष 1899 में भारतीय टंकण एवं मुद्रण या 'करेंसी अधिनियम' पारित किया गया था।

आर्थिक कार्य

- शिमला में शिक्षाविदों का एक सम्मेलन बुलाया था।
- 1902 में टॉमस रैले के अधीन 'विश्वविद्यालय आयोग' गठित किया था। (भारतीय सदस्य- सैयद हुसैन बिलग्रामी, गुरुदास बनजी)। इसी आयोग की सिफारिश पर वर्ष 1904 में विश्वविद्यालय में अधिनियम पारित किया गया था।

आक्रमणकारी नीति

- मार्च 1904 में तिब्बत में 'यंग हस्बैंड' नामक अभियान भेजा।
- 'उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रांत' नामक एक नवीन प्रांत बनाया।
- साम्राज्यवादी नीति का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश हितों की रक्षा करना था।
- वर्ष 1902 में मुख्य सेनापति बनकर 'किचनर' भारत आया था। इसी के साथ हुए मतभेद के कारण कर्जन ने त्यागपत्र दे दिया था।

अन्य महत्वपूर्ण कार्य

- गोपाल कृष्ण गोखले ने कर्जन को 'दूसरा औरंगजेब' कहा था।
- सर्वाधिक रेलवे लाइन का विस्तार कर्जन के समय में हुआ।
- 'विक्टोरिया मेमोरियल हाल' का निर्माण इसी के काल में हुआ था।
- 1904 में 'कोआपरेटिव क्रेडिट सोसाइटी एक्ट' बना।
- यह 'भारत में सर्वाधिक अलोकप्रिय वायसराय' था।
- कर्जन ने 1903 में कहा था कि यह वायसराय के पद से निवृत होने के बाद कलकत्ता नगर निगम का महापौर बनना पसंद करेगा।
- इसने राजकुमारों के लिए सैनिकों के 'इम्पीरियल कैडेट कोर' की स्थापना की थी।
- कर्जन ने कहा था, "काँग्रेस अपने पतन की ओर लड़खड़ती हुई जा रही है और भारत में रहते हुए मेरी एक महान महत्वाकांक्षा शांतिपूर्ण निधन के लिए इसकी सहायता करना है।"

पुलिस सुधार

- 1902 ई. में एंड्र्यू फ्रेजर के नेतृत्व में 'पुलिस आयोग' का गठन किया गया था।
- CID (Criminal Investigation Department)** की स्थापना की थी।

इसके समयकाल में 'मुस्लिम लीग' की स्थापना वर्ष 1906 में ढाका में आगा खाँ एवं सलीमुल्ला खाँ ने की थी।

इसके समय में 1 जुलाई, 1909 ई. को मदल लाल डिंगरा ने लंदन में कर्नल वायली की हत्या कर दी थी।

कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन (1906) में कांग्रेस ने 'स्वराज का लक्ष्य' घोषित किया।

कांग्रेस के सूरत अधिवेशन (1907) में कांग्रेस का विभाजन नरमदल और गरमदल के रूप में हो गया था।

1911 ई. में भारत में 'तृतीय दिल्ली दरबार' का आयोजन (इसमें की गई घोषणायें-

1. बंगाल विभाजन को 1911 में रद्द कर दिया गया।
2. भारत की राजधानी को 1911 में कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित करने की घोषणा की गयी। जबकि 1912 में कलकत्ता से दिल्ली राजधानी बनी थी।
3. 1912 में दिल्ली को प्रान्त बनाने की घोषणा।
4. 1911 में बंगाल से अलग बिहार एवं उड़ीसा नामक प्रांतों का निर्माण।

इसके समय में समाचार पत्र अधिनियम 1908 पारित किया गया था।

**लॉर्ड हार्डिंग
(1910–16)**

6. 1911 में कारखाना अधिनियम पारित करके पुरुषों को 12 घंटे काम की बात की गई।
7. 1912 में दिल्ली में प्रवेश के समय हार्डिंग के ऊपर बम फेंका गया जिसमें हार्डिंग बच गये थे। इस कांड में बालमुकुन्द को फाँसी की सजा दी गयी थी।

1909 में मार्ले-मिण्टो सुधार अधिनियम पारित किया गया। इसमें मुसलमानों के लिए अलग से निर्वाचन व्यवस्था प्रारम्भ की गयी थी। इस अधिनियम के द्वारा लंदन स्थित भारत परिषद में सर्वप्रथम दो भारतीयों 'के.सी. गुप्ता और सैयद हुसैन बिलग्रामी' एवं भारत में स्थित वायसराय की कार्यकारिणी में सर्वप्रथम एक भारतीय 'एस.पी. सिन्हा' की नियुक्ति की गयी थी।

**अन्य
महत्वपूर्ण
तथ्य**

1. वर्ष 1913 में रवीन्द्रनाथ टैगोर को 'साहित्य का नोबल पुरस्कार' मिला था।
2. 1915 में गाँधी जी का भारत आगमन।
3. 1916 में वाराणसी में मदन मोहन मालवीय ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की।
4. 1915 में मदनमोहन मालवीय द्वारा 'हिन्दू महासभा' का गठन।
5. 1911 में सर्वप्रथम हवाई डाक सेवा का प्रारंभ इलाहाबाद-नैनी के बीच में।

लॉर्ड चेन्सफोर्ड (1916-21)

अप्रैल और सितम्बर,
1916 में क्रमशः दो
'होमरूल लीग' की स्थापना
तिलक एवं ऐनीबेसेंट
ने की थी।

1919 का अधिवेशन
जब पारित हुआ तब इसमें
'प्रांतों में द्वैथ शासन' को
स्थापित किया गया था। 1919
का अधिवेशन 1 जनवरी,
1921 को लागू हुआ था।

1920-22 के मध्य
असहयोग आंदोलन एवं
1919-21 के मध्य खिलाफत
आंदोलन हुआ था।

वर्ष 1916 में
पूना में डी.के. कर्वे
द्वारा 'महिला विश्वविद्यालय'
की स्थापना की गई।

मार्च 1919 को
रॉलेट एक्ट आया था।

1918 में 'इंडियन
लिबरल फेडरेशन' की
स्थापना की गई थी।

1916 में कांग्रेस
का लखनऊ अधिवेशन
हुआ था। (कांग्रेस एवं लीग
के मध्य समझौता एवं
नरमदल एवं गरमदल
फिर एक हो गये)

कलकत्ता विश्वविद्यालय
की समीक्षा के लिए 'सैंडलर
आयोग' की नियुक्ति
की गई थी।

बिहार का गवर्नर
सर्वप्रथम एक भारतीय
'सत्येन्द्र प्रसाद सिन्हा' को
बनाया गया था।

एकमात्र वायसराय
थे जो यहूदी (Jew) थे।

नवम्बर 1921 में
प्रिंस ऑफ वेल्स का
भारत आगमन हुआ।

1921 में केरल
में मोपला नामक मुस्लिम
किसानों का विद्रोह मालाबार
तट पर हुआ था।

1923 में इलाहाबाद
में सी.आर. दास एवं
मोतीलाल नेहरू ने स्वराज
पार्टी की स्थापना की थी।

1925 में नागपुर
में केशव बलिराम हेडगेवार
(के.वी. हेडगेवार) ने राष्ट्रीय
स्वयं सेवक संघ (RSS) की
स्थापना की थी।

26 दिसम्बर, 1925
को एम.एन. राय द्वारा
कानपुर में भारतीय कम्युनिस्ट
पार्टी की स्थापना
की गई थी।

1922 में सर्वप्रथम
इलाहाबाद में भी ICS की
प्रतियोगी परीक्षा का
आयोजन हुआ था।

9 अगस्त, 1925
काकोरी कांड हुआ था इसके
अभियुक्तों में रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र¹
लाहिड़ी, रोशन सिंह, अशफाकउल्ला खाँ को
फाँसी की सजा दी गयी थी। भानुचंद्र गुप्ता
ने इस केस में निःशुल्क
पैरवी की थी।

नोट: "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है..." इस तराने को 'बिस्मिल अजीमाबादी'
ने लिखा था। जबकि 'रामप्रसाद बिस्मिल' ने इसे नारे के रूप में प्रसिद्ध किया था।

लॉर्ड इरविन (1926-1931)

वर्ष 1927 में साइमन कमीशन का गठन किया गया था। यह कमीशन 1929 और 1930 में दो बार भारत आया था। इसने अपनी रिपोर्ट 1930 में जारी की थी।

कृषि विकास हेतु 'रॉयल कमीशन' का गठन 1926 में किया गया था। इसकी रिपोर्ट 1928 में आयी थी।

1929 में लाहौर षड्यंत्र केस में गिरफ्तार जतिनदास की मृत्यु भूख हड़ताल के 64वें दिन हो गयी थी।

5 मई, 1930 को गांधी को गिरफ्तार करके धरवदा जेल में रखा।

वर्ष 1929 में मेरठ षड्यंत्र केस (कम्युनिष्ट नेता गिरफ्तार, उस समय का भारत का सबसे लम्बा मुकदमा था) हुआ था।

वर्ष 1928 में लखनऊ में हुए सर्वदलीय सम्मेलन में मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था। इस समिति रिपोर्ट को 'नेहरू रिपोर्ट' के नाम से जानते हैं। इस रिपोर्ट के संदर्भ में जिन्ना ने वर्ष 1929 में अपनी '14 सूत्रीय माँग' प्रस्तुत की थी।

17 दिसम्बर, 1928 को भगत सिंह और राजगुरु ने लाहौर के पुलिस अधीक्षक 'सांडर्स' की हत्या कर दी थी।

23 मार्च, 1931 को लाहौर जेल में भगत सिंह, सुखदेव, और राजगुरु को फाँसी दी गयी थी।

नवम्बर, 1930 में लंदन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन आयोजित हुआ था।

वर्ष 1929 में लाहौर अधिवेशन, रावी नदी के किनारे जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ था। इसी अधिवेशन में कांग्रेस ने अपना लक्ष्य 'पूर्ण स्वराज' बनाया था। तथा 26 जनवरी, 1930 को सम्पूर्ण भारत में 'स्वतंत्रता दिवस' के रूप में मानने का संकल्प पारित किया था।

8 अप्रैल, 1929 को दिल्ली की विधानसभा में 'लोक सुरक्षा विधेयक' के विशेष में 'भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त' ने बम फेंका था।

12 मार्च, 1930 को साबरमती आश्रम से गांधीजी ने अपने 78 अनुयायियों के साथ दांडी यात्रा प्रारंभ की थी। यह गांधीजी की पूर्णतः 'पैदल यात्रा' की थी। 6 अप्रैल, 1930 को 385 किमी. की यात्रा पूरी करके नौसारी जिले में स्थित दांडी पहुँचकर, नमक कानून तोड़कर, सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत की थी।

27 फरवरी, 1931 को इलाहाबाद के 'अल्फ्रेड पार्क' में चंद्रशेखर आजाद शहीद हुए।

5 मार्च, 1931 को 'गांधी-इरविन समझौता' हुआ। इस समझौते से गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित करके, द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेना स्वीकार किया गया था।

29 मार्च, 1931 को कराची अधिवेशन में गांधी-इरविन को स्वीकार करके, 'मूल अधिकार' संबंधित प्रस्ताव पारित किया गया था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता वल्लभ भाई पटेल ने किया था।

लॉर्ड विलिंगटन (1931–36)

7 सितम्बर से 1 दिसम्बर,
1931 के मध्य द्वितीय गोलमेज
सम्मेलन' लंदन में आयोजन (कांग्रेस
प्रतिनिधि महात्मा गांधी, एस.एस.
राजपूताना नामक जहाज से
लंदन गये थे।)

17 नवम्बर से
24 दिसम्बर, 1932 के
मध्य 'तृतीय गोलमेज सम्मेलन'
लंदन में आयोजित
किया गया था।

1932 में इंडियन
मिलिटरी अकादमी 'देहरादून'
की स्थापना की
गयी थी।

16 अगस्त, 1932 ई.
को इंग्लैंड के प्रधानमंत्री रैम्से
मैकडोनाल्ड ने 'मैकडोनाल्ड एवॉर्ड'
की घोषणा की थी। इसमें 'दलित या
हरिजन, मुस्लिम, यूरोपियन, सिख' को
पृथक निर्वाचन का अधिकार प्रदान
किया गया था।

गांधी जी ने इस साम्प्रदायिक
निर्णय (Communal Award) के
विरोध में यरवदा जेल में 'आमरण अनशन'
प्रारंभ कर दिया था। परिणामतः 26 सिंबर, 1932
को मदनमोहन मालवीय एवं सी. राजगोपालाचारी
के प्रयासों से 'गांधीजी एवं अम्बेडकर के
बीच पूना समझौता' करके कम्युनल अवार्ड
में संशोधन किया गया था।

वर्ष 1934 में
कांग्रेस समाजवादी पार्टी
की स्थापना जयप्रकाश नारायण
एवं आचार्य नरेन्द्र
देव ने की थी।

क्या आप जानते हैं ?

1. 1933 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र
चौधरी रहमत अली ने सर्वप्रथम 'कैम्ब्रिज
पम्पलेट' में 'पाकिस्तान' शब्द का प्रयोग
किया था।
2. Now or Never बुकलेट 28 जनवरी,
1933 को रहमत अली व उनके दोस्तों ने
निकाला था।

2 अगस्त, 1935
को 'भारत सरकार अधिनियम'
पारित किया गया था। इसमें
म्यांमार (बर्मा) को भारत
से अलग किया
गया था।

1936 में 'अखिल
भारतीय किसान सभा'
की स्थापना हुई थी।
(अध्यक्ष- सहजानन्द
सरस्वती)

लॉर्ड लिनलिथगो (1936–1943)

इसके शासन काल में वर्ष 1935 के अधिनियम के अनुसार 2 फरवरी, 1937 को पहली बार ग्यारह ब्रिटिश भारतीय प्रांतों में चुनाव कराये गये थे। मध्य प्रांत, मद्रास, बिहार, संयुक्त प्रांत, उड़ीसा में कांग्रेस का पूर्ण बहुमत, जबकि बम्बई में पूर्ण से थोड़ा कम बहुमत मिला था। कांग्रेस ने उपर्युक्त 6 प्रांतों के अलावा उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत एवं असम में अपनी सरकार बनायी थी। कुल 8 प्रांत में कांग्रेस सरकार बनी थी।

1937 में बंगाल का फैजपुर सम्मेलन हुआ (गाँव में सम्पन्न प्रथम कांग्रेस अधिवेशन, अध्यक्षता- जवाहर लाल नेहरू)

मई 1940 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल बने थे।

1942 में बंगाल में भयानक अकाल पड़ा था।

21 अक्टूबर, 1943 को सुभाषचंद्र बोस ने सिंगापुर में 'अस्थायी सरकार की स्थापना' की थी।

बिना कांग्रेस की अनुमति के जब द्वितीय विश्व युद्ध में भारत को ब्रिटिश सरकार ने शामिल कर लिया तब अपने '28 माह' के कुल कार्यकाल के बाद कांग्रेसी सरकार ने इस्तीफा दे दिया था। तब 22 दिसम्बर, 1939 को मुस्लिम लीग ने इसको 'मुक्ति दिवस' के रूप में मनाया था।

17 अक्टूबर, 1940 को गांधीजी ने 'पवनार आश्रम' से 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' प्रारंभ किया था।

वर्ष 1939 में कांग्रेस के अध्यक्ष और सदस्यता से इस्तीफा देकर सुभाष चंद्र बोस ने 3 मई, 1939 ई. को 'फारवर्ड ब्लॉक' का गठन किया था।

14 जुलाई, 1942 को 'कांग्रेस ने भारत छोड़े प्रस्ताव' परित करके 9 अगस्त, 1942 को 'भारत छोड़ो आंदोलन' प्रारंभ किया था।

वर्ष 1944 में मुस्लिम लीग ने अपने कराची अधिवेशन 'बांटो और छोड़ो' का प्रस्ताव पारित किया था।

लॉर्ड वेवेल (1944–1947 ई.)

25 जून, 1945 को शिमला सम्मेलन बुलाया।

मुख्य बातें- कांग्रेस प्रतिनिधि अबुल कलाम आजाद थे, गांधी इसमें शामिल नहीं हुए, मुस्लिम लीग द्वारा वायसराय के कार्यकारणी परिषद् में नियुक्त सभी मुस्लिम सदस्यों के चयन के मुद्दे पर वेवेल ने

14 जुलाई 1945 को सम्मेलन के विफलता की घोषणा की।

1954 में क्लीमेन्ट एटली की अध्यक्षता वाली लेबर पार्टी की सरकार बनी। दिसम्बर 1945 में घोषित चुनाव परिणामों में केंद्रीय विधान सभा और प्रान्तीय विधान मण्डलों में कांग्रेस को बहुमत मिला। वहीं मुस्लिम लीग सभी मुस्लिम सीटें जीतीं।

इसके समय में कैबिनेट मिशन 1946 में भारत आया।

20, फरवरी, 1947 को प्रधानमंत्री एटली ने जून, 1948 ई. तक प्रभुसत्ता भारतीयों के हाथ में देने की घोषणा हाउस ऑफ कॉमस में की।

लॉर्ड माउण्टबेटन (मार्च, 1947– जून, 1948 ई.)

24 मार्च, 1947 को भारत का गवर्नर जनरल बना

यह स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल बना

4 जुलाई, 1947 को एटली द्वारा ब्रिटिश संसद में भारतीय स्वतंत्रता विधेयक प्रस्तुत (18, जुलाई को स्वीकृत)

3 जून, 1947 को भारत विभाजन पर 'माउण्टबेटन योजना या 3 जून योजना' घोषित।

डिकी बर्ड प्लान
(लॉर्ड माउण्टबेटन का उपनाम) लॉर्ड माउण्टबेटन द्वारा 1947 में प्रस्तुत किया गया जिसमें भारत को कई छोटे-छोटे टुकड़ों में बांटने की व्यवस्था थी। इसे बाल्कन प्लान (Balkan Plan) के नाम से भी जाना जाता है।

क्या आप जानते हैं ?
स्वतंत्र भारत के प्रथम एवं अन्तिम भारतीय गवर्नर जनरल 'चक्रवर्ती राजगोपालाचारी' थे।

